एक और सीता

आलमशाह खान

पञ्चशील प्रकाशन
जयपुर-302003

अनुक्रम

एक और सीता

मेहदी रचा ताजमहल

आख पलक तक ढरकाए आचल की झीनी ओट मे मुस्कान रेख आक कर बहू न ससुर जी को निहारा, उनके राख राख चेहरे पर उभरी झेंप की झालर को अनदखा जताने के लिए उसन अपने आपको चूल्ह चाके म उलझाए रखने की जुगत तो जोडी पर वे जान ही गए कि बहू सब परच परख गई है।

अपन न्हे की उगली थाम उस पैया-पैया चलाते हुए, उनका बटा मुन का अनसुना करके भी जो अटपटा सामने आया है, उसकी सही सही परख पा गया है, अब्बू का इसका पूरा यकीन हो गया है। अपनी भावज की आट बैठी आखो-आखो मे लाज हया के डोरे समटन मे लगी उनकी विनब्याही होशियार बटी भी सब वाच-समझ गई है। अपन अब्बू का कडवा चिटठा चौडा-चौपट जो हो गया है आज ! अब्बू को इसका भी पूरा भान हो गया है।

अब्बू जसे जलती रत पर नगे पर खडे है और वह अजानी अनदखी पुरखिन एकाएक आग आ उभर कर अपनी रग रग मे रमी पुरानी आग को ठडा करन के लिए भर भर मुटठी रेत अब्बू के आपे पर फेंक रही है और व साप छछूदर की बेढब गत में आ गए हैं।

'ओ फारसी किरस्तानी लिखे पढे मुसी जी, वेटा-बेटी और पाता बहू से फली फूली तुम्हारी वस-बल को तो देख लिया मैने तनि अपनी मानो, मुसानी स भी तो मिलाओ, देखू तो कैसी कित्ती रूपरसी रही होगी, जा उस लाड-लडी ने तुम्हें भरमा अपन आचल से अटका लिया, और भुला-बिसरवा दिए वो खेले' जो तब तुमने मुझसे—मुझ जैसियो से खेले "

"वो नही रही उसकी कब्र पे तो हाथ हाथ भर ऊची घास खडी है आज। कैसे बोल रही ऊच नीच तो समझ आ कहा से गई तू गडे मुर्दे

क्या जानो मासूमो, के मैं तुम्हारी क्या और कौन हू । जिससे नेह नाता जाडा, जब उसी ने बिसार दिया तो " बोल पूरे भी नही हो पाए थे कि वह अपने कापने पैरो पर वही धसक गई और हाथ-पैर फला कर अचेत-सी हो गई । हम घबराए । अब्बू चकराए ।

"मैं डॉक्टर को लेकर आता हूं ।" कहकर मैं बाहर जाने को हुआ तो अब्बू की बैठी हुई आवाज ने रोका "डाक्टर नही बैद जी डॉक्टर की दवा यह लेगी नही ।" भाभी को बुढिया के चेहर पर पानी के छींटे दत दखा तो बहना बोली, "तनि पानी की चार बूदे चुआ दो भाभी, इनके मुह मे । तबीयत सभल जाएगी । '

नही नही, पानी जो डाल दिया तुमने इसके मुह मे तो ये और होश खो बैठेगी दम ही द दगी ।" अब्बू की बात सुनी तो भाभी के हाथ मे कटोरे का पानी काप कर रह गया । तभी बैद जी आए, नाडी धडकन को पढ-समझ कर बोले "ताप घास मे आ गई हैं मा जी । काढा दिए दत हैं । ठीक हा जाएगी ।"

बद जी रुखसत हुए । बेटी को टुकुर टुकुर अपना मुह जोहन पाया तो अब्बू बोले, "य बिरले बिरेहमन की बिकट बेटी है किसी के घर का, खास करक तुरक-पठान के घर का पानी नही पीने की ।" अब्बू कह रह थे । तभी बुढिया न आख टमटमाई । अ्रब्बू जैस उसे ही सुनात हुए आगे बोले, "जाओ बिट्टा पडतानी बुआ का बुला लाआ । उनसे कहिओ, अपन घडे का अछूता जल भी लाटा भर कर लेती आए—जल्दी ।"

बिट्टो उठ खडी हो उसके पहले ही बुढिया मे बोल आगे, "हमारे थल मे है गगा-जल की सीसिया, नही पीन की किसी के यहा का पानी ।" इतना बाल वह उठने को हुई तो बिट्टो न सहारा देकर बिठा दिया । उसकी भावज पखा झलने लगी । सभी का अपनी हाजिरी-टहल म खडा दख बुढिया बोली, ' वह बिटिया और दूजे भी सब मेरी चाकरी म जुटे हैं क्या लगू हू मैं तुम्हारी जो यो सब हलकान हो रहे मेरी खातिर बेटी भी ' इतना कहकर एक मार करती हुई नजर उसने अब्बू पर फेंकी ।

"अपनेपन का किसी रिश्ते का नाम देना लाजमी तो नहीं सास जी ।"

"सास जी सरीखा नाता जाड क भी अपनेपन का नाम धरने की

बात से मुकर रही ये हमारी स्यानी बहू। सुनो हो मुसी जी ?

"अरे, य सब करेंगे। पे तू मुर्गे की डेढ़ टाग प ना पहले मेरे सग और ना अब चल सकेगी इनके साथ।" अब्बू ने बीते झाडत हुए जसे उसे कुछ याद दिलाया।

"हा, सही, वो मेरा नेम-व्रत-सस्कार धरम, जो कहो, जर आज भी। इसे तो मैं छोडने की नही मरते दम तक।" समझ उसने हूल दिया।

"मैंने तो तभी तुझे कह दिया था, के मैं शहशाह अब 'जोधाबाई' बना कर तुझे अपने महल-दोमहलो म रख सकू

' तो अब नौबत यहा तक आन पहुची के मुसी जी अपना मुझे बताने लगे बेटे-बहू के सामन अपना चिठ्ठा खुल मुझसे ?" वह कुडकुडाई तो अब्बू चुप हो गए।

सास जी, जब आ ही गइ, तो रहो यही। वैसे भी अम्म स हवेली के आगन चौबारे खान दौडे हैं तुम्हारी सूरत मे पात का हिया जिया देख लेंगे और हम " बहू कह गई।

'किस उजियारे कुल की लछमी लाई जे मुसानी य ब अपन आचल म भर रही।" इतना कहकर उसने बहू का मा और बिट्टा का हाथ अपने हाथ मे रखकर टिचकारी दे अपन पास बुलाने लगी। उसे यू नेह-पगा देख बहू बोली, "च बैठके म ही जमा दें तुम्हे।'

"सौ साल जिए तरा सुहाग लाडो पे मैं कुल-वरन कोख म ही सात मास से आगे नही जम पाई तो अब यहा क पाऊगी मुसी जी जान हैं, खूब, मरा माजना मेरी मरजा तो मेरे आचल मे दा कट्टा मिट्टी भर कर बिसार मैं कब बिसार पाई इन्हें आज आखिरी टेम, आख भर जाने कैसे तो आ गई यहा, ता तुम सब मेरी गोद मे आ अब जाऊगी, मुझे तो अब जाना ही है बेटे ! मुझे पहुचा आ तक।"

अम्मा के कमरे मे ला बिठाया।

"दुलहिन मेरी सफेदी म धूल गेर रही ये दुलारी, पे मैं चाहू तो सबसे मुकर नही सकता। जो भेद बिट्टो की मा ठीक से नही जान पाई, आज वा जग जाना हो सामने उघडा खडा है तुम लजाती रही हो अब तक। आज तुम्हारा ससुर शर्मिंदा है। तुम्हारे सामने। क्या कहू, कैसे कहू" अब्बू नन्हे को गोद म लिए उसके बालो से उलझते हुए कह रहे थे।

"दुलारी, बडी पक्की और जबरी बिरेहमन है तुम्ह खून द देगी अपना, पर तुम्हारे हाथ का पानी नही पिएगी। बरत-उपवास धारेगी तुम्हार हेतु, अपन तीज-त्योहार भी पालेगी, परमाद पान तुम्ह सब दगी, पे तुम्हारे शबरात ईद पे बना कुछ ना लेगी मेरी जानमाज मे इसने गुल-बूटे काढ दिए य मेरे हाथ के चुने फूल इसने अपने ठाकुर जी को नही चढाए। इसी लिए तो अब तुमन इसे अपनी अम्मा की ठौर बिठा अपनी सास के पास बिठा दिया, वो सब ठीक। प वा रह कैस पाएगी हमारे साथ? दुलारी, हमारी सासा मे जी सक्ती है, लेकिन हमारे बतन भाडो म नही खा सक्ती।"

अब्बू कह ही रहे थे कि वह बैठके से तभी बाहर आई और बोली, "हा हा, मरा नेम धरम सब बता दो बहू को। वो पहले ही खूब समझ है। लो, मैं ही सब कह-बोल दू इसे। बेटी! देह डील दिया किसी का मैंन, अपना धरम-नेह नही दिया। आत्मा तो अछूती रखी और अब भी नही देने की अपना धरम ता। मेरी मोटी समझ आज भी फेर मे हैं। तुम्हारी अजान होव, मैं मौन सीस नवाऊ मेरे ठाकुर जी का शख बजे, घटी टुनटुनाए, तुम इसे सत्कार लो। तुम अपने ढग से रम बस लो, मुझे अपनी रहनि रहने दो। नेह न्याव मे फिर फरक कहा?"

बहू ने सब सुना, समझा और बोली, "न ह! दादी जी से कहो, जैसे चाह रहे, बसें। घर उनका ही है"

अब ये इस घर मे अलग से अपनी रसोई-परेंडी जमाएगी सब इससे सध जाएगा इस उमिर मे?" अब्बू बोले।

"अरे, तो मैं कौन-सी पडी पातुरी हू जो जम रही तुम्हारी

ड्योढ़ी" वह तीखी वर होकर बोली।

"इस रस्सी का बल नही जानेवाला !" अब्रू कह गए।

"अरे ! तो सब तुम्हें अपनी रस्सी से नही बांधा, अब तुम्ह उससे बांधूगी ? जो मू कडुआ रह मरद हो, इससे लुगाई का सब, धरम-करम भी, ले लो "

"न हे ! दादी माँ से कहो, कोई कुछ नही लेगा उनका। एक पडिताइन रख छोडेंगे उनकी सेवा-टहल के लिए खान-पान उनका सब हमसे दूर और अलग होगा। पर यो नही होगा ये सब हमे प्यार-दुलार देंगी वो और मीठी मार मनुहार भी।" बहू बोली और उनका हाथ थामे अपन साथ ले जाती हुई कहती रही, 'हरद्वार काशी जायें वो, जिनका कोई सगा-वारिस ना हो। सास जी के हम सब—आंख पलक पे रहगी वो हमार।' बुढिया ने सुना और बहू से लिपट कर सिसकिया भरने लगी।

पूरे गाव म चर्चा—मुशी जी की किसी जमाने की काई चहती। बुढिया दो जुग बाद उनके घर आई है—और उसन उनको हवेली के ही चौबारे मे अलग चूल्हा चौका जमा कर वही अपनी गहस्थी बसाई है। मुशी जी पे दहु-नेह का नाता रखकर भी उसन उनक हाथ का पहे ना कभी खाया और ना अब खाती है, मुशी जी की बहू ता यो रीझी है अपनी नई सास पर के पूछो मत उसके लिए नए बतन भाडे मगवाए हैं शहर से। और उसकी टहल म रख लिया है बैजू पडित की विधवा का। पडि-ताइन आज कुए पर धातु के नए कलसे को चमकात हुए दीखा तो बात चली—

"सुना है पूरी भगतिन है।'

'और नी तो ! देव जगनी बेला से पेले नीद निवेड जागे है। फिर न्हावे धोवे, आगे जो पूजा म बैठे तो सूरज किरन पड की फुनगिया पे चमके तभी आख खोले है वो।" पडिताइन ने बताया।

'और खान पान ?

"वो भी सब अलग। मुटठी भर दाल भात या फिर दो फुलके मैं ही सेंक-पका दू। फिर छुटटी।"

"दिन भर क्या करती रेवे है वो ?"

"अरे ! करना धरना क्या है उसे। माला के मन के घुमावे, आख मूदे या फेर मुसी जी के पोता-पोती के माथे पर हाथ फेरा करे है "

दिन या ढरक गए जैसे केल-पात पर ठहर जल-कण। बिटटो के ब्याह की तारीख के दिन टूटन गए और दुलारी मा उसके दहेज के लिए मुशियाइन के हाथा सहजे-समटे साल-दुपटटा पर गोटा-किनारी टाकन म जुट गई। आखो पर चश्मा चढाए दिन दिन भर उसका य वा जोडा सभालती-सजाती वह रग राती हो गई कि जैसे अपनी कोखजनी को ही ब्याह रही हो, अपनी पूजापाटी स निपटकर, ' बहू, य दख, वो कर, य रख वो हटा, ये ला, वो द", करती रही और ऐन विदा की वेला म अपनी पेटी मे म एक लाल रेशम की धुधियाई दिपदिपवाली साडी निकालकर बोली, 'बहू ! मेरी जिया ने मेरे सुहाग के लिए इसे तब सहजा था—वो सब नो बदा नही अपनी आखरी सासा म किसी के हाथ इसे मर पास पठा दिया था बिट्टो के सुहाग के जोडो के सग इसे धर दू ? ' बहू कुछ बोले, इससे पहले ही पास खडी बिटटो न मन सुना-गुना और आगे बढकर उसस वह साडी लेकर उसे अपन आखा माथे पर चढाया और फिर उसे भाभी के हाथा मे थमा, हट गई ।

आसू डाल, हिये जिये स लगा और उसकी माग चूम कर उसन अपनी अगिया म असी डिबिया निकाली। उम खोला और उमम भरे सिंदूर म या ही-सी उगली रखी और फिर बिटटो की माग का उमसे छू भर दिया। और उसे या विदा कर मुशी जी की भीगी आख पलक देख उनके पास जा खडी हुई, और फिर दरवाजे की चौखट पर हलके हलके थाप दन लगी, जैसे उन्ह दिलासा द रही हो, मुशी जी ने उस भीगी पथरायी देखा तो उन्ह लगा, जसे बिटटो की मा ही सामने खडी अपनी बेटी को विदा कर धीरज ढूढ रही है ।

ईद का चाद दिखा है, पहली,ईद मोहर्रम में मनानि के लिए बिटटो आई है, मन्ह मिनी ऊधम उठाए है, बहू उन्हे बरज रही पर वे है कि दादी

मे सिर चढ़े हैं "दादी ! फुलझड़ी मगाओ, हम गुब्बारे लेंगे, सेवैयां खाएग दादी, मरी सैंडिल अच्छी है कि मिन्नी की चप्पल दादी, मरी सफारी अच्छी है कि मिन्नी की शलवार-जपर ?"

'सब अच्छे हैं, और सबम अच्छे नन्ह और मिन्नी !"

"दादी न पहले हम अच्छा कहा—' ले—लू-लू लू ऽ ऽ मिन्नी, पहले हम अच्छे।"

'दादी ! भाई अच्छा और हम ?" मिन्नी ने मुह फुलाकर कहा और दादी स दूर छिटक गई।

'नी, रे ! मिन्नी रानी तो बहुत अच्छी है' इतना कहकर उसने उस अपनी बाहो म ले लिया।

"ले, ले, दादी ने हम बहुत अच्छा कहा नन्ह अच्छे हम बहुत अच्छे।"

"नही रे बेटे मेरे, तुम दानो भोत-भोत अच्छे हो।"

"अब भई, तुम दोनो दादी की गोद म ही घुमडे रहोगे वे इनके हाथा मे मेहदी भी रचाने दोगे।" इतना कहकर बहू मेहदी भरा कटोरा लेकर बैठ गयी।

"हा, अम्मा ! लाओ, एक हाथ इधर दो—हम भी रचाए महदी आपके।" बिट्टो भी पास खिसक आयी।

'बावलियो ! चढा है तुम्हारे सिर आज कुछ ! अब बूढ़ी मुर्दा मुरझाई हथेलिया पर मैं मेहदी रचवाऊ तुमसे ! लाओ हाथ अपने बिट्टो, बहू —मैं अपने पीहर, भात की मेहदी रचाऊगी तुम्हार।" उसन कहा।

"बुढ़ापे-बडापे की खूब चलाई आपने ! अभी तो अल्लाह रखे, सौ-साल बन रहें अब्बू। सुहाग का सगुन तो तुम्हें आज करना ही है, सास जी ?" बहू बोली और उसक तलवे को साध, उस पर मेहदी चुपड दी।

करो क्या हो, छोकरियो ! यो मेहदी म बसाकर इस बुढिया को नवेली दुलहिन बना रही !"

'सास जी को आज ससुर जी की बैठके म भेजेंगे—ईद जा है ना।' बहू चुहल करती हुई आखो-आखो म बिट्टो से कुछ कहकर शरमा गई। बुढ़िया तो यह सब लख गुनकर ऐसी छुई-मुई हुई कि उसके चेहरे की

चूरियो म मेहदी की लाली खिल उठी। तभी नन्हे सामने आया और बोला, "दादी की एक हथेली पर हम मेहदी रचाएगे ? हमे ड्राइग म सबसे ज्यादा नम्बर मिले हैं।" और एक तीखी तीली ले वह दादी की हथेली पर मेहदी माडन म जुट गया।

खडखडा के किवाड उघडे। मुशी जी ने किताब परे कर आख चश्मे से ऊपर उठाई तो पाया, सामन लाल लहग-साडी म गहने गुहन धार लाज वसी दुलारी खडी है। दा युग पहले की उनकी चहती दुलारी, लाडभरी, मानभरी। वह मसनद से उठे, उसके पास आय और उसे बाहा म बटोरत हुए बान, मैंन क्या दिया, मुझम तो तरी सौतन के जाए—जनम अच्छे जो "

"उस भोली भागवान बहना को सौत कहकर क्यू छीनो हो मुझसे मरे बहु-बेटे-बेटी-पोता पार्ती, मुसी जी ! मीठा त्योहार है, आज तो मीठा बालत ?" वह उनकी बाहा के घेरे म घुलती हुई बोली। फिर अपनी बद मुटठी उनके आगे कर कहा, "बूझा ता भला ? इसमे क्या है ?" मुशी जी न अपनी आखो म उभरी पहलवाली खिल्लाड और चमक चचल दुलारी को दखा और उसकी बद मुट्ठी का अपनी अजुरी म भर उस पर अपने होठ रख दिए। वह थाडी दर गुम ठगी सी खडी रही, फिर बोली, "तुम भला क्या बूझोग ? तुमने मुझे माटी दी तुम्हारे पोत ने मुझे क्या दिया ? ला दखो।" इतना कहकर उसन अपनी बन्द मुटठी उनके सामने खोल दी।

मुशी जी न दखा, उसकी हथेली पर रचा मेहदी का ताजमहल खूब खुला खिला, गहरा रचा बसा। पल छिन के लिए वह भीतर ही भीतर हिल गए और फिर उन्होंने उसकी हथेली पर रचे ताजमहल को चूम लिया —एक बार नही, कई कई बार। अब उसने अपनी हथेली समेट ली और बोली, "नन्हे ने अपने दादा के अन्याय को कैसे जाना ? अजब है ना ? पे मुशी जी, तुमने उसे अपने होठा की सही देकर एक बार जैसे मेरा फिर सब कुछहर लिया *सारा क्लेस क्लुस सारा ताप सताप। मुशी जी!* अब मैं बेखटके चैन की मौत मरूगी, बिना हारे पछताये, मौज की मौत

—मेंहदी रची गैल पर चलती हुई मैं अपने लीलाधारी में लीन हो जाऊंगी तुमसे नहीं तो तुम्हारे जायों से मैंने सब कुछ पा लिया   सब कुछ।" वह झरती आंख-पलक बह गई। अब मुंशी जी की आंख में उसके आंसू थे और उसकी हथेली पर मेंहदी रचे ताजमहल पर मुंशी जी के आंसू झिलमिला रहे थे।

आने वाले कल में जीते हुए

बंधन मे जो मुक्ति है और मुक्ति मे जो बन्धन है उसे मैंने खब जाना और जिया है। आज मैं सूरज से बंधी नही हू तो मुक्त नही हू। कल जब मै उससे बंध जाऊगी तो मुक्त हो जाऊगी। बिन बंधे का नाता बहुत नाजुक होता है। बिन बंधे जुडनवाला जानता रहता है कि थोडी सी जकडन दिखाई दी कि बाधी गई बात टूट जाएगी, पिंजरे क बाहर का पछी उड जाएगा। इसलिए पछी की अनुहार मनुहार करके ही, उस तक अपनी पहुँच पहचान बनाये रखा। लेकिन पछी जब बंध जाएगा, पिंजरे म आ जाएगा तो फिर कैसी मान मनुहार! दोना पछी जब पिंजरे म ह तो फिर लगी पगी बात क्यो न कह दी जाए? दोना पिंजर के भीतर हैं एक दूसरे का छोडकर ता द जा सकत नही और फिर दोनो का साथ प्रेम अनुराग स्नेह-समपण का नही, विवशता और दीनता का होगा। जो आखिर टूटकर रहगा—भग होगा ही।

आज सूरज स जब मैं विधिवत् बंधी नही हू, उनकी अखरनेवाली बात को भी पी जाती हू। उनके रूखेपन को, अपनी अनुहार भरी दुलार से सींच एक गहरे आलिंगन म ढालकर, हरा कर देती हू। उनकी दी गई चुभन का सहलाकर मुस्कान पर झेल लती हू। उनके कटाक्ष को अपने कलजे की कोर मे लगा कर उन्ह निहाल कर देती हू। झटक दिये गये अपन हाथा स उन्ह बाँह म भर लेती हू। उनकी करनी को मैं उनकी महर मानकर, उन्ह लुभाय रखती हू। क्यो? मेरे भीतर ही भीतर भय जो है, भय, सशय जा मुझे सदैव मान कराता रहता है कि मेरे किसी रुख रहित रखाव-रचाव और व्यवहार-विहार से वितृष्ण होकर पिंजरे के बाहर का यह पछी कही फुर न हो जाए। आकाश म उसकी पहचान तो है ही वह उडान की दुनिया म कही फिर न लौट

जाये—आकाश को फिर अपन डैना से बाधने की जुगत से न जुड जाये।

मेरे इस आचरण का सूरज समपण समझत हैं। अपनी हर चोट पर मुझे मुस्कराता हुआ देखकर मुझ पर रीझे चले जात हैं। मेरी सहन-क्षमता को अपण समझते हैं। किन्तु जब मैं कल, उनसे विधिवत् बध जाऊगी, उनके नाम का सिन्दूर अपनी माग में भर लूगी और एक सुहाग रेखा बना लूगी तब ? क्या मैं उस रेखा को पढन मे अब फिर चूक कर जाऊँगी ? उस सिंदूरी-रेखा का प्रत्येक बिंदु उसका रग रचाव मुझे क्या यह अनुभूति नही दगा कि सूरज मुझसे अब बध गए हैं—वह पिंजरे मे हैं मेरे साथ। तब भी म क्या उनके कटाक्ष, उनकी दी हुई कसक चोट, ठेस, व्यग्य और वक्र मुस्कान की वक्रता को लक्षित करके भी तब क्या मैं वैसी ही समर्पित, स्नहमयी त्यागशीला और कामायनी बनी रह सकूगी, जसी कि आज हू ? नहीं तब फिर उस पिंजरे मे वैसी ही चोच लडी चख चख नही होगी जैसी निहाल के पिता के साथ होती रहती थी। वैसी ही आकाक्षा नहीं जागेगी कि इस पिंजर से मुक्ति मिले ? कब इसका द्वार खुला मिले और कब खुले आकाश से जा लगू ?

बधन से बनाने वाला मुक्ति अधिकार बधन को ही तोड देगा, तो फिर क्यो बधा जाये ?

मैं यह जानती हू कि आज सूरज कभी मेरे लगाव म आए ठडेपन को इस उस हीले से सहला कर भरमा दते हैं। मेरे वितृष्ण मे उठी विलोकिनी को नयन कटाक्ष कहकर चूम लेते है। मेरे खिचाव को अनजाना कर के मुझे खीच लेत हैं। मेरे खिचे आचल को ठडी छाव कहकर उसमे मुह छिपा लेत हैं। क्यो ? क्योकि मैं उनसे विधिवत बधी नही हू। अपने आहत उनसे जुडी भर हू। उन्ह कही लगता है कि अगर आज मेरे ठडेपन को, अनमनेपन को, वेगानगी को, उपेक्षा को, उकेरा गया तो यह जुडना उखड जाएगा। पिंजरे के बाहर का पछी उड जाएगा। पर मैं जब कल अग्नि की साक्षी न सही कानून की साक्षी मे ही उनमे बध जाऊँगी, तब मेरे आचल की सरसराहट में उनकी छाव मे, उन्हें साडी की कीमत का ख्याल नही आयेगा ? और फिर एक पिंजरे म बद दो पक्षी एक दूसरे के पसरे हुए पखो से अपना रास्ता रुधा हुआ पायेंगे तो क्या फिर दोनों पिंजरे के खुलने

की प्रतीक्षा करते हुए जीने पर विवश न हूगी ? और फिर क्या तयशुदा रास्ता पर फिर से चलने की मजबूरी सामने नही होगी ? जिस परिस्थिति से भाग कर सूरज के पास मैं आयी थी उसी परिस्थिति म फिर से निर्वासित न हो जाऊगी ? उसी परिवेश म सूरज फिर नही धकिया जायेंगे ? और फिर जिन्दगी वैसी ही ऊबाऊ, नीरस और निस्सार नही होगी, जैसी तब थी। क्या मेरे लिए इतना बदलाव ही काफी होगा कि पहले मैं 'उस पुरुष' के साथ जो जीवन जी रही थी, ठीक वैसा ही जीवन 'इस पुरुष' के साथ जीती हुई मौत की चौखट से जा लगू ?

या फिर सूरज को भी उसी तयशुदा रास्त पर धकेल दू जिसको लाघकर उन्होने भरी पलको के साये मे अपनी मजिल के निशान पहचाने थे। 'नयना' के साथ जो जीवन उनकी मजबूरी था वही मजबूर जीवन उनका 'किरन' के साथ बन जाए। वैसा हो गया ता फिर जो यह सब हुआ है वह निरथक हो जाएगा। तब ता बेटे को बाप से अलग करने और मा को बेटे से जुदा करने की जो सूरत आज बन आई है, वह मोक्ष के लिए आहुति न होकर परिवतन के लिए बलि जैसी बात ही बनकर रह जाएगी। आए दिन की चख चख और शीत-युद्ध की तपन से भरा हुआ घर जब अनू और निहाल के सामने फिर मुह बाए खड़ा होगा तो, उनका क्या बनेगा ?

सूरज का बेटा जब पहले अपनी माँ से सन्त्रस्त था और अब दूसरी मा से पीडित होगा तो उसमे भला क्या हित है ? फिर तो हम दोना ने, अपनी सतान के भविष्य को सवारने के लिए, बधे जीवन से कटकर एक स्वस्थ जीवन की जो कल्पना की है, वह सब एक ढकोसला ही सिद्ध होगी ना ? उसमे सार फिर कहाँ ?

इसलिए मुझे सूरज से विधिवत विवाह रचाने से पहले सोचना होगा और

कल देर रात गए तक लिखे गए अपनी डायरी के पन्नो को वह एक बार, दो बार, तीन बार जब पढे जा रही थी कि तभी कॉलबेल थरथरा कर रह गई। इधर इन दिनो वॉल्टेज इतना कम रहता है कि बेल पूरी तरह टन्ना भी नही सकती, वह आचल सहेज कर उठी। आख पलक पर

हाथ छुआकर उसने ज्योंही दरवाजा खोला, सुना—
—' बेरग चिट्ठी है—तीस पैसे '
— छाडो हम नही लेना। उसके उखडे बाल थे।
डाकिया घूमा कि उसके बोल फूटे—
—कहाँ से आई है ? किसकी है ?
"—दिल्ली से -पर छोडिए। जिस रास्ते जाना नही " डाकिया नया था। कम उम्र भी। किरन ने उसे आखो से बरजा—' ठहरा पैसे लाई " वह पलटी। घडी ने टकारा दिया और उसने तीन सिक्के उसके हाथ मे धरकर लिफाफा ले लिया। सूरज का पत्र था। ' ये भी एक ही हैं। यू पैसे के पर लगा देंगे पर पत्र पर पूरे टिकिट नही लगायेंगे।' पत्र खोलते हुए उसने सोचा—' कहती हू सूरज, कोई काम कभी पूरा करोगे ? तो बना बनाया जवाब चपेक देंगे—किरन अपना जीवन ही अधूरा है अधूरा ही बीत रहा है तो भला और काम कब पूरे होंगे, अपने से ? ' अब किरन उससे क्या कहे भला। पत्र के माथे पर सुर्खी मे लिखा है—'मोस्ट अर्जेंट' और करीब-करीब सभी पक्तिया रेखाकित है। डाक टिकिट फिर भी आधे ही लगाए हैं—शायद इसलिए कि पत्र मेरे हाथो मे पहुचे ही पहुचे।

सूरज की किरन !

सोचते हुए जीना और जीते हुए सोचना। कितना अतर है दोनो मे ? तीन साल तक हम सोचते-सोचते ही जीते रहे आज वह घडी आयी है जब मैं बिना सोचे हुए जीना चाहता हू।

मीत ! अब हम जीते हुए सोचने की स्थिति मे आ पहुँचे है। सोच-सोचकर जीना तो मर-मर कर जैसा है। मैं अब अपने लिए आज के लिए जीना चाहता हू। शर्तों के साथ जीने का हौसला अब मुझमे नही।

जिस घडी को पाने के लिए हमारी सासें सलीब पर लटकी रहीं अब वह सलीब टूटकर चकनाचूर हो गई है। अब हम एक दूसरे की सासो के धागे की गाठो को खोलकर एक दूसरे के लिए जीने को आजाद हैं। आज तीन बरस से मैं तुम्हे पाने को जीता रहा, अब मैं तुम्हे पाकर, जीतकर, सौ बरस तक जीना चाहता हू।

मैं मान लू कि तुमने मुझे सब दिया है सर्वभावेन समर्पण। कुछ भी

सहेज कर नहीं रखा कल के लिए, अपने लिए। मुझे तो लगता है, एक दाम्पत्य जीवन जीकर भी तुमने उस 'पुरुष' को कुछ नही दिया। सब कुछ सहेजे रखा और मेरे मन प्राण मे उसे उडेल दिया। तुम मुझ पर रीझ ही नही, रीत भी गयी सब दे डाला मुझे, पर आज तक जो तुमने मुझे दिया है, उसे मैं ढोल बजाकर उजागर करना चाहता हू। सर आम एलान करना चाहता हू कि अन्यथा परिणिता एव पुत्रवती 'किरन' को मैं अपने सम मनी स्वत पवित्रता से ग्रहण कर रहा हू। अब मैं अपनी उस भावना का समाज और विधि की मुद्रा मे अकित करना चाहता हू।

मीत! मैं बहुत प्रफुल्लित हू। मेरे उल्लास की ऊर्मिया तल छू हैं। तुम्हे खोज रही हैं। मैं तुम्हे पाने और छूने के लिए अगले सप्ताह, आज से ठीक सात दिन बाद, उदयपुर पहुच रहा हू। बस।

अपने से सूरज को बाधो 'किरन'
'सूरज'

किरन ने पत्र पढा। बार-बार पढा। पढते-पढते उजली सुबह जलते हुए दिन का भेस धर धुआ धुआ होकर मटयाली शाम म ढल गई। उजली आशाए बधन का बाना पहनकर जीवन को धुआ धुआ कर गई तो? 'तो' का प्रश्न पिशाच बनकर 'किरन' की कल्पना के जीवन को लील जाने के लिए मुह बाये खडा था। उसने टयूब लाइट को ऑन किया। फीकी दिप्-दिप् कसमसाई पर वह जागी नही। बिजली का धक्का पूरे जोर पर न हो तो टिम टिम की छू छा तो होती है उजाला नही होता। हालाकि उजाले का सामान पूरा होता है। कनक्शन भी ट्यूब भी, तो स्विच भी-ऑन करने वाल हाथ भी।

मैं हू, सूरज है सब सामान है—सुविधा है, पर अदर की बिजली का पूरा आग्रह, बल-तेज नही हुआ तो? दिप दिप् से लम्बा, बहुत लम्बा, जीवन का अजाना रास्ता कैसे कटेगा? मुक्ति बाधती है, बधन मुक्त करता है, बधन राहो को समानान्तर रेखाओ मे डालते है, मैं सूरज के साथ समानान्तर रेखाओ से बने पथ पर जीवन की यात्रा नही करना चाहती। मैं तो उनके साथ एक पथ पर एक होकर दौडना चाहती हू।

हाथो मे हाथ लिए, आगे पीछे नही, बराबर-बराबर। और यह सब कुछ बधकर नही होगा, मुक्त रहकर ही होगा। तयशुदा रास्त पर वापसी स मैं डर गई हू उसकी कल्पना करके ही मरा दम घुटने लगता है।

और किरन टेवल लैम्प आन करके लिखने बैठी—किरन के सूरज !

वैसा सयोग है। खिलखिलाकर हसता हुआ बौराए आम की महक सा मादक मौलश्री की छाह सा शीतल ममता सा मीठा और शिशु मुस्कान सा मासूम।

भटकी हुई 'किरन' की अपन 'सूरज' से मिलने की बला आ गई। सोचो भला 'शैल' का 'किरन' से क्या नाता ? किरन का वास तो सूरज म होगा, या फिर वह पहाड की चटटानो पर अपना सर मार-मार के बुझ जाएगी ?

सच पूछो 'सूरज' तुमने मुझे मानकर मेरे नाम का ही नही मरे जीवन को भी साथक बनाया है। मुझे जीवन का उजास उसका राग और रग सब कुछ दिया है। और इतना दिया है कि उसे पाकर मैं स्वय गर्विता' बन गई हू। मुझे अपना-परायो का अब कोई डर नही। यहा तक कि अपनी कोख से ज म शैल के बेटे निहाल' का भी भय नही, जो आनवाले कल मे उभर कर खडा होने वाला है। फिर भी मैं बहुत भयभीत हू, तुम्ह लेकर। कभी-कभी तो मुझे तुम्हारे से भी डर लगने लगता है। चौक गए ना ! चौको मत !

वकील न तो तुम्हें तार देकर सूचित किया कि तुम अपनी पत्नी से मुक्त करार द दिए गए हो, और अब मुक्त हो अपना मनचीता जीवन जीन के लिए। अब तुम्ह कोई नही रोक सकता। मुझे तो अपने सतफेर से पहले ही मुक्ति मिल चुकी थी। तुम्हारी मुक्ति की ही तो प्रतीक्षा थी।

तुम्ह सालता भी होगा कि मैंने यह सब तुम्ह आग बढकर क्यो नही बताया ? ट्रक मिलाकर मैं झूम-झूम कर क्यो न न्यौछावर हो गई ? जबकि मुझे मालम हो गया था कि उससे मुक्ति का आदश हमारे लिए प्रेम का सदश लेकर आया है।

सच है, मुझे सब तभी मालूम हो गया था जबकि अदालत ने तुम्हारी मुक्ति की व्यवस्था कर दी थी। अगली सुबह की लोकल अखबार का

होकर चिल्ला चिल्ला कर मुहल्ले भर को जगा गया था—प्रोफेसर सूरज का अपनी पत्नी से छुटकारा।

दिन उगने पर तुम्हारे कॉलेज के एक सीनियर छात्र न जब मुझे बरामद मे धूप सकत हुए दखा तो ऊँचे सुर मे 'बधाई बधाई' कहा और सामन से गुजर गया। आज के अखबार मे 'विचार आज के लिए' के अतगत छपा है— 'सीढी पर सब सभल कर पैर रखते हैं। कितने हैं जो सीढी को सभाल कर रखन हैं?" मरे मन म सीढी को सम्भाल कर रखन की बात घर कर गई है। और मैं एक बार फिर डर गई हू, तुम्हारे से हा सूरज मैं कभी किसी से नही डरी। जब मुझे आठ वरस चलते चले जाने के बाद लगा कि ब्याह से बधी यह गैल मुझे कही पहुचान वाली नही है। वह आगे बढती नही आगे बढने का भ्रम भर देती रही है, ता अपनी कोख मे एक नादान बच्चे को लेकर भी मै उस रास्ते से हट गई और तुम्हारे आलिगन म आ गई और जैसे सब पा गई। यह जानत हुए भी कि तुम अपनी ब्याहता का, अपन बच्चे को छोडकर अलग बसना चाह रहे हो। किन्तु अभी कानूना अडचन सामने है। यह सब होत हुए भी मैंने अपने सूखते जीवन की डाल की कलम तुमस जोडी और धन्य हो गई। पर आज उस कलम को बाधत हुए न जाने क्या जी डरता है। डरता है शायद इसलिए कि जब हम बध जायेंगे तो टूट जायेग। और टूटे रहेगे तो बधे रहने की ललक सदा बनी रहगी। एक बार बधन के बाद हमारे तुम्हारे बीच क्या बच रहेगा? एक दूसरे को जिस तन्मयता से आज हम चाहते हैं तब विवाह सूत्र मे बध जाने पर क्या यह तन्मयता इतनी गहन और सवभावन रोमाचक और आत्मविस्मतिमय हा सकेगी?

पत्नी बनकर मैं तुमसे अधिकार चाहूगी।

पति बनकर तुम मुझस साधिकार कुछ अपक्षाए करोगे।

यदि मैंने उन अधिकारो को या ही ले लिया तो? और अगर मैं तुम्हारी अपेक्षाओ को ना चाहकर भी टाल गई तो?

फिर इस बधन का क्या होगा? यह बधन मुझमे तुममे कही फिर मुक्ति की लालसा जगा गया तो?

एक दूसरे से बधकर यदि हम फिर पूर्व जीवन को दोहराने लगे तो?

आज मेरे तरकश मे कोई तीर नहीं। उसम केवल 'तो' ही 'तो' है। और य 'तो' मेरे मम को बध रह हैं। सूरज ! इनमे मुक्ता प्राण दो।

बिन बधे ही तुम्हारी और केवल तुम्हारा

'किरन'

किरन न पत्र को लिफाफे मे रखा और सुबह जल्दी ही खुद ही पोस्ट कर आई। उसे लगा आज घना कोहरा है आकाश मे, सूरज शायद ही निकल।

× × ×

—सिविल विवाह की पहली वषगाठ पर किरन खूब सजी थी। सलीके से उसने अपन का सवारा था। पीपल के ताजा पत्ते के रग की आबदार साड़ी के आचल का 'सूरज' की आखो के आग लहराकर उसने पूछा था—देखिए कैसी लगती हू।

—खूब ! एकदम राजपरी, पर सरसरा पीला रग तुम पर खूब फबता ऐस गहरे रग तब

—अनू की मम्मी पर खूब खिलत थे। यही न ? इतना कहकर वह खिल-खिला पडी।

—शैतान कही की और उन्होन आग बढ कर अपन म समट लिया। किरन को ऐसा लगा जैसे उन दोना के बीच किसी का आचल है, जो इनके आलिगन को, उत्तेजना को, आत्मा की गहराइयो मे नही उतरने द रहा। और व उसी मे कही सिमट कर रह गए हो।

× × ×

—पापा अनू भैया ने खुद तो बडा सेब ले लिया हम छोटा द दिया।

—अनू बेटे अपना सब निहाल को दे दो।

—हम क्यो दें अपना ?

—दे भी दो, वह छोटा है तुमसे।

—हम अनू स छोटे नही हैं। खडे हो कधा से कधा मिलाकर देख लें। हम बराबर हैं इनके।

—बराबर है यह, तो हम अपना सेब क्यो दें ? अनू तुनका।

—इसलिए कि सेब हमारी मम्मी लाई ।—निहाल खिचा ।
—तो फिर यह बैट हमें दे दो । हमारे पापा लाये हैं इसे ।

अनू बढा और निहाल के बगल मे घुसे बैट को झपट लिया ।
—"रखा अपने पापा का बैट । लाओ हमारी मम्मी का सेब ।" अनू ने सुना और सेब का नीचे रख कर हिट कर दिया । सेब सीधा किचन मे खौलते हुए दूध के तपेले मे गिरा । खौलता हुआ दूध किरन के हाथ चेहरे पर उडकर जा लगा । नन्हे-नन्हें फोफने डाल गया । सूरज के देखते-देखते यह सब हो गया और तभी उनका हाथ घूमा और अनू बिलबिलाता हुआ गाल सहज कर फर्श पर बैठ गया ।
—क्या उठाया आपने बच्चे पर हाथ यह निहाल तो है ही उधमी खाने पीने की चीजो को नापता तोलता रहता है । मरा खाऊ कही का पिटवा दिया बच्चे का । इतना कह कर किरन ने दो चाटे निहाल के गालो पर जड दिए ।
—क्यो मारा तुमने निहाल को ? क्यो ? आखिर क्यो ? इसलिए न कि मुझे सन्तोष हो जाए कि मेरा ही नही तुम्हारा बेटा भी पिटा है ।
—मेरा तेरा आप करते है तो करें—किरन ने अपने हाथ पर उभर आए फोफलो को सहलाते हुए कहा ।
—कमीन, दो दिन के लिए हॉस्टल से क्या आया कि आग फैला दी घर मे । अगर दूध का कोई छीटा उनकी आख मे गिर जाता तो ? सूरज ने अनू का धकियाते हुए फिर अनू के चाटे लगा दिए ।
—इस गरीब को क्यो पीटते है ? सारे झगडे की जड तो यह खिलाना है और किरन ने निहाल को फिर पीट दिया ।
—सूरज ने आखें तरेर कर किरन को देखा और किरन ने उनके उबाल को अपनी आखो म तोला । वह अपनी स्टडी मे चले गए और वह किचन मे ।

अनू और निहाल दोनो बैठे रोते रहे ।

× × ×

देखते है यह स्नेप ! आपके साथ कैसी अजीब लग रही हू इस फोटो मे पहले जब एक तस्वीर उतरवाई थी साथ-साथ किरन बात पूरी करती,

उसके पहले ही सूरज बोले—"अब भाई घास से बनी जोड़ी और जन्म कुण्डली का जाग बिठाकर बनाई गई जोड़ी म फरक तो होगा ही।" किरन न उनकी आँखो में झाका और उन्होंने पलक झुका लिए। पर जो वह देखना चाहती थी वह उसने उनकी मुदी आँखो में भी देख लिया।

× × ×

—सुनती हो, अनू की बोर्ड में तीसरी पोजीशन आई है। देखो यह रहा उसका रोल नम्बर। उल्लासित और ऊचा स्वर था उनका।

—निहाल का रोल नम्बर भी तो देखा। ठडा और उथला बोल था उसका।

—हाँ हाँ, वही तो ढूढ रहा हू फस्ट में देख डाला। नही मिला। चलो सैकण्ड वाले कालम में । उनकी बात पूरी ही नही हो पाई थी कि किरन आई और अखबार उनके हाथो से लेती हुई बोली "अब आप थोडी देर बाद थड में निहाल को ढूढने लगेगे। लाइए मैं देखती हूँ।"

—अब किसी के देखने से क्या होगा? रोल नम्बर तो जहाँ होगा वहा मिलेगा ना? सूरज ने आँखो से चश्मा हटाते हुए कहा।

—तो फिर आप थड मे ही देखें। जब ऐसा ही मानते हैं तो । यह कह कर किरन ने अखबार फिर सूरज को थमा दिया।

—अब इसम जी छोटा करने की क्या बात है? अच्छी तरह से ।

—आप समझते हैं, "अनुराग की पोजीशन आने से मेरा जी छोटा हो गया।" किरन न चाहते हुए भी कह गई।

—लो मिल गया। यह रहा सकण्ड म है जी छोटा करने की तो इसमे कोई बात नही किरन, पर जो मैं नही सोचता, कभी-कभी तुम मुझे वैसा सोचने के लिए उकसाती हुई सी लगती हो।

—अब क्या बात को धुना लगे छोडो। मिठाई खिलाइए। किरन के राख लिपटे शब्द भी आँच दे गए।

—क्यो? मैं मिठाई खिलाऊ, निहाल की पोजीशन होती तो तुम मिठाई खिलाती।" चाहकर भी सूरज के बोल की तुर्शी दब नही सकी।

—अनुराग और निहाल मे आप भले ही भेद करें। फिर जितनी शक्कर डालोगे उतना ही तो मीठा होगा।

—कहना तुम यह चाहती हो कि अनू हॉस्टल म रहता है। उस पर अधिक खच होता है। यही ना ?
—आप आज मेरी बातों म उलटे अथ ढूढ रहे हैं। मेरा मतलब था जो जितनी मेहनत करेगा उसे उतना ही फल मिलेगा।
—तुम चाहो तो अगले साल स निहाल को भी हॉस्टल मे डाल दें। सूरज ने महनत की बात को परे कर, बात के मूल को छून हुए कहा। तब तो फिर मुझे भी नौकरी करनी पडेगी।
—क्या ?
—इतना खच एक तनख्वाह से तो जुट नही पाएगा।
—आन दा आज निहाल को। लताड कर कहूगा कि पढाई मे मन लगाए। सूरज बोले।
—यह सब पहले मुझे बताना होगा ’
—बातो का उलझाओ मत किरन। "उलझाने पर चीजे सुलझती भी हैं, और टूट भी जाती हैं।" पीपल के पत्ते की साडी पर एक बेडौल तस्वीर उभरी फिर एक गेंद बनकर उछली और उसके आचल का भेद गई। किरन को लगा जैस वह अपने तन पर अखबार लपटे चौराहे पर खडी है और निहाल अनू अपन रोलनम्बर देखने के लिए उस पर झपट रहे हैं।

नही नही मैं कानूनी कागज का परहन पहन कर सुहागिन नही बनूगी। कागज की आट भला कितनी टिकाऊ होगी ? किरन बडबडाती हुई नीद से उठी। उसने आखे मलकर सामने आइने मे दखा तो लगा जैसे वह अपनी उम्र से बडी हो गई है और जैसे उसने एक ही रात मे, आने वाल कल को, कल को ही नही हजार बरसो का जी लिया है।

× × ×

सात दिन टूटत कि उसके पहने ही सूरज का पत्र आया। लिखा था—मयामयी किरन !

मुक्त रहकर जुडे रहने के पीछे कल के लिए जीन की ओट मे, कही बीत हुए कल म लौट जाने की अमुखर कामना तुम्हारे मन मे हो तो मुझ से छिपाना मत। मैं तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

—सूरज

किरन न उत्तर म लिखा—
अविसासी सूरज,

अभी हम बधे नही। बधन की प्रक्रिया भी नही बनी कि शका, सशय और अविश्वास के सिलसिल शुरू हो गए। इस मैं क्या नाम दूँ? पढा था कही, या तुम्ही ने कहा था कि मुक्त रहन का आनन्द दूसरो को मुक्त रखने मे है।

हमारे सस्कारो का जड शास्त्रो स मत बाधो। उनके सस्कार भी उन मत दो। तुम जिस सामाजिक स्वीकृति की चाहना कर रह हो, उससे क्या बनेगा? विवाह सस्कार तो तुम्हारा और मेरा दोनो का पहले भी हुआ था। उसका क्या बना? मैं मन सस्कार चाहती हूँ। जो लिखा है मैंन, उस ही बाँचो सूरज।

मेरे लिख हुए शब्दो को अर्थ विस्तार मत दो। 'मायावी' का एक अर्थ छलना भी होता है। यह सबोधन मुझे मत दो सूरज, बधन की बात ही मायावी' कहला गयी तो बधन?

—किरन

काटो नहाई ओस

कैसे दिन थे ! कच्ची अमिया से लुभावने तो कभी रस भरे आम-से मन भाते तो कभी लानी-से मुलायम और सोंधे। उजाला अच्छा लगता, अंधेरा आख मिचौनी के मल का इशारा होता, आगन म चहकती चिड़िया अपनी सगी थी तो मुडेर पर बोलन वाला कौआ सदसा दता हितुमीत।

मा-मा, मुंडेर पर कौआ बोला मामा आएग। रमजू मामा तो आ भी गए। खील-पताशे, गेंद-कचे और न जान क्या-क्या लाए ! सूरज के चिलके म रख काच की आख से उसन उजली अनाखी फोटू वाली डिबिया हम भी दिखाई। रग विरग नाचन-गात लोग-लुगाई सब मा ! हमारे मामा क्या नही आन ?'

मा उसास लेकर कहती, नही, मामा से तो काना मामा भला, पर तुम नसीब मारा के ता दो-दो मामा हैं। दाना कान भी है, पर दोनो एक के बराबर भी नही।'

मैंने जरा होश सम्भाला तो जाना, मा का मायका उजाड है। न उसके मा, न बाप ! अब ता उसकी नई मा भी नही रही। पर नई मा से दो-दो भाई हैं—दोनो के एक एक आख नही है। उन्होंन जब एक दूसरे का ही फूटी आख नही दखा, तब भला पराई कोख की बहन, मरी मा को व कसे और क्यो लखत चाहत ?

यू नहर की चाह-राह आस विसास और हुमक हुलाम हर बेटी, ब्याही बिनब्याही के मन मे होती है, पर मा थी कि अपन बाबुल क घर के सन्नाटे का सदा आखा म बसाए, हिए म रमाए रहती ! नैहर का उजाड पन जब तब रुला जाता। मुहल्ले की किसी बहन बेटी के यहा उसके भाई बाप आए हैं। गोद गदराने पर पीलिया भात या अगिया दुपटटा लाए हैं। मा सुनकर हिरा जाती। उसकी पलक पाख भीग जाती यह मुझे का[illegible]

आख म भर कर खब खूब चुपके आमू रो लेती। अब्वा आत और मा को यू हारा हिरासा देखत तो, मुझसे पूछ लेत, 'बिटवे! आज फिर पड़ौस म किसी हुसना हलीमा के यहा उसके बाप भाई आए सग हैं!' और मा की पलका पर तुले हुए आमू उसके गालो पर ढलक कर जैसे अब्वा की बात की हामी भर देत।

अब भई, मायके वाले जब जा करें जुटाए, वो सब भी ता तेरे हत आ ही जाव हैं। फिर यू थाडा-थाडा होन, हारने हिरान म क्या तो बन? फिर नवलराम काका के रहन ग्रू अपन नैहर को जीता-जागता न माने, तो तेरे जैसा ओछा मन किसका?' अब्बू कहते।

ऊच-नीच, अपना-पराया, सग-सबधी जसे रिश्तो नाता की कुछ परख जब मे भर नही समझ म जागी, तभी से जाना की अब्बा नए भाई-बहन के आन पर व सब लात-सजात रहे, जो ऐसे मौका पर मायके से भाई-भौजाई या फिर माँ-बाप लाते हैं।

माथा नहा कर माँ उजले अगना कुनकुनी धूप म बठी बाल सुखाती थी के मनिहार आन बोला, 'भौजी, लो पसद कर ला चूडिया! वैसे मुसी जी न खुद पसद करके तो पहुचाए ही हैं, तुम अपन मन भात और चुन लो!"

रगरेजिन तभी आई और रग रात लिहाज म बोली, "मुसानी आपा, लो सहज लो, पीलिया-पाट मुसी जी ने खुद अपनी चाह से चुन कर य रेसम की ऊची जात के अच्छे नमूने भिजवाए हैं।'

रहीमन खाला आईं। कह गई 'य सितारो जडी मखमली जाडियाँ खूब फबेंगी तुझे वेटी। मैंने अपने हाथो इन पर काम किया है। सच्चे सितारे मुसी जी ने दिलवाए थे भई लुगाई जनम जमारा तो उसका जिसके नसीब मे मुसी जी जैसा खावद सुहाग बदा।' दाई मा हामी भरती और यतन मलती जुम्मा वाह-वाह करती। माँ सब सुनती, निहाल होती और फिर गुमसुम ही डूब जाती।

मा अपनी गोदी में नन्हें ललन का सहेजे अपने पीले परहन को सहेजत-सवारत खडी हुई कि तभी तुफेलन खाला ने भी अपन जाए को कोख मे भरा, माथे पर ठहरे आचल को पहले नीचे सरकाया, फिर उसे

सम्भालते हुए बोली 'मुसानी आपा ! अबके तेरे पीहर वालो न सुध ली तेरी, पीलिया तो चोखा लाए खूब खिली फूली लगे है तू इसमे।"

"जे पीलिया, पीहर का नही ससुराल का है।"

"मुसी जी खुद लाए है अपनी का मन मान रखन के लिए।' पडोस की बिस्सा बुआ बोली।

"वाह ! उलटे बास बरेली ! भई अपन घर मरद का लाख ओढ पहन ला, पर पीहर की लीर चोर से जिए मे जो ठुमक-ठुमक जाग वो कहा ! दूर रिश्त की देवरानी ने मार की और अपन भाई के हाथा ओढाए पीलिए को सतेज एस होठ हिलाए के मा को लगा वे बिना लीर-लीतर के उघडी बेपर्दा पाच लुगाइया के बीच खडी हैं।'

ऐसे म, मा जहा होती वहा हाकर भी नही होती। तभी किसी न कह दिया, भाई भाई भाई होद भरतार भाई का बान लेता कोई अच्छा लगे।' और सब हस पडती। फिर ता मा का वहा खडा रह पाना अचम्भा होता। मा ने आग पाच लुगाइया के जुडन पर उनके बीच पीलिया ओढ कर जाना छोड दिया, ता अब्बा का अखरा। जोर देते—वो ही पहन जो छुटके के जन्म पर आया था। मा कैसे समझाती उन्हे। हार जाती और फिर लुगाइयो की भाई भरतार के बदल की बात सोच छाटी छोटी और गुमसुम हो रहती। डबडबाई आख पाख लिए सहारा तकती और उसे तभी वह मिल गया, जिसकी चाह म हारी हिरसाई थी।

'नवला नाना' आए थे मा के मायके से। गाव से शहर, तिलहन-कपास बेचने। छूटके का गाद म बिठा कर आ मेरे माथे पर हाथ फेरते हुए नेअ-निहाल नजर स उन्हाने मा को निहारा और होले से बोले थे, 'गटटू बेटी ! मरे भाग बेटी नही बदी पर तू जान, तुझे याद करके, तेरे कने आकर, मुझे नी लगे कि मरे कोई बेटी नी। तू जाने, तेरे 'अलमू का नाना और मैं गाव मे एक दूजे की छाई परछाई बन के रहे बढे। तेरी मा न तो राखी बाधी थी, इस बिन बहना क भाइ की सूनी कलाई पे। सच्च गटटू, तरी बाडी को फला फूला दख मुझे लगे के जैस मरा खत हरिया गया, मेरी अपनी बेटी के आचल की बेल म फूल ही-फूल भर गए।'

'काका ! तुम्हारे जी जान मे मेर पीहर की जोत जगी लगे मुझे।

तुम मेरे घर-आगन आकर गटटू की टेर लगाओ तो मुझे लगे जैसे सात परिवार मेरे आग हैं, मुझे पुकारे हैं। तुम्हारे अगोछे से मेरे पीहर के छार बधे हैं, जीते हैं, काका प तुम छठे चौमाम ही मूरत दिखाओ हा।"

मा की आख मे पानी होता और नवल काका अपने अगोछे को अपनी आखो स लगाते।

मा उधर अपने का साधती इधर नवल नाना भी अपन का सम्भालत। नाना जी के पैर छुआ, सलाम करा इन्ह, आते ही बस चढ गए सिर, उतरो नीच।' मा हम छुई मुई-सा डटियानी। पैर छून की बात हम अटपटी लगती। मैं गाद से उतर कर 'सलाम नाना जी' कहता और मुनिया 'छलाम' कहकर अपनी नन्ही हथली अपनी आख पाय पर रख कर मां का छाती म मुह गडा लेती।

नवल नाना के अगोछे क छार म खाड चन बधे होत और वे हमारे सामन गाठ खोल दत। दो मुठठी खाड डूब चना म मा न जान क्या दखती और झट उन्ह अपने आचल क छोर म सहज लेती। फिर हम चुटकी चुटकी भर यू देती जैसे अमरित बूद बाट रही हा या अजमर वाले ख्वाजाजी का तवरुक, गटटू ! लो य तर लिए पीनिया लाया हू—इस बार तिल के चौरो दाम पट गए। ल, रख ले इसे, और ना क्या बना है तेरे इस बूढे काका से अब वो वेट तो बस।' वह बोलते। काका ! क्यो जतन जाल मे डाला हो तुम अपन को, तुम्हारे खाड चनो म जो अमरित भरा है वो भला लुगड लीतर म कहा ? य सब क्यू करा हा मरी खातिर।' मा कहती।

"नी र बेटी ! तू बहू-बेटा की मत सोच आखिर तो खेतें-कुए मरे बनाए चुनाए हैं। क्या तीन पसनो मे मरा इतना हक भी नी के मन का कुछ कर धर सकू। और नही ता अपन नह नात की बेटी हतु एक चीर चोला भर जुटा सकू '

' पाहुन ता अब न जाने कब आए।" उनका इशारा अब्बू के लिए होता है। 'मरे आसीस बोलियो उन्ह। ता चलू मुआ मना म।" अब उन्होंने हम भाइ-बहना के गाला को सहला कर कहा, काका ! सोचा, कभी के तुम मरे यहा का पानी तक नी चखो और मैं ? '

"अब गटट्, तू अनजान वन तो तू जान। भला वेटी के घर पीव है पानी कोई बाप ? तेरा बाप जीता होता तो पी लेता तरे घर का पानी ? उसम मुझमे फरक करे है तू वेटी ?"

"नी नी, वो बात नी काका—ये टाबर टसूए पूछे हैं " नाना जी अपने यहा खाए नी, पानी भी नी पीवें वो हिंदू हैं और हम '

चीर हरण के बाद

पहल मौसम न पुरवैया का झीना घूघट टरकाया और फिर बादल का गढा ओढ लिया । जान कैस और कहा से सरदाई हवाओ ने गमक ली कि सुरमुरी छट गई । आकाश के किसी कोन म दुबक कर बैठी अमावस की भोर ने तभी आचल निचोडा और दखते-दखत शहर का ओर छोर भीग गया । धरती की सास म मिट्टी की साधी सुगध रच गई । पवन वेग बुरमुरा कर ठहर गई एकदम सास रोके चुप । अमा की साथ का आचल लहराता कि बिन मौसम की अनचाही छीटा छाटी बिलमा गई और दीपावली के दिये आगन-मुडेर पर उजली किलकारी बिखेरने लगे । हाट बाजार म भीगी भीगी नरम रोशनी, ठहरी हवा की हथेली की ओट, जगर मगर हो उठी ।

"आदिवासी हस्त कला केन्द्र (सरकार का अपना प्रतिष्ठान) बडी और ऊची दुकान के माथे पर तिलक की भाति चढे नियोन लाइटस के लेख जगमगान लग । इस प्रतिष्ठान का राज्य के उद्योग मत्री के हाथो, दीपावली क शुभ अवसर पर, आज ही रात का नौ बजे उद्घाटन होना है । आदिवासियो के हाथो मे आदिकाल से सुरक्षित दस्तकारी को व्यावसायिक स्तर पर पनपाने के लिए नय मत्री की कल्पना आज साकार होनी है । प्रात के हर बडे नगर म ऐसे एक केन्द्र की स्थापना के आदेश जारी किये जा चुके हैं । उत्तर भारत के 'वनिम' नाम से विभूषित इस टयूरिस्ट नगर म यह पहला केन्द्र है ।

उद्घाटन समारोह मे कहीं कोई कसर न रह जाए, इसके लिए जिलाधीश ने स्माल इण्डस्ट्रीज विभाग के तेज तर्रार और चुस्त चौबन्द डिप्टी डायरक्टर श्री तिरखा को खास तौर पर तैनात किया है । तिरखा साहब अपने चार सहायको के साथ दो घटे पहले ही आ चुके हैं । अपने

सजग 'ऐस्थोटिक सेंस' का पूरा-पूरा उपयोग करके उन्होंने दस्तकारी के मुह बोलते नमूना को यूं सजवाया-जमवाया कि केन्द्र मे पैर रखते ही मुह से वाह खूब' निकल जाए तो, अजब नही। तिरखा साहब चौफेर आख डालकर जायजा ले रहे थे कि कहीं कोई कभी-कसर तो नही रह गयी, सभी कुछ डायरेक्टर स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज की पूर्ण योजनानुसार तो है न ? यह साज-सजावट का अभी तोल ही रहे थे कि उनकी निगाह ने ठोकर खायी।

—"अरे ये केस खाली पडा है ?" उन्होंने अपने सर से भी ऊपर निकलते हुए काच के उस चमकते हुए आदमकद शो-केश के शीशो पर हाथ फेरते हुए कहा।

—"वा साब इसमे आदिवासी युवती की डमी-प्लास्टिक की डमी लगनी है—और वह आ नहीं पाई। रिमाइडर पर रिमाइडर जा चुके हैं, परसो तार भी दिया पर

—वो सब तो किया पर अब वक्त कहा ? शो-केश मे आदिवासी युवती की डमी रखने का आइडिया खुद डायरेक्टर साहब का है और वही गायब यह केस लगा भी ऐसी कमांडिंग पोजीशन मे है कि इसे हटा दें तो सारे केन्द्र की नाक ही उड जाएगी। रगीन सीमेंट मे सीप के चमकीले चिप्स से चमकते पिलर मे सटे शो-केश को निरखते हुए तिरखा साहब ने कहा—"भई, कुछ भी करो, कैसे भी हो, डमी तो इसमे लगनी ही चाहिए। शहर मे कही नही कोई डमी ?

—है तो साहब, पर वे सब स्कूल के लडको की हैं।

—अरे मारो भी गोली। अपना दिमाग फेंको कही तिरखा साहब अपनी बात पूरी करते कि तभी उन्ह सामने टैट की कनात के पास एक भिखारिन दिखाई दी। वह कनात के पीछे बननेवाली पूरिया-कचौरियो की सुगन्ध से बधी मुह चौडा कर अजीब ढब से चिरौरी कर रही थी, बाबू एक कचौरी—बस एक पूरी तिरखा साहब के माथे मे जलू-बुझू, जीरो बल्ब की दिप दिप्,म नाचता हुआ बिजली का मोर बोल उठा, "ठीक आदिवासी ही लगती है यह जवान भिखारिन, इसे ही नहला धुला, सजा-सवार कर आदिवासी पोशाक पहना कर शो-केश मे खडी कर दें तो ?

यही कोई आधे घंटे के लिए ! बस उदघाटन का फीता कट जाए। एक राउण्ड मिनिस्टर साहब ले लें—फिर इसकी छुट्टी।" तिरखा साहब ने सब सोच लिया और अपने सेक्शन इंचार्ज को, दूर अलग, ले गये। उसे जरूरी हिदायतें देकर आंख का काना दबा दिया। देखो—"शेम" तुम्हारे और केन्द्र के मैनेजर के बीच रह यह बात, औरों को काना कान खबर न हो।' तिरखा ने शर्मा के कानों में फूंक मारी और साज-संभाल में फिर जुट गए।

× × ×

मंत्री जी के आने के थोड़ी देर पहले ही केन्द्र की बिजली चली गयी। तिरखा साहब हड़बड़ाकर बोले, "देखो तो वर्मे शर्मे यह सब गुल गपाड़ कैसे हो गया।" कोई पांच मिनिट अंधेरा रहा और फिर सब जगमगाने लगा, आदमकद शो केस भी। युवती की डमी थी उसमें एकदम सही-सजग ठीक वैसी ही जैसी तीज त्यौहारों पर देखी जा सकती हैं। अपनी पारम्परिक वेश भूषा में गहनों से सजी-संवरी एक आदिवासी युवती की डमी लगी थी उसमें।

तिरखा साहब ने सब कर लिया था। एकदम सौ टंच। तभी कार का हार्न सुनाई दिया। पुलिस के प्यादों में हलचल हुई। मंत्री जी आ गए आ गये मन्त्री जी अगली कार के रुकते ही पिछली कार से कलेक्टर साहब उतर पड़े और कार के फाटक को अदब से अपनी ओर खींचते हुए "पधारो सर" के बोल के साथ दोहरे हो गए। एस० पी०, डी० एस० पी० ने सलाम ठोंक और अगवानी में दायें-बायें चलने लगे।

नियोन लाइटस के मुस्कराते हुए साइन बोर्ड पर मंत्री जी ने नजर डाली। नहीं ऊंचाई वाली सीढ़ी पर पैर रखा कि उनके गले में फूलों के हार झूल गये। कैमरे की आंख चमकी और सामने आई तश्तरी में से चिलका मारती कैंची उठा कर उन्होंने फीता काट दिया। कैमरा ने फिर आंख चमकाई और चौफेर मे तालियों की गड़गड़ाहट भर गयी। मंत्री जी आगे बढ़े पहले, एक नजर शो-केस पर गयी। उन्हें लगा जैसे शो-केस के शीशे पर झूलते खादी के फूलों के पीछे आदिवासी लड़की की मूरत में कहीं कुछ गुरगुरी-सी जागी है तभी उनका पी० ए०, सारी कहता हुआ उनके

पास आया और उनके कान मे कुछ फुसफुसाकर परे हो गया। मत्री जी की चाल मे तेजी आ गई। और वह अब सब झट झट निपटाने के मूड मे आ गए। चटपट उन्होने केन्द्र का राउण्ड लिया और बाहर आकर शामियाने की ओर बढे। सामने लगे आसन को ग्रहण किया। स्वागत भाषण करते हुए जिलाधीश उनके मत्रालय की उपलब्धियो का और गिनाए इससे पहले ही वह चेहरे पर आभार का भाव लाकर खडे होते हुए और 'दो शब्द' के बदले सौ दो सौ शब्द कहकर ही बैठ गए उनकी उतावली को लक्ष्य करके आयोजक भी जान गए कि शायद राजधानी से बुलावा आया है। इधर मन्त्रिमडल मे हेर फेर की बात भी राजनीतिक हलको म गरम थी। धन्यवाद और औपचारिकता पूरी करते ही आगे वाले शामियान की कनात हट गई। सामने जफे डिनर था। मत्री जी थाडा-सा चुग चुगा कर 'क्षमा करें' कहकर अपनी कार की ओर बढे। उनके रवाना होते ही टेबल पर तश्तरिया चम्मच बजन लगे। अग्रेजी ढब म परसा गया भारतीय खाना ठेठ हिन्दुस्तानी ढब मे खाया जाने लगा।

जिलाधीश के साथ दूसरे छोटे-बडे अफसर रवाना हुए तो साढे नौ स ऊपर हो गए थे। दीपावली की रोशनी म लोगो के चेहरे चमक रहे थे। सब म एक हुलास था सबके मन खिले खुले थे पर वह' शीशो के पीछे बद, रोशनी के धारो से घिरी हुई, सास रोके मुरदार खडी हुई थी एकदम चुप व हिलबुल डमी। गरम पूरी-कचोरी, हलवे भात और सब्जी सालन के तीखे भभके शो केस पर दस्तक दत, पीछे के खुले हिस्से से घुस कर, उसकी भूख को भडका रहे थे।

आज उजाले के त्यौहार पर भोर किरन जागे ही दारू की बासी बू फेंक कर उसका घरवाला उसके मन माथे पर अधेरा उडेलता बोला था —अटी ढीली कर अपनी आज दीवाली है, पीने के लिए आज भी ना बालती है। भगतन छिनाल, तैवार के मौके पर अपन जन को कोख मे उछाल कर उसके भूख रोग की दुहाई दकर, कल दिन भर मागा खाया और मुझे पव्व के पैसे पर टरका दिया रात ला और ला

—अब और का से दू ? रात को पिया। अब, मूत पी ले जाने कहो का जा पीऊ पीऊ रात दिन पीऊ जे मान जी के बेटा भूपा है।

घूट दाम नी पिला दे।" इस सोच से ही उसे पसीना छूट गया। और अब वह 'उनकी' खोज मे निकल गई। गाजे के अखाडो से लेकर ठेके की दूकान तक, गली हाट-बाजार सब नाप लिए उसन पर 'वह' कही नही दिखा उसे, घम फिरकर तीन चार चक्कर अपने डरे के भी लगाए उसने। वहा न वह था न उसका बचवा, अपनी जात बिरादरी, सग-सगिया से भी उसने पूछा, पर किसी ने बाप-बटे' को कही दखने की हामी नही भरी।

भन्नी-बेहाल, सोच मे डूबी वह यहा वहा शहर म डालती रही। साझ हो गई पर उसे उसका बचवा नही मिला। दीवाली के दियो का उजास फैला और उसका मन अधेरे मे डूब गया। भूख तो अजानी या परायी नही था उसकी रगा नसा मे रहती आई थी। बचवे के विचार से उसके पर काप काप गए पर रुके नही। अब वह हाथ फैलाय आदिवासी हस्त-कला केन्द्र के सामने तने शामियान के सामन खडी थी। तभी कुछ दन दिखाने की बात कहकर उस बाबू ने उस सूट बूट वाले साहब के सामने ले जाकर खडा कर दिया। दस रुपय का नोट लहराया और उसकी आखो म गाल-गप्प म बच्चे की पाई तैर आई। डाक्टर न बचवे को देखकर कहा था—बस भी हा, दूध का एक डिब्बा ले आ। कुछ दिनो अपना दूध इसे मत पिला। सूखा हो गया है इसे। उसे बचवा की फिर याद आई। और नोट अंटा मे खासकर वह बाबू के पीछे हो ली।

× × ×

जवान बनी उसे बूढी चिवनी चुपडी बाई न जब अपन ही बराबर आरसी के सामन खडा कर दिया तो वह अचकचाकर पीछे, खिसक गई। आरसी म खडी जे रूपवन्ती कौन ! वह पहचान नही सकी जे था 'सीली है—नमडी 'चन्ना' की बू, 'मूदे बचवा की मतई' दर-दर हाथ पसारती भीजन ? नही।' और वह शीशे म उभरी अपनी ही परछाई से झेंप गई।

बड मदरसे मे पढन वाली जवान-जबर छोकरी—छोकरी ही तो दीख है, वह इन सुधरे-सवरे, रग-सजे भेस म। इधर द लिखी पढी बाइया भी तो कभी-कभार धारे हैं ऐस भेस। वैसी ही, वो ही, पहाडी भीलन वाली घघरिया। वैसी ही आग-माग और वसी ही फैला-फूला उभरा ओढ़ना वाली चीर। ऊपर से धधकती छाती पै जे चादी की सांकस हसली, कानों म

रोग है उसे, उसके लिए कुछ

—सीख देती है, मेरे को, मेरे साले की लुगाई तू। चल, कर ढीला अपन बिलाउज का गूमड । देखनी है मेर कने, वो जो छाती पर गूमड किया पैसा कहा खोसे हैं—मैंनी जानू भला।

—ले देख अपनी मेना-महतारी का गूमड, ले है कुछ इस काटे जाम मे। इतना कहकर उसन अपनी छाती पर चढ़े फट ब्लाउज को ऊपर अरस दिया।

—सूकरी जोवन दिखाती है। जेठ-देवर सब हैं आस-पास, सबके सामने नगी हाव तू इतना कहकर वह डगमगाते पैर आगे बढा और उसका झोटा पकड कर खेच लिया।

—छोड कसाई छोड । वह चीखी और दोना हाथो से उसे इस जोर से धकेला कि वह जमीन पर गूदड मे लिपटे उसके 'बचवा' पर जा गिरा। बचवा बिलबिला उठा वह उसे उठान के लिए लपकी तभी उसन सभल कर उसे अपनी गोद मे ल लिया।

' —माटी-पूत दोना को एक साथ सफा कर किसी और यार के पास जान की सोचे है तू। सब जानू।" उसन गहरी मार की।

"तेरी मा की जायी जनमी हो वैसा करे, मैं नी करती वैसा साग कुआरी बहना और राड मा, अपनी का पट दखा है, ऊचा उभरा? मेरे सामने ऊचा मत बोल हा। छोड मेरे दूध पूत को।' धारदार मार की उसने और अपने बचवे को छीनने लगी उसकी बाहो स।

—' तेरा दूध है कि मेरा तुखम इसी की दुहाई द खूब भीख कमाई करे तू। अब इसे मैं अपने पास रखूगा। खुद मागूगा। देखू तू अकेली कित्ता लावे है?" बचवे का उसकी पहुच से परे कर वह बोला।

— 'जे बात तो तू ले जा इसे। इसका भी पेट भर ले तो बोलना। देखूगी मैं।' उसने कहा और वह रोते बिलबिलाते बचवे को लेकर चल पडा। मेरे से दूर वह अकेली बठी रोती रही। जुए मारती रही। सूरज चढ़ा तो पेट मे घुडघुडी बजने लगी। उसे ध्यान आया इस नसेडी मरदुए ने बचवा को चा-पानी भी पिलाया होगा के नी। चार पैसे हाथ चढते ही वह कलाली की गेल लेता है। बचवा बीमार है। कही वह उसे भी दो

घूट दारू नी पिला दे।" इस सोच से ही उसे पसीना छूट गया। और अब वह 'उनकी' खोज मे निकल गई। गाजे के अखाडो से लेकर ठेके की दूकान तक, गली हाट बाजार सब नाप लिए उमन पर 'वह' कही नही दिखा उस घूम फिरकर तीन चार चक्कर अपने डेरे के भी लगाए उसने। वहा न वह था न उसका बचवा अपनी जात बिरादरी, सगे-सगियो से भी उसन पूछा पर किसी ने 'बाप-बटे' को वही देखन की हामी नही भरी।

भूखी-बेहाल, सोच मे डूबी वह यहा वहा शहर म डोलती रही। साझ हो गइ पर उसे उसका बचवा नही मिला। दीवाली के दियो का उजास फैला और उसका मन अधेरे मे डूब गया। भूख ता अजानी या परायी नही था उसकी उमर-नमा मे रहती आई थी। बचवे के विचार से उसके पैर काप काप गए पर रुक नहीं। अब वह हाथ फैलाय आदिवासी हस्त-कला केन्द्र के सामन तन शामियान के सामन खडी थी। तभी कुछ दन दिखान की बात कहकर उस बाबू ने उसे सूट बूट वाले साहब क सामन ले जाकर खडा कर दिया। दस रुपये का नोट लहराया और उसकी आखो म गोल-गप्प म बच्चे की याद तर आई। डाक्टर ने बचवे को देखकर कहा था—कम भी हो, दूध का एक डिब्बा ले आ। कुछ दिनो अपना दूध इसे मत पिला। सूखा हो गया है इसे। उसे बचवा की फिर याद आई। और नोट अटा मे खोमकर वह बाबू के पीछे हो ली।

× × ×

जवान बनी उसे बूढी चिकनी चुपडी बाई न जब अपन ही बराबर आरसी क सामने खडा कर दिया तो वह अचकचाकर पीछे खिसक गई। आरसी म खडी जे रूपवन्सी कौन ! वह पहचान नही सकी जे वो 'सीलो है—नमडी 'चन्ना' की बू, मूसे बचवा की मतई' दर-दर हाथ पसारती भीउन ? नही।" और वह शीशे म उभरी अपनी ही परछाई से झेंप गई।

वडे मदरसे मे पढन वाली जवान-जबर छोकरी—छोकरी ही तो दीउ है, वह इन सुधरे-सवरे, रग-सजे भेस मे। इधर के लिखी पढी बाइया भी तो कभी-कभार धारे हैं ऐस भेस। वैसी ही, वो ही, पहाडी भीलन वाली घघारिया। वैसी ही आंग-मांग और वैसी ही फैला-फूला उभरा ओढ़ना वाली चीर। ऊपर से धधकती छाती पै जे चांदी की सारल हसली, कानों मे

बाले, बालो मे जगली फूल, फूलो मे पत्ती और पत्ती मे फिर रग, हाथो मे सीप घूघची के कगना, पैरो मे पैरो मे जे जकड बद झाझर अगो म बेहिल ठहरावा आखें काच पर टिकी हुइ, पत्थर बनी हुई। अधेरे ने कुछ देर पख फैलाए ही थे कि वह इस काच की खोल मे बद हो गई। जब उजाला आया तो वह एक मूरती बनी उसमे खडी थी, सूखे तने-सी अचला बगुलापखी टोपी वाला वह 'नेता बाबू' जब आख गाड उसे जोह रहा था तब उसके भीतर-ही भीतर जैसे कही कुछ हिल गया था। वह थोडी देर और उसके सामने रुकता तो वह चिल्ला उठती कि मैं मैं की बेजान गुडिया नही हू, सीलू हू-सीलू भीखना'। मेरा बचवा भूखा है, मैं भी भूखी हू। बाकी दस का नाट और दा मुझे। मैं गबरू बच्चे छाप दूध का डिब्बा अपने बचवे के वास्ते लाऊगी। उसे सूखा रोग है बाबू मैं भूखी हू।

'मैं भूखी हू मरा बचवा भूखा है। मुझे भी दो, पुरी कचौरी हलवा कुछ।' वह न जाने कब काच के घर स बाहर निकल आई थी। तिरखा जा चुके थे और शर्मे वर्मे भी कन्द्र के काउण्टर बाबू को, सब समझाकर मैनेजर भी उसे यह हिदायत देकर चला गया था कि वह उस भिखारिन को दस रुपये देकर कपडे-जेवर सब उतरवा ले और रजिस्टर मे जमाकर ले। उस यू भूख टेरत देख सब सकते मे आ गए। बाबू को चेत हुआ तो देखा कि वह प्लेटा प्यालो मे बची झूठन को खा चाट रही है। उसे अपने आचल पल्ले का तो जैसे होश ही नही। नया लहगे—लूगडे को उसने चिकना-चुपडा होता जो देखा तो नास कर डाला सबका कहता हुआ वह आगे आया उसे वहा से हटात हुए बोला—अरे। सूपनरता ये तून क्या कर गेरा, चाशनी शोरबा सब लगा दिया इस नये आइटम पे अब कोई तरा बाप मोल लेगा इ्ह ?'

"अरे तो भिनभिनाये क्यूँ बाबू। ला हमारा अपना लूगडा लीतर और सभाल अपना लहगा आंगिया।

—हां हां, चल उतार धर हमारा सब, सभलवाना है इसे आग।

—कैसे बोले। पर हमारे लीतर भी तो लाओ जो इन्हें उतार उन्हें फिर धार लू मैं।' बाबू ने सुना और पुकारा।

—'जगी ओ जगी, अरे कहा है ? इस भूतनी का सरोपाव ला द,

इसको।

—"वो बाबू इधर पिछवाडे इस्टोर मे, कह दो इसे वही चली जाए और बदल ले।" वह डाटक जवान जगी कह गया और एक आख को दबा कर कुआरे बाबू ऐसा कुछ जता गया कि सीली के पीछे वह भी चला।

—दीपो के सिलसिले अब टूटने लगे थे। बिजली के बडे डण्डे लटठ अब कम हो गए थे। और टुइया जुगनू बल्व का उजाला माद सा लगने लगा था।

—देख सभाल सहन कर हटाइयो। लूगडा लहगा, मसक मुसक न जाए कही। वडी महगी है। नही तो हम हाथ लगा द। स्टोर की बडी अलमारी के पीछे कपडे वदलने को खडी सीलू से जगी ने भेद भरी बोली म कहा और दोगली मुस्कान देकर उसके बाजू में आन खडा हुआ।

—अब जे मुह झोसा मरा हुआ हमे सिखाएगा, लूगडा, चोली उतारना, पहनना चल परे हो सबला हमारे लीतर तभी उतारु न जे कफन तेरा

—होय होय गजब की भरी वो तेरा रेशम पाट तो वही रह गया। उसी सिंगार घर म जहाँ तेरा जे चोल बदला था उस सिंगारु बाई ने। तुझे भिखारन से पवत सुदरी बनाया था जगी की सास अब उसकी गदन-काना पर तर रही थी।

—वो सब भूल जा ले आ मना ले मेरे सग दीवाली नया लहगा लूगडा दगे तुझे पर ऊपर दस का नोट और बस हम दो ही है और कोई नही। बिखरे बौराए बोल बोले जगी ने और झपट कर उसका आचल भर लिया अपनी मुट्ठी मे फिर उसे अपनी तरफ खीचत हुए एक झुरझुरी हसी हस दिया।

—ना ना छोड मुझे। अभी मैं हावा कर दूगी, लोग भेली हो जायेंगे छोड।" इतना कह कर सीलो न सब जेवर-जजीरें उतार कर फक दी और छिटक कर दूर खडी हो गई। उसका आचल अब भी जगी के हाथ मे था जगी आचल खीचता उसके लपेट-पेच खोल रहा था। वह उसमे परे होती होती दरवाजे की तरफ हुई तो सामने बाबू खडा था, आखो मे जिन्दा बोटी की भूख जगाए। इस छोर पर जगी उस छोर पर बाबू। सीलो अपनी धौंकती छाती से आचल सटाए दोनो के बीच सहमी खडी थी।

सिपाई सिपाई सिपाई आ गए की टेर हवा म की थी जगी और बाबू बहन और वह यह जा वो जा। सीला हवा के पैरा पर उड रही थी और वे दोना पत्थर के पैरा पर ठुके खडे थे। "साली नीच जात धोखा कर गई।' जगी बुदबुदाया, "मार भी गोली दगाखोर तिरिया को।' बाबू ने कहा और दोनो चुप हो गए।

× × ×

दीपावली की टूटती रात के उजाले-अधर म वह उडान भरती-सी उजले और नये कपडा से अपना आधा तन ढाप अपनी झुग्गी के सामन जा पहुची उसके सामन लडखडाते पैरा पर चन्ना खडा था—

—तो आ गई पातुरिया। दीवाली मना के वाह। तरा निखरा-बिखरा जे रूप बालों मे पटटी गालों म गुलाल आखो म कजरा बालो म गजरा जे छमिया तरा चीर कौन हर ले गया। चन्ना नशे मे भी पत की और सही सही बात बोल गया।

चन्ना म सौ नेकर कहू परन्तु मानेगा नी तू जे सब

—जे सब भीख मे दे दिया दाता न जे हीना। गालो पर झाल भी और गल मे नयमार भी। पै वो लूगडा—चीर कौन हर ले गया था ऐ, माली सीलो खूब मनाई तूने दीवाली खूब किया उजाला तून। लाई कुछ अपन बचवे-ललवे के हेत भी या फिर

—लाई हू जे देख दस का नोट उसके लिए डिब्बा दूध।

—दस के नोट के बदले करवा लिया अपना काया-पलट खाल दी कुत्ता के आगे अपनी छाती पिला दिया दूध जारो को

—तू अभी नसे मे है चन्ना। मुझे अपने बच्चे की सौ मैं सास—रोक-मजूरी करके, काच से घर मे पत्थर बन के

क्लाक भर के लिए मरके, जे दस रुपय लाई हू, चन्ने! अपने बचवे के लिए।

—अपना चोला उजान के लाज लुटा के लिखे-पढे बाबू लोगा के साथ क्लाक भर सो ली, तो लगी लिक्चर पिलाने। रात भर जो उनके सग होती तो अपनी खोली की गैल भूल जाती चन्ने को अपने पेट को भूल जाती पे मैं नी भूलूगा तैंने चन्ने के भरोसो को लुटा दिया, बेच दिया मेरे

बिसास को नगा कर दिया मेरी नाक कटा दी।, "मैं तुझे नगा कर दूगा ।" इतना कहकर वह बिफरे चीते की तरफ सीलो की तरफ झपटा और उसका ब्लाऊज चीरकर चिंदिया कर दी। सीलो सभले कि तभी उसके हाथ मे उसकी घघरी की लाव आ गई। हाथो से अपनी लाज सभालती कि तभी वह उस पर टूट पडा फिर बिफर कर बोला, "मैं आज अपने हाथो तुझे नगी कर तरी लाज लुटाऊगा अपने भाई-बाप के आगे।" इतना कहकर वह उससे गुथ गया।

हडबडी सुनकर पास के लोग खोली के पास आ गए तो देखा सीलो के डील पर एक चियडा तक नही और चन्ना उसकी छाती पर बैठा मुक्के तान रहा है। सीला की मुटठी बद है। मरद तो सब दखकर वहा स हट गए। बस गगना बुआ आद पर पल्लू धर चिल्लाई, "दे भी दे सीलू जो तरी मुन्ठी मे है जे बनसेडी कसाई नी मानने का।' सीलो न सुना और मुटठी खोल दी। चन्ना नोट झपट कर बोला—

—नही बुआ नही मुझे नही लेना इसकी लाज का मोल नी पिवगा बचवा इसका दूध नी कभी नी।' और दोनो हाथो से नोट के टुकडे टुकडे कर हवा मे उछाल दिए।

बछडे की जान पर आए सकट को जान कर जैसे गाय कुत्ते को सीग पर झेलनी झपटती है वसी ही सीला बिफर कर उससे परे हो गई और दात कटकटाते हुए गरजी—

"नसडी! नाडकट मे तरा लात घूसा, जोर-जबर, झेलती रही अब्बी तक, जे समझ के कि अपनी सतफेरी की लाज लुटी जान मेरा पति-परमेसर हल्कान परेसान हो रिया पर त ने तो मेरे बचवे का नोट फाड दिया उसके दूध भर डिब्बे पै ठोकर मार दी अब मे तुझे नी छोडूगी तू तू मेरे बचवे का बरी।" इतना बोल वह बिफर कर झपगी और उसकी पकड स छूट कर उस यू धकेला कि वह चित हो गया। अब वह उसके सीने पर चढ बैठी। फिर दोना हाथा से उसके मुक्क मारने लगी। इधर वह उसके मुक्के मारती जा अपने बाल नोच रही थी, उधर उसका बचवा गगनो बुआ की गोद मे मिमिया रहा था।

उजाले की प्यास

—मैं तो उसका नाम उजाला रखूगा।

—और जो लड़की हो गई

—ता तो ऊजली !

—और नामा का जैसे अकाल पड़ गया तुझे उजला ऊजली ही सूझे ?

—अधी को उजाला ऊजली नही सूझेगा तो भला रगा वाले नाम नीला-नीलू सूझेंगे।

—अधा तो मैं भी हू। पर तेरी तरह यू रात दिन अधेरे मे डूबा नहीं रहू।

—हा हा बडे हौसले हैं तुम्हारे पर औलाद से ही उजला होवे है घर म। बटा तो कुल दीपक आंखा का नूर कहलावे ही है।

—वो ही ठीक। अब बोल किसे टेरू। उजाले लाल को या ऊजला कुमारी को ? या फिर दोनो को एक साथ।

—धत लाज नी आव तुम्ह

—क्यू जुड़वा दो-दो नी होवें एक साथ ? सच, मुझे उजाला और तुझे ऊजली मिल जाये एक साथ तो ! इतना कहकर मरद ने अपनी ब्याहता की उगलियो के पौर पर अपनी उगलियो के पौर रख दिए। और उसन उसकी बनूर आखो को अपनी उजली हथेली से ढाप दिया।

—"बेटा जनमा है। बेसुध सी पडी मिहारो न सुना था। सुनते ही उसकी सकत जागी। बुदबुदायी उजाला और एकाएक ही ऊचे सुर मे पूछ बैठी डाक्टर बाई ! भला करो और बताओ तो मेरे जाये को दीखे भी है ?

—"दीखेगा क्या नहीं भला।" डाक्टर ने अधी मा की पथराई आंखा मे बुझन देखकर कहा।

—इसके तो दोना आखें हैं।

—आख तो मेरे भी हैं और उनके भी। दो और दो चार पर दीखे एक से नही हम दोनो जनम से

—तसल्ली कर तसल्ली-सब ठीक है।

"बेटा तरा एकदम सही है।" नस कह रही थी। जनम-कमरे से हट कर जब वह दूसरे कमरे मे बदन हुए खाट पर आई तब भी उसके माथे मे यही काध रही कि उसके उजाले को दीखता भी है या अपन मा-बाप की तरह वह भी " यही साच कर भँवर म उलझी थी कि एक जानी-पहचानी आहट के साथ उसके माथे पर उसकी सगी छुअन अवतरित हो उठी। वह खिल गई उजला गई, और मुह पर लाज का आचल रखकर मुस्काती हुई बाली—

—देखो जानो किस पे पडा है?

—सब जानू बूझू हू। मुझ पे या तुझ पे। बेजू अपने पहले बच्चे की आखा पर हाथ फेरते हुए बोला।

—मुझ प तुम प तो क्या यह भी हमारी तरह ? जानो-बुझो तो भला कि उस दीखता भी है या उसने उसास भरी।

—ठीक कहू हू कि तू, हमसा अधेरे मे डूबी रहे है। जब पूरा सही बच्चा है—उसके आखें हैं तो

—आखें तो मेरे भी हैं तुम्हारे भी, कित्ती बार बताऊ। सही तो हम भी है। कही कोई खोट नही—तुम भी मुझ से डाक्टर नरस जैसी बान कहो बिना परचे परखे तुम्ह अपन उजाले की आन सच मुझे बिसास करा दो कि मरे दूध पूत को दीखे है। वो हम पर नही पडा।" निहारा एक सास म कह गई उसकी अधी बेनूर, आखा का पानी बूद-बूद करक उसके गला पर ढरकने लगा।

उसन अपने पास आन वाल सभी भीत हितु जाने—अजान सब से यही पूछा कि मेरे पूत का दीखे तो है ना? और सभी ने कहा उसे खूब दीखे है। वह लाड करनेवाले पर आख टिका कर हुमके है। उसकी आखो म भरपूर उजाला है। बेजू ने भी उसे ऐसा ही बिसास दिलाया। पर उसका अपना जी कैसे माने? उसे खुद को दीखे नही और नन्हा बेटा बोले नही।

उसन अकेले म उसके कान म पुकारा भी—' मर लाल तुझे ता दीस है ना सब अपनी मां का रग रख तो बता भला।" पर बोले मौन-जवाब कहा स आए। वेजू न उस सोच म यू घुलत जाना तो गुस्सा गया। फिर एक दिन उसका मान मन रखने को बोला—

' निहारो ! सुन, समझ मे पुकारू हू तर उजाले को—उसकी आखा क आगे चुटकी चटका कर। वो हाथ ऊच करे ता तू जान लेना उसे दाख है।' इतना कहकर वजू न अपन नन्ह बेट की आख-पलक का उपन पोर स छुआ और हाथ थाडा ऊपर कर चुटकी चटकाई होठ गोल कर सीटी बजाई फिर उस पर हाथ हिलाकर टोह ली तो पाया उसके हाथ हवा म ही डोल कर रह गए। बच्चे न न हाथ बढाए ना किलकारी मारी। बेजू बुझ कर रह गया। उसन फिर टिचकारी मारी—"टिच टिच टिच् लल्ल, उजाले दख तरी मा तुझे अपना-सा समझती है। झेल ले तो इसका हाथ बेट।' बेजू न पालने पर झुक कर कहा और निहारो का हाथ थामकर पालने मे पडे बालक के सीने पर तक ले गया कही कुछ नहीं। उसन निहारा क हाथो को फिर इधर-उधर किया तो वह नन्ही नन्हीं पच्या स जा लगा उस की छुअन महसूस कर बेजू बोला—ले ! अब ता हो गया ना भरोसा कि तरा उजाला उजाला है। वह आख के आगे आई चीज-मानुस का भान पडे है उसे

—तुम कहो हो वो मान लू—पर य उसके हाथ नही पड्या हैं। और पड्या तो यह वैस ही दिन भर मारता रहे है।

—अब, तू नही मान ता क्या बस किसी का। जब तेरा बेटा बडा हो, बोलने लगे तब उसी से पूछ लीजियो कि अधे-अधी का जना-जाया तू खुद अधा तो नही।' बेजू झल्ला उठा।

—अब यू झल्लाने कोसन से क्या बने है। खुद भी हलकान हो और मुझे भी टीसो ।' निहारो न होले से बेजू की उगुलियो के पौर छू लिए। एक दूसरे का छूकर मन से चाहने का आज तक यही सकेत रहा था उन दोनो के बीच एक दूसरे की—उगुलियो क पोर छूकर ही। उन्होने अधी आखो से उजले आकाश के रगो को बिजली की चमक को बरसात की धनक जो सूरज की किरन को, चाद की चादनी को दखा था जिया था।

पल दो एक व एक दूसरे के पौरा पर पौर रखे चुप रह। तभी निहारो परे होकर बोली—

—ना हा आखा के डाक्टर को दिखा दो इसे। मुने भरासा हो जाएगा। मैं अपने बेट की आखो के उजाले को छूकर सब पा जाऊगी

—वो ही सही, पर बडे डाक्टर की बडी फीस! डाक्टर हम अधी आखा वाला से उनके बच्चे की आखा मे रोशनी टोहन—जोहन का भला क्या ता लेगा थोडी चिरौरी कर लेगे ता कल सवेरे ही चलेंगे, ठीक ?

—वो सब सही, पर मैं बिना फीस दिए छू छा की राय डाक्टर से नही लूगी पूरी फीस देकर अलग म इसकी आखा की खूब पडताल करवा कर ही मानूगी, हा!

—फिर फीस के रुपय ?" देजू न परेशानी से पूछा।

—मैंन रुपये जुटा रखे है तुम कहोगे कैसी मा ह! डाक्टर न इसके जनम पर मेरे लिए, इसक लिए, जो दवाइया निखी थी, वो मैंने मगवाई ही नही यू हैं मेरे पास रुपये।' निहारो न हुनस कर कहा तो, वेनू की अधी आखे चौडा गइ।

× × ×

दूसरे दिन व दोनो, बच्चे के साथ आखा के बडे डाक्टर के कमरे क बाहर खडे थे, लाइन मे सब के आगे। दर तक बाट जाहने के बाद खास जूतो की चरमराहट के साथ स्टूल खिसका फिर 'क्रैंऽ' की आवाज़ के साथ दरवाजा खुला और बद हो गया।

—लो, आ गए डॉक्टर साहब, तुम्ह पुकारू तो भीतर हो लेना।" चपरामी ने कहा तभी घटी टनाई और चपरासी भीतर हो गया।

पल छिन छितरान के साथ ही निहारो मन का ऊब-डूब होन लगा। उसकी अधेरी आखो म रह रह कर घुप-चुप होन लगी। उसकी आखें कभी चौडा जाती—कभी पलक उघडे रह जान तो कभी ऊब-डूब पुतलियो को कपकपा कर ढाप लेते। चेहरे पर कभी तनाव रेखाओ मे भर जाता तो कभी आशका उसकी आखो के नीच छितराई कलछाई को और गहरा जाती। सीने मे धक धक और मन माथ म चक्कर उसे वक्ल बनाए हुए थे। तभी पुकार हुई— 'उजाले लाल।"

—हा-हा, निहारो, चल इधर का।" बेजू ने लकडी से टोहते हुए उसकी बाह को छूकर कहा।" पर, निहारो चुप, एक दम बेहिल।

—चल, भीतर हो ना आगे भी बढ, कहां अटक गयी।" बेजू ने उसकी बाह पकड ली।

—नही नही मुझे नही करवानी य जाच।" बेजू ने सुना और सकत म आ गया।

—क्यू ! क्या हो गया ? बौरा गई ! बेटा जनमा तभी से रट थी—'मरे बच्चे को दीखे भी है या नही ? और जब आख की जाच का टेम आया तो पीछे हो रही डॉक्टर के दरवाजे से मनाकर रही ?"

—तुम ठीक वाले हा पर अब जाच नही भगवान के लिए नहीं।" इतना कहकर वह पीछे मुडकर आग बढ गई।

—पर, क्यू नही, सवेरे से रट लगाय थी—'देर ना हो जाए बडा डॉक्टर मिलेगा भी या नही।" एकाएक तुझे हो क्या गया निहारो ! बेटे की दवा तोड के डाक्टर की फीस भरी और अब जाच करवाने से ही मुकर रही—हुआ क्या तो तुझे ? ' बेजू ने उसकी दोना बाह पिछाड कर पूछा।

—' बस जसा दिया है भगवान ने वसा ही रहन दो मेरे बच्चे को वडा होगा थोडा तो इसी से बूझ लगी सब।"

—पर डाक्टर से क्यू ना पूछ ले आखा का वडा और नामी डाक्टर सामने है।

—ऐ ही तो बिपद है। कही जाच पडताल करके डॉक्टर ने जो कह दिया की मेरा लाल हम तुम जैसा ही है उसकी आखो म उजास नही तो तो मैं उसे पालूगी-पासूगी कैसे ? जीने भर तक की सासत "इतना बोल कर निहारा न बच्चे को कोख सहजा-तोला और तेजी से आगे बढ गई। बेजू ठगा सा खडा रहा और डॉक्टर का कमरा पीछे छूट गया।

सास भइ कोयला

"रमली समझ नी पडे मजूरी भी कम नी पैसा भी बढती पले एक सडासी चवन्नी मे उठा देता अब सवा-डेढ रपे मे कम अटी मे नी बाधू उसके बदल पेले दो दो पैसे म छेनी के पान धर देता था अब दस दस पैसे ल प तेरी घर-गाडी नी खिच मुचस अव बोल पैसे टके मे वरक्त क्यू नी आज ?" रागू ने बुझती बीडी मे सास भरते हुए कहा ।

—नमक मे खार हो तो पसे म बरक्त होवे आज ।

—तो गया किधर नमक का खार !

—वो जने-आदमी मे आ गया ।

—नमक का खार आदमी मे ।

नी तो दखो नी आदमी का खार आदमी मे बजार हाट मे आग लगी है ।

—मरी भट्टी ठडी धरी है इधर और तू हाट-बजार मे आग लगा री ।

—मै बापुडी लगाऊगी आग ? वो भी हाट बजार मे दखो नी, आज तो एक कीला कोयले का पूरा एक रपा खुलवा लिया इस सिधी मुए ने हम बढाए मजूरी म एक चवन्नी ना गिराक के माथे सात सल चढें और बजार मे एक के दस ले ले बनिया तो कोई नी पूछे ! यू ही तो मर रिय हम हाड तोड मजूरी करवे भी ।

—जे ही तो अब देख, तू मैं दोना जुते रेवें दिन भर भट्टी मे भला जे तरे कोई दिन हैं घनवाई करन के ?" रमली ने सुना और अपने उभर पट को फटे आचल मे ढाप कर सिमट गई ।

—तो फेर करें कैस ? तुम ताता लोहा साधो—बनाओ और मै जो घन नी मारू, उस पे दनादन चोट नी पडे, तो लोहा ठडा नी हो जाये भला । ठडा हो जाये तो फिर कोयला फूको—और कोयला तो बाप के मोल

अइया र !" रागू न सुना और कोयले के खीरे छांटे आच की ओर सहेजे और रमली न घन का हत्था साधा।

× × ×

—जे ऊपर वाला भी ठाला दीखे, उसके पल्ले कोई ढग का काम नी जोरू जाता होता तो चलता उसे पता।

—अब राम भगवान को क्यू कोस रह कासो अपन भाग को।

—अरे ! अपना भाग तो भट्टी ह पेतू देख नी, जे बिन बात बरगत क्यू उडेल दी उस तरे भगवान न ? गूदड तप्पड तो ठीक पे जो थोड़ा चोकस ना होन, बाप र। कोयला सद गीला हो जाता तो ?

—वा सब ठीक प तुम सा भी कोई है दूजा ! रात भीग स भोर लग तक कोयले की बोरी कू यू सीने से लगाए गूदड स ढापे रह, उस जसे लाय हो कोई नवली-नखराली सोला साल की ! कहन को वह गई रमला फिर लजा कर खुद ही आखें चुका ली उसन।

—तुगे सूझे है जे सब रग रसिया अर बाल, जो बरखा से कायला भीग जाता तो होती तडक भट्टी गरम ?

—देह ठडी हो जाए तो हो जाए प भट्टी तो गरम होनी ही है ! दखा हो कैसी चल रही है नाक कायल को ढापा ओढाया सहजा पर अपना सरीर सास कलेजे म रात ठाड बठ जाती तो !

—अरे ! तो कौन आकाश टूट जाता रागू नी तो कोई फागू लुहार बना देता चिमटा सडासी

—वो तो ठीक पर मैं मरा बचवा आगे

—छोड भी अब साचने विचारन वाला जल्दी मरे—ले उठ अब, सुलगा कोयला चेता भट्टी।

—वो चाऽ मनका नी मानन का।

'वो मैं लाया लकडी सब तर गना हो गई। भट्टी पर हा धर चाऽ का पानी मैं लाया चा दूध।' राग बाला और जमन का गिलास लकर खडा हो गया।

× × ×

'मायड ! भूख अब तो सेक दे राटी।' मनका बिलबिलाया और

रमली के आचल को बल देन लगा।

—बचवा ! आटा तो सान रखा है, और दख गोभी के ठूठ भी काट धर हैं। वस इस सब्बल के मान धर दू फिर मै सुस्ताऊ और जे रोटी वाटी सेक दगी अब्भी इमी आग-अगार प। रागू ने हिरसाये मनकू को ढाढस दी। एक हाथ से सब्बल को एरन पर साधे और दूसरे हाथ मे हथोडे की चाट मारता हुआ वह फिर उमगा—

—हा, लगे तनी लगके दवक क तज लपक के, ठडी हुई जे तो, जरा दौड के हा हा हू हू द द और रमली रागू की हाक म जुत कर तात लाह पर यू घन बरसा रही थी जैसे कोई नचनी तान पर नाच रही हा—बिना रुके, एक मास म, दनादन मार करती उसकी छाती की धाकनी मे अब साम बजान लगी थी—हा्ऽ हू हाऽ हू। मिसियाई अगिया म असी छाती छूट कर घन की धमक के साथ डोल डुलकर उसे और भी थका रही थी। पर रागू था कि सब्बल पर एक ही ताव म सान दने की होस मे जुटा उमगे चला जा रहा था—धे धें द द और लपक के दे द तभी घन की पकड ढीली हुई और रमली ने उसे भू पर टिका पर ठेल दिया। फिर धम्म से जहा की तहा बैठ गई—हापती कापती—पसीने मे तर, नाक मुह से सास साधनी-बाधती।

—किते कम कोयले मे नन धरवा दी सान इस सब्बल प बीच मे सास जो तोड देती ता उस फिर से ताता राता करना पडता और फुक जाता अजुरी भर कोयला और लेऽ अब तू डाल दे रोटी बाटी और अगारो पे हडिया भी धर छाक द। तब तक मैं बीडी पानी कर आऊ, फिर आगे दखेंगे, इतना बोल रागू घुटना पर हाथ दे धोती झाडता उठ खडा हुआ।

—विराम कर थाडी दर बाद ठिये पर लौटा तो सुना—जे क्या ! कच्चे के कच्चे टिक्कड। मनका खिजा खिसियाना बोला था—हा बप्पा भालो, जे गोभी-गट्टा भी सब कच्चा कट इतना कहकर उसन गस्सा थूक दिया।

—बप्पा-पूत को कच्चा पक्का सूझे। साँस के मोल कोयला मिले जे कौन जाने !" रमली कडुआई फिर सिता कर बोली—"अब की खा लियो, साझ तक लकडी सूख-साख जाएगी तो खरा सेक—पका दूगी। टोह कर,

गिनती के कोयले पडे हैं बाजू मे और अभी राज मिस्त्री की छेनिया के सान धरनी है।" रागू पहले गरम होने को था, पर जब 'सास के माल कोयला' सुना तो चुप कर गया।

× × ×

—लोऽ सुनो इधर हमने कोयला बचान की जुगत जोडी तो उधर कोयले का भाव और बढा दिया उस सिंधी सगे ने।

—रुपे किलो तो दता ही था अब ?

—अब किलो का रुपे ऊपर बीस पैसे मागे है।

—तो फेर हम भी रेट बढा देंग।

—रेट बढा देंगे ! तुम एकल हो इधर लोहा कूटने वाले ?

—अरे ता और जो हैं, वो भी तो दूजे नही, माथा जोड के बठेंगे सब और इक साथ बढा देंगे रेट। आखिर सबा को तो कोयला महगा ही लाना पडेगा अब।

—वा तो ठीक सब अपने हैं पराया कौन सब मान जाएग रेट बढान को पे अब कोई गाहक आया के टूट पडेंगे सब उस पे और जो वो दगा चुपचाप लेके बैठ जायेंगे। खबर नी पडन की क्या लिया और क्या दिया।

—मैं ता साचू जे तू मैं इसे ढव लग के एक ही ताप मे ललछौंह हुए लोह को तावड तोड कूट-पीट के काम साध लें ता दिन भर म रुपे बिरोबर कोयला तो बचा ही लेंगे तीन एक महीन ता बाकी होंगे ही अब्बी ?' रागू न टोह लेते हुए कहा।

—वो तो है ही पखवारा और बत्ती समझो।

—तो उस हिसाब स जो इस ढब जुटे ता होती कमाई ऊपर सौ रुपे और जुड जाएग ?

—तो तब पूरे दिन पे भी मैं तुम्हारा घन ही उठाती-उडाती खडी मुडी रहूगी मैं बनेगा वो सब तब दो जीव पूरे दिनो पे ?

—वो नी बोल, सोचू अबकी बालक-टाबर उधर जच्चा घर म ही होवे तो तुझे तनि जच-आराम मिले।

—*क्यू इदर बदल गया कुछ कोई ?*

—वो नी, कपाल तोड घाम-लू ऊपर कभी अधड-पानी चढे-दौडे है

इधर फिर जे अपनी जखमी-जरजर झुग्गी भी तब तक दम तोड दे तो अजब नी। बास कैंची पे तन टिके टाट टिकेंगे तब के हवा हर्राटे म।

—वो तो नवा कुछ भी नी, पे इस वेर कोई राजकुअर आने को हैं जो उधर अस्पताल जच्चा घर की सोची।

"राजा को राजकुअर प्यारा मुझे मेरी रमली का जाया दुलारा, क्यू नी, बोलडी" कहकर उसने अपनी छुटक अगुली स रमली की ठुडडी पर उगे धुआए तिल को सहला दिया।

—जो तुम जानो, मेरे हिये मे तो अमरा भोजी की बात जमी, बोले थी—उधर पानी-पाल के बाए बाजू सब वेघर गरीब गुरबा, मजूर हम्माल राज की जमीन जगाह हथिया कच्ची बस्ती बना बस रहे। हम भी कच्ची बस्ती के अगुआ गबरू पहलवान को सौ-पचास थमा बित्ता भर जमीन पर क्यू नी खडी कर ले अपनी टपरी झुग्गी।

—तुम लुगाइया का खूब चले है भेजा। माना अपने भाग कहा अपना घर झुग्गी!

—भाग मे तो ठडे लोहे को ताता राता कर पीटना बदा ही है, फेर भी कुछ बदले बने तो बुरा है?

—बुरा! वो नी, वे बेरी जमाना है, बुरे लोग है मैं और तू है।

—हम तुम भला क्यू किधर से बुरे? मेनत-मजूरी करें कोई चोरी-चकारी करें कम तोलें व भाव बोलें लेवे किसी से कुछ, जो बुरे!

—चल वो ठीक तू भोत अच्छी मेरी रामकली—रमली बडी मीठी तनि चखू तो वह हुलास भरा बोला और सरककर उससे सट गया तो वह परे होती बोली—

—जगत् के सामने चाटोगे-चखोगे मुचे यू ही, तो बोलू एक टापरी सिर पे होव तो हिय जिये का कुछ करे—बैठें, जे भला क्या अध ढपे-उघडे पडे है लोह भट्टी की भात, चौपट। इतना कह रमली अपने आपे को सहेज उससे परे हो गई।

× × ×

लोहा-कूट-कमाई मे दो जून मोटा झोटा खाना भर निकलता था। बचत की तो बात ही भला क्या। रामली के हिये जिये मे कच्ची बस्ती म

बसन की बात ऐसी बैठी कि वह जैसे-तैसे पेट की भूख को टाल फुसलाकर राज साच को कुछ न-कुछ पल्ले बाधने पर तुल गई। उसका घरवाला रागू नशे पत्ते से परे कमर-कस-कमाऊ था बस दो रोटी का भूखा-नजर भर नेह का प्यासा। उसे पाकर रमली निहाल थी। औरा के मरदुओ को दखती और सोचती 'उसका आदमी' सोना है, प लोहा कूटता है, ता क्या जो आता है सभी वह सहजे है। उसे तो बीडी तमाकू क पैस भी नो दवै। अब जो सहजना-बचत करना-जोडना है तो वो रमली ही करेगी ना? वा क्या तो करेगा—कमाई मरद का भाग लुगाई का अपने भाग को बदलेगी वो, रागू की लुगाई तो वा है ही अब उसकी घरवाली बनगी 'घरवाली' पे घर' हो तो ना? 'घर' अब होगा। होके रहगा अब घर' उसका। रमली न ऐसा और ऐसा और भी कुछ सोचा रात दिन तब फिर अमरो भाजी का साथ ले पहलवान म बात भी पक्की कर ली। अब वह थी और थी खरच की कतर-ब्योत पर कतर-कमी किसम होती। आता ही क्या था? ल द कर रोटी बाटी दाल आलू और नद डूबे इतना तैल-लून। इनम से क्या कतर कर बचाये? अब उसने बस कायला बचान की ठानी और जुत गई भट्टी के आग।

इधर ताते लाल सरिय को एरिन पर रागू ने धरा नही कि रामली ने दनादन घन बरसाय नही, कभी-कभी तो वह यू घन बरसाती कि रागू को सडासी साधना कठिन हो जाता उमकी लाग चाल को यू बिजली की कडक-कौंध की ढब मे दखा तो रागू ने उसे बरजा भी पर भला वह कब मानने वाली थी?

छाती की धौंकनी की धमक कम होती। तब रागू की बात का तोड दकर रमली कहती—'कोयले का भाव आकाश चढा है, सुना कभी पे आलू सस्ता और कोयला महगा यू आने चार आन की मजूरी पे कोयला फूकत रह तो भर लिया पेट और पाल लिए पून मरे खरच भी घढे आवे है। अब तो थी कोई कोर कसर बे कलेजे म मेरे जे बुलबुलाहट और भर गई बरजा था मैंने 'बे' लाओ यू करो पे आदमी माने भी।" इतना कहकर उसने जान फँसी आवा से रागू को दखा कि वह बोला—

—अब जो तू इतजाम दे कम, बस गरज मरद की होवे लुगाई तो बस बापुडी

—हा, हा लुगाई तो चीज-बसत ठहरी—पे छोडो अब, लो हो गया वो सरिया ताता साधा भी उसे बेफालतू कोयला क्यू फूको ? वह घन सभाल कर खडी हुई। रागू न उगते सूरज के पिंड स ताने लोह को सडासी से साध एरन पर रखा और रमली न उसे मन चाहा रूप दन के लिए घन की जो मार मारना शुरू किया तो धाय धाय मचा दी।

—तनि रुक भी, कोयला बचाने हत कलेजा फाड बठेगी अपना, डील सभाल अपना जे क्या भूतनी की भात धमाधम घन उडान मे जुटी है तू। रागू ताता हाकर चेंटा। रमली थमी। उसन बालन क लिए मुह खोला पर बोल तो नही फूटे बुक्का भर सास भरभरा गई।

× × ×

पखवारे भर की उस सास मार धासू मजूरी न रमली को हडडी उघाड दी। कटोरी से मुह पर छोटी टुचक छैनी-सी नाक निकल आई, आखो की पुतलियो पर पसीना ढरक आया, छातिया लथडा गइ पीठ मे झटके का झुकाव भर गया और पिंडलियो मे छूजन दौड गई। ज्या-ज्या दिन चढते गए। पेट तो फूलता फैलता गया पर दूजे अग दुखने सूखन लगे, उसे यू सूखती-सुलती दख रागू झुझला कर बोला—

—देखू, अपनी काया-कलेजे को फूक कितना सहेजा मेरी समझू बन्ना ने ?

—नी बचाया-बाधा कुछ भी ता अजूबा पाल रही म ! बिरादरी मे अपने मरद के साथ लुगाई काम नी करे भला !

—हा हा, काम तो लुगाई करैं मरद के सग ये तरी तौर ये काई भूतनी बन कोई धमाधम घन नी गरजावे-बरसावे कोई लुगाई फिर ऐसे म जब दो जीव से है तू।

—जीव जुडे बढें तो उसके वास्ते भी कुछ जोडना जुटाना पडे या फेर बस जो है सो धके ?

—अरे ! समझदार की सडासी ! वो मेरे पे छोड। आगे से तू परे हट भट्टी से हत्या देगी मेरे कू ?

—तो फेर घनवाई कौन करने आवेगा मेरा वीरा ?

—तेरे बीरा बाबल का टेहलवा मैं नी वो छोड सब तुझे सोच ? वो

मैं सब निपट लूगा अकेला।

—सहासी से ताता लोहा एरन प साध भी लोगे घन भी चला ल दखा नी काई बजरगबली ऐसा तुम मे बैठा हो और फिर कोय कित्ता फुकेगा यू ?

—बसऽ अब चप्पर-चू बद कर नी तो मूडी गरम कर दूगा तरी समझी कोयले की महतारी। रागू अब ताव खा गया। र समझा उसका हेत और सिता गई। फिर आखो म अनुहार और व मनुहार भर बोली—

—लो तनि गिना तो भला, कित्ते हुए। इतना कहकर उसने अगिया म उरसी नन्ही सी पोटली निकाल उसक सामने फला दी।

—ना नही गिनती मुझे तरी सासा की सलवटें।' रागू ने कह अपनी पलको पर तुल आय बाझ का छिपान के लिए मुह फेर लिया

—अब ला भी। गिन भी दो मुझे आती गिनती तो भला मैं निहारे तुम्हार। रमली न हालि स ठुनकत हुए बोल मारे और उसे वहा से गुदगुदा दिया—चुप चुप इधर-उधर लख कर।

—बात करना तू जाने। धधकत कायलो के पतगो चिनगो क लेने वाली रमली पैस रुपे की गिनती नी जाने ? सच बता, कित्ते हुए घुला होकर रागू न पूछा।

—दो बीसी ऊपर पाच हैं पाच और कर लेट, दो पूरे पच जावेंगे फिर बस तुम जानो आगे और तुम्हारी कमाई कहीं झेला दूगी।

—कैसो तो कपाल खाऊ लुगाई है, अपन हिय जिये का होस न डील देखा है अपना ? कही फूक निकल गइ तो नीचा दिखायगी मुझे गिरासियो मे।

—मैं और तुम्हे नीचा दिखाऊ ! अरे मैंने तो 'अपन' की पाग ही ऊची रखने की ठानी है। बस वो ठिकेदार का मुनीम जा इक्टठे सौ छेनिया दे गया है उनको सान' धरने भर की मजूरी और क दो। चार पाच किलो कम कोयले म भी काम सर गया तो पूरे प रुपे—आधा सौ यहा अटी मे होगे, फिर देखो मेरे का हुआ क्या है

तुम राजसाही लगा रह,—बचव के टेम नी चलाया था मैंने घन।

—वो सब ठीक पे काम की रीत से काम होवे—भाई बोलती थी क दा जी से हाव लुगाई थाडी भात मजूरी मे सन ठीक, रहे। ये तू तो घन ताड रही।

—लुगाई-टावर मे तुम समझो के वो बडेरी मा फेर भी अब सनि सँभाल क उठाऊगी घन जैसा भी तुम बोलोगे।"

× × ×

उधर आकाश के एरन पर ताता-राता सूरज चमका और इधर रमली न बलती बोलती लालछन छेनी को सान दन के लिए घबकना-धीमना लगाया। रागू पलटता कि घन तडता और छनी का सिरा फैलकर चौडा जाता। उसन उसे पलटा कि धम्म् की करारी चाट पडी तीसरी चोट म पहली फेट और चौथी पाचवी चाट मे दूसरी फेट फिर पानी मे छबक-छम्म फिर दूसरी छेनी फिर वही लाग लगी मार रमली की जैसे मार क बडे ओल पड रह हो।

सूरज की ललछाही पीलियान लगी थी पर छेनियो के सिरा का सूरज एकदम ताता और राता था। रमली की घनघोर घनवाई को दखकर रागू सहमा। उसने 'रुक' उचार कर बरजा पर वह 'हू की फूत्कार करक जता गई कि वधी सास की लाग को बीच मे तोडना ठीक नहा। रुकू-ढबू तो उठे घन मे जुती रमली की सास फालतू होती है।" यह सोच कर ही रागू न जगली छेनी अगारो स उठाकर फिर एरन पर धर सडासी से साध ली। और दसरे हाथ स उस पर खुद भी हथौडे की चाट मारन लगा। सही सोचकर कि, इसक बाद रमली रुक जायगी—दम लगी। उसने कहा भी कि तून जे ही ठानी है तो चल मैं घनवाई करू, तू सडासी हथोडा सभाल। पर उसने फिर वही हू' की हूकार भरी उसे एरन की चमक सतह पर कोयले वाले सिंधी का सूरत उभरती दीखी और वह घनबाई मे जीवट से जुती रही उस सूरत को पीटती हुई। रागू ने उसकी बेरोक सास को जो बेढब रीत से फूलन धुकधुकी बधत देखा तो उसे फिर कडक कर बरजा और तपी हुई छेनी को एरन से हटाकर पानी म गेर दिया। यह सोचकर कि रामली अब तो थम ही जायगी। पर रामली

ने थमना-रुकना कब धारा था ! सासो के धक्के से उठा उसका घन पूरे बल और वेग से खाली एरन पर जो पडा तो कहा सभल पाया, वह एरन की चमकदार सतह से फिसल कर यू बेडोल हुआ कि रमली का ही डोल सतुलन बिगड गया और वह खडे पैरो पर ही धसक कर ढुल गई। उसकी छाती की धौकनी मे सास नहीं समा रही थी। तिरसाई चिडिया की ढब म उसका मुह खुला था, नथुने फूल गये थे और आखो म पथरीलापन पैठ गया था। उसका लहगा-लूगडा लाल झक हो भीग भीग गये थे। कलसाई देह की लोथ सास की आच से पिघल कर धूल-माटी मे आसी थी, रागू ने लिथडी लोथ का हाथों म सहेजा—पर रमली की देह अब कायला और सास ठडी होकर राख हो चली थी। उधर आकाश म ऊपर चढी सूरज की लोथ भी पीली पडकर हांपती हुई लबी सासें भर रही थी।

सूली पर सिन्दूर

नन्ही चन्दनिया हथेली पर रची मेंहदी की महक, चाँद से उजले मासूम माथे पर चमचमाता मोती जड़ा टीका और दूधिया माँग में हँसता गहरा सिंदूर। वह गुड़ियों-सी दुल्हन अपने से जरा ऊपर निकलते दूल्हे के गुलाबी चीर से बंधी जब ससुराल की देहरी पार कर गयी तो, उसे लगा जैसे खेल-खेल में वह अचानक ही किसी अनजाने घर में आन खड़ी है।

अपनी बड़ी-बड़ी सहमी कजराई आँखों से चारों छोर के पसार को परखने के लिए जो पलक तिरछे किए पास घिरी कुंवारियों ने उसे टोहका दिया और खिलखिलाते बोल मारे—अरी ! क्या परचे-परखे ससुराल है ये तेरी अब यहीं रहना-बसना है तुझे वो सामने खिल्लाड़ कन्हैया जो लट्टू घुमा रहा उसी के संग रमना खेलना है और और आगे उसके ही बालक टाबरों को अपना दूध पिलाना है बोल पूरे होने के साथ ही दीवार धुजाने वाले ठहाकों के बीच और तो कुछ वह समझ नहीं पायी पर 'दूध पिलाने वाली' उसे लाल आंचल में छुई मुई बना पानी-पानी कर गई।

बापू माई का घर छोड़े पखवाड़ा टल गया तो उसी पलक दर्पी नीर-नहायी पुतलियों में अपने बीरा-बहना के चेहरे चमकने लगे। उनके साथ रचाए गए मनुहार-अनुहार के खेलों को याद कर वह गुमसुम रहने लगी। ससुराल के ओटले नन्ही पेंजनिया झनकाती जब वह आंगन बुहारती तभी उस सामने वाले नीम के नीचे 'उसका कन्हैया' कंचे उड़ाता दीखता। थोड़ा ठिठक इधर उधर देख भाल कर जब वह सासजी के हाथों टोंडी तक ढरकाय सर के पल्लू को आध पलक से परे कर वह 'अपने' का खेल देखती और मन-ही मन मनाने लगती कि वह जीत जाए—कई बार तो उसका मन करता कि उसकी तरफ से वह उसकी हार का दण्ड भर दे पर ।

और य बिन बोले बिन परसे एक मीठा आकर्षण उसके उस खिलवाड़

कन्हैया से जोड लिया और भीतर ही भीतर पुलक उठी, उसे अपना सगा सलोना बना कर। दहक थी तो इतनी कि जिसे उसने अपना जान मानकर अपने आस बिसासकी अजुरी म मन से साध-सहजा था, उसे ता मान गुमान ही नही था कि 'कोई' क्या कुछ सजो रहा उसके लिए। उस साझ तो बडा दु ख लगा उसे जब उसने देखा कि उसका 'वो' कबडडी मे गच्चा खा अपने घुटने कुहनी फोड बैठा। उसके लहू को धूल म सना देख उसका मन क्या से क्या होने लगा। और वह बावली बन आगन पार देहरी लाघने वाली थी कि सासजी ने बरज दिया। वह थम गयी, जहा की तहा, चौखट पर कपाट का पल्ला थाम।

और आज भी वह जम की तम खडी है। बरस बिलमा गए—आठ बरस का भोला बालपन बीत गया और वह सोलह साल का सलोना समझू तन मन लिए—आगन पर देहरी पर कपाट थामे खडी है। बस फर्क है तो इतना कि तब ससुराल की देहरी-द्वार था और आज पीहर का घर बार है।

उसके दखत सहेलिया अपने ससुराल गयी—और आयी। उनक गौने हुए—फिर गयी और आयी—आचल मे दूध और गोद म आस लिए। पर वह ससुराल से जा पीहर आयी तो गयी कब? पीहर म ही ठहर ठुक कर रह गयी।

अपनी सगी-सहेली के गोल गुलाबी ललन के रेशमी घुघराले बालो से खेलते खेलत उसके हिये मे जाने कैसी हूक उठी कि उसकी आखो मे अधेरा और माथे म चक्कर भर गए। उसने पलक उघाडे और एक बौराये-उछाह के साथ ललन को हवा मे उछाल उछालकर चूमन लगी। सहेली न उसका यह बावलापन देखा तो आखें तरेर अपन ललन को उससे झपट कर सीने से लगा लिया। फिर तो उसन ललने के लिए वह छीन-झपट मचाई कि सहेली का वहा से भागना ही पड़ा। उस पर भी वह कहा रुकी? मेरा बच्चा है मेरा ललना है की रट क साथ वह उसके पीछ लपकी।

बापू-अम्मा ने ब्याही बेटी के ये लच्छन देखे तो उनका माथा ठनका। कुल-लाज के विचार से बिधकर उसक ससुराल सदेस पठाये कि समधी अब तो गौना करवायें। जवाब म उलटी मार पडी। जवाब आया—'तुम्हारे

जमाई राज तो बम्बई भाग दौडे—बिना कुछ कह बताये। उनका कोई अता-पता नही हमे। खोज खबर मे हम जुटे है। पता लगत ही शुभ लिखेंगे।"

उनका पता लगने से पहले ही उसे यह पता लग गया कि उसके 'वो' लापता हैं। बस फिर क्या था उसने वह ठहाका लगाया कि मुडेर पर बैठा कौआ सहमकर उड भागा और उसके पगलाने-बौराने का सदेसा इस गाव से उस गाव जा सुनाया।

× × ×

आज उसे सवारा सजाया गया। उसकी गदराई गोरी हथेलिया पर फिर मेहदी खिली थी। कपोला की लाली, आखो के कजरे से होड लेती घूघट मे दिप दिपा रही थी। उजले ऊचे माथे पर टिकला झमक झूल रहा था। माग म मुसकाता सिन्दूर सुहाग के गीतो की लय पर तैरता हवाओ को रग रहा था।

आज उसके 'वो' उसे लिवाने आये थे। कैस तो नवल रसिया बने खडे थे। जसे मुखडे पर जागी जवानी की गहरी मसे उनके आपे-ओप को कसा तो मोहक बना रही थी। गाती हुई सहेलिया उन्ह गीता का राजा बतला रही थी। फिल्मी गीत लिखने ही तो 'व' बम्बई गए थ। सुथरी चप्पला म रूपे मुघड पस स जब उसके नयन लगे तो, लगे ही रह गए। और फिर एकाएक घूघट हटा कर वह खिलखिलाई तो हसी मे डूबे बोल से हवाए काप गयी सहेलिया कुतिया काटती थी तेरे कन्हैया तो मथुरा चले गए' तुझे बिसार रम गए कुब्जा सग हा ऽ हाऽ

सब दख समझ के 'वो' सक्ते मे आ गए। सभले ता समझ वेरिन ने उसे उनसे अनजाना-बेगाना बना दिया। 'वो' उसे बीमार-बौराई बता जसे आए थे वस चले गए अकेले तो फिर कब लौटे?

× × ×

उसी के सग व्याही भौजी के जायो के हाथा रूपे आम बौरा कर फल गए। बालपन म उगाया पीपल ऊपर गोखडे स जा लगा और सहेली का वह ललना छज्जे से उसे 'पगली मामी' कहता हुआ भाग दौडा। तब भी उसके वो' नहीं आए। वस बीच मे दो बन्द लिफाफे आए। एक उसके

भैया के नाम—जिसमें नाता तोडने-छोडने के सदेशे-समाचार थे और दूजा उसने खुद के लिए था जिसमें एक मुडा कागज धरा था कोरा कागज कलम रेख से उछला एकदम कोरा कागज। उसने उसे छाती की धुक-धुकी से लगा कई-कई बार तो आसुओं से या और फिर उस पर काजल-सुरमे की सलाई से बेडौल रखाए डालकर बौराई हिरनी माड दी।

आज कल का सासा लगा तो कागज मैला हो गया और काजल की हिरनी सावला कर न जाने कहा भटक गयी। उनका पठाया कागज फिर कोरा कागज बना उसके पास रह गया। और यू जुग बीत गया। उस बाबुल के घर उतनी उम्र और निकल गयी जितनी उम्र म उसने दुल्हिन बनने का स्वाग रचा था।

दो बीसी बरसो मे बीती रीती काया कुम्हला-कुम्हला गई। "उगते डूबते सूरज का फेर' उसके चेहरे मोहरे को धुधला कर अनछुई झुर्रियो से भर गया। बाला की चादी मन को पथरा कर समझ को आर पगला गई।

× × ×

आज 'वो' नही पर 'उनका' बुलावा आया है, और उसे जाना है 'उनके' पास—ससुराजी के गाव सासजी की देहरी। अब वहा उनमे से काई भी नही। 'वो अकेले हैं—बीमार और बेबस। ऐसे म याद किया है 'उन्होंने' उसे, अपनी सतफेरी सुहागन बताकर।

भौजी की बहुओ और छोटी बहना की बेटिया न धीरज बधा उस आज फिर झाड पाछ कर सवारा है। मुरझाई-मरी हथेलिया म महावर बखेरा है। माग की सफेदी म सिंदूर उडेला है। और नीर डूबे नयना को काजल की मार देकर जिलाया है। गौन की बेला लाए गए कोरे जोडे म उसने कलसाई कलाइयो मे चूडिया की हरियाली जगाई है। और उसे गाव के छोर पर खडी बस मे ला बिठाया है। बिन बात बुढाई बुआ मौसी को हसते आसू और रोती हसी के साथ विदाकर सब लौट गए।

× × ×

ससुराल की धरती पर पग माडते ही उसका आपा काप गया। गाव वाला की घूरती आखें उसके आचल को भेद रही थी। बूढल गौना बूढी दुल्हनिया के मारक बोल देहरी द्वार तक उसका पीछा करते रहे।

आगन लाघ औसारे मे हुई तो दम तोड खासी की खो खो ने उसे आवाज दी । आचल समेट खटिया से लगे पगो मे माथा डाल वह कच्चे-उखडे आगन म बठ गयी ।

"आ गइ तुम साथ का आदमी टला तो बीमार वेदम बोल सुने । जब तुम बौराई थी मैं स्याना और चतुर था आज मैं बौराया और बीमार हू कही तुम स्यानापन मत धार लेना मै तुम्हें आज वैसी ही बौराई-बावली अपनाना चाहता हू मैंने तुम्ह दरसा-परसा नही आज तुम्हें मैं छूना पाना चाहता हू खासी मे डूबे टूटे-टूटे बोल आए । तभी क्वाल कापा और होले से हाथ हिला अपने पास बुलाया ।

उसकी मती जागी और वह सरक कर उनके आगे हो गयी । खटिया पर झूलती उनकी ठडी हथेलियो से अपना चेहरा ढाप फफक उठी । तभी उनके हाथो मे हरकत हुई और उन्होने उसके चेहरे को छून परसने की ढब म हाथ यू डुलाया कि उसके माथे की बिंदिया ढरक कर नीचे गिर गई—माग का सिंदूर पुछ गया । फडफडाहट हुई । उसे लगा हस उड चले । तभी उसन अपने सीने से लगे उनके पठाये कोरे कागज को निकाला और उनके वेदम हाथो मे धर दिया । उस पर रची हरनिया कहीबिलमा गयी थी दूर बहुत दूर

भैया के नाम---जिसमे नाता तोडने छोडने के सदेशे-समाचार थे और दूजा उसके खुद के लिए था जिसमे एक मुडा कागज धरा था कोरा कागज कलम रख से उछला एकदम कोरा कागज। उसने उसे छाती की धुक-धुकी से लगा कई-कई बार तो आसुओ स या और फिर उस पर काजल-सुरमे की सलाई से बेडोल रेखाए डालकर बौराई हिरनी माड दी।

आज कल का सासा लगा तो कागज मैला हो गया और काजल की हिरनी सावला कर न जान कहा भटक गयी। उनका पठाया कागज फिर कोरा कागज बना उसके पास रह गया। और यू जुग बीत गया। उस बाबुल के घर उतनी उम्र और निकल गयी जितनी उम्र मे उसने दुल्हिन बनने का स्वाग रचा था।

दो बीसी बरसा म बीती रीती काया कुम्हला-कुम्हला गई। "उगते डूबत सूरज का फेर उसके चहरे-मोहरे का धुधला कर अनछुई झुरियो से भर गया। बालो की चादी मन को पथरा कर समझ का और पगला गई।

× × ×

आज 'वो' नही पर 'उनका' बुलावा आया है, और उसे जाना है 'उनके' पास---ससुराजी के गाव, सासजी की देहरी। अब वहा उनमे से कोई भी नही। 'वो' अकेले हैं---बीमार और बेबस। ऐसे म याद किया है 'उन्होने' उसे, अपनी सतफेरी सुहागन बताकर।

भौजी की बहुओ और छोटी बहना की बेटियो ने धीरज बधा उसे आज फिर झाड पोछ कर सवारा है। मुरझाई मरी हथेलिया म महावर बखेरा है। माग की सफेदी म सिंदूर उडेला है। और नीर डूब नयना को काजल की धार दकर जिलाया है। गौन की बेला लाए गए कोरे जोडे मे उसने कलसाई कलाइयो मे चूडियो की हरियाली जगाई है। और उसे गाव के छोर पर खडी बस मे ला बिठाया है। बिन बात बुढाई-बुआ मौसी को हसते आसू और रोती हसी के साथ विदाकर सब लौट गए।

× × ×

ससुराल की धरती पर पग माडते ही उसका आपा काप गया। गाव वाला की घूरती आँखें उसके आचल को भेद रही थी। बुढल गौना बूढी दुल्हनिया के मारक बोल देहरी द्वार तक उसका पीछा करत रहे।

आगन साथ औसारे म हुई तो दम तोड खासी की खो-खो ने उसे आवाज दी । आचल समेट खटिया से लगे पगा म माथा डाल वह कच्चे-उजडे आगन म बैठ गयी ।

"आ गई तुम गाव का आदमी टला तो बीमार वेदम बोल सुने । जब तुम बौराई थी मैं स्याना और चतुर था आज मैं बौराया और बीमार हू यही तुम स्यानापन मत धार लेना मैं तुम्हें आज वैसी ही बौराई-बावली अपनाना चाहता हू मैंने तुम्ह दरसा-परसा नहीं आज तुम्हें मैं छूना पाना चाहता हू खासी म डूबे टूट-टूटे बोल आए । तभी कपाल कापा और होने से हाथ हिला अपने पास बुलाया ।

उसकी मती जागी और वह 'रस' कर उनके आगे हो गयी । खटिया पर झूलती उनकी ठडी हथेलियो म अपना चेहरा ढाप कपकप उठी । तभी उनक हाथो मे हरकत हुई और उन्होंने उसके चेहरे को छूने परसने की ढब मे हाथ यू डुलाया कि उसरे माथ की बिन्दिया ढरक कर नीचे गिर गई— माग का सिंदूर पुछ गया । फडफडाहट हुई । उसे लगा हस उड चले । तभी उसने अपने सीने से लगे उनके पठाय कारे कागज को निकाला और उनके वेदम हाथा म धर दिया । उस पर रची हरनिया कहीबिलमा गयी थी दूर बहुत दूर

रण-राग

प्रतिशोध प्रतिशोध प्रतिशोध युद्ध युद्ध ववावद अधिपति हल्लू होलनाक ढव म हथेली पर घात मारता हुआ डोल रहा था। उसके पगो की धमक से सभासदा के आसन हिल उठे थे। घनी एव विस्तीण धवल भवो को छूती उसकी इकीली मूछें आखा मे उभरे लाल डोरा को गहरा रही थी। वाधक्य न उसके ऊचे पूरे डील डौल म तनिक ढलाव ला दिया था फिर भी हाथी दात-सी सुडौल ग्रीवा पर सधा उसका विशाल मस्तक विराट मदिर पर चढे भव्य कलश की भाति वीरत्व के ओज से दमक रहा था।

वह एकाएक ही धमाके क साथ थमा और फिर गरजा, " प्रतिशोध प्रतिशोध युद्ध युद्ध जस कोई पवत निझर हुहड हुहड हुहड के साथ शिखर भेद कर फटा हो। वह अपमान की आग म फुक रहा था। उसके सीने म प्रतिशोध का ज्वालामुखी धधक उठा। उसके सगी-साथी वीर भी परिहारा के प्रति वैरभाव से विदग्ध थे। परिहारा न न कवल हल्लू का वरन समस्त हाडा क्षत्रिया का जो अपमान किया था उसकी मिसाल इति हास म न थी। हल्लू न स्वप्न म भी इस बात की कल्पना न की थी कि क्षात्र धर्मानुमोदित उसका रण मरण-व्रत इतना बडा गुल खिलाएगा और उसकी पगडी यू उछाली जाएगी।

"हाडा वीरो ! जा हाथिया का अपन हत्थड मे धराशाई कर दे, अपनी खड्ग की धार मे वरिया के बेडे डुबा द शीश कट जान पर रण-क्षेत्र म जो खडा रहता वही वडा वीर है। वडा वीर वह नहीं जो कमर म बडी तलवार बाधे डोलता है," हल्लू एक सास म कह गया। बडी तलवार की बात सुनते ही रोपेल की देह झनझना उठी। उसकी तलवार सबसे बडी जो थी। उसका हाथ तलवार की मूठ पर जा गिरा और उसकी पकड

कसती चली गई। यहा तक कि उसकी मुटठी से पसीना झरने लगा। उसे अपने बडे भाई का कथन व्यग्य-सा लगा, किंतु वह शात रहा।

"मुझे अपने सस्कारी वीरा के बाहुबल पर पूण विश्वास है। हम आज से ठीक तीन दिन बाद मडोवर पर धावा बोलेग । हल्लू थमा और फिर बोला—"यह भिन्न प्रकृति का युद्ध है—अतएव इस युद्ध म बवावद के सभी वीरा को मैं उलझाना नही चाहूगा मैंने रण मरण याचना के साथ युद्ध की आन फिरवाई थी—अतएव मर साथ व ही वीर प्रस्थान करे जो स्वय रण मरण की इच्छा रखत हो। शेष पाटवी राजकुमार चद्रराज को राजतिलक कर बवावद के राज काज म सहायक हा।"

एक दो नही अपितु आठ दशका म व्याप्त अपने यशस्वी सग्रामी जीवन म हल्लू ने बीसिया रण रचाए थे। अनगिनत जूझारो को तलवार पर ताला था। उसकी युद्ध लिप्सा भू लालसा जय न होकर इस भावना मे प्रेरित थी कि युद्ध क्षत्रिय का धम है—उसे शाति के क्षणा मे भी शस्त्र धर्मा रहते हुए तलवार भाजत रहना चाहिए। क्षत्रिय काया है और शस्त्र उसकी छाया—फिर भला दोनो म विलगाव कैसा ?' उसकी मान्यता थी कि खड्ग दपण मे ही क्षत्रिय ब्रह्म दशन प्राप्त करता है—रणागण म शस्त्रा की टकार से ही उसके भाग्य देवता जागत है—और फिर यू क्षत्रिय को सदैव सशस्त्र युद्ध सन्नद्ध देखकर बैरी उसकी ओर आख उठाने का भी साहस नही करेंगे। उसका विश्वास था कि मातभूमि की रक्षाथ प्राण न्यौछावर करने से इहलोक मे सुयश और परलोक मे प्रभुत्व प्राप्त होता है। घर म खटिया पर पडे पडे दम तोडने से तो यमराज घसीट कर नरक मे ले जाते हैं।"

क्षात्र-जीवन दशन के इन्ही आदर्शो का जीता हुआ हल्लू जीतता चला गया था—अनगिनत लडाइया। परन्तु एकाधिक प्राणलेवा विकट युद्धा मे, आगे बढ-बढ कर, जूझने पर भी उसके शरीर पर घाव लगना तो दूर कभी कोई खराश तक नही आई थी। और वह यू अपार कीर्ति लाभ करता हुआ अपने जीवन के बीस कम सौ वष पार कर गया था। शीश श्वेत हो गया था पर उस पर रखी पाग का बाकपन ज्यो का त्यो था।

अपने वाधक्य से हल्लू चिंतित रहने लगा था। उसे आशका हो चली

थी कि ढलती हुई अवस्था की हिल्लोल उसकी काया के यशस्वी पोत को कही खाट मे खारे सागर म न डुबो द ? उसका सग्रामी मन रणक्षेत्र मे तलवारा की धार पर तुली मृत्यु का सस्पश कर अतिम सास लेने की उमग से भरा था। यही कारण रहा कि वह आए दिन न्योते बिन-न्योते के युद्ध अपने सर झेलता था। किंतु रण मृत्यु उमसे रूठी हुई थी और उसका सर आज भी साबुत था। वह रण छक म छका रहकर भी युद्ध-क्षेत्र मे मिलने वाली वीरगति से वचित रह गया था। जीवन के अतिम सोपान पर पग रखते ही उसका रण राग, युद्ध लिप्सा म परिवर्तित हो गया। रण-मरण की साध ने उसके मस्तिष्क म असतुलन-सा ला दिया। और उसने समस्त क्षात्र-समाज को ललकारते हुए युद्ध की आन फिरवा दी। इसके उपरात भी जब उसे कोई प्रत्युत्तर न मिला तो उसन अपने आश्रित चारण कवि सामोर लोहट के शीश पर अपनी पाग रखकर इस रण गुहार के साथ उसे राजपूताने के राजदरबारो म भेज दिया कि—क्षात्रवीरो ! वद्ध शस्त्र-व्यवसाई हाडा हल्लू की द्वद्व-युद्ध-याचना स्वीकार और उसकी रण मरण की कामना पूरी कर उसे उपकृत कर।

× × ×

कवि सामोर लोहट बबावद के हाडाओ का अयाची चारण था। उसकी पीढिया हाडाओ का यश स्तवन करती आई थी। वह इस अवसर को अपने पुण्य-कर्मों का शुभ परिणाम मानकर स्वय दप से भर गया था। किंतु उसकी भूमिका बडी गभीर थी। राजपूताने के विभिन्न अचलो के क्षात्र नरेशो के दरबार म उपस्थित होकर उसे अपने स्वामी हाडा हल्लू के वीरत्व की दुहाई देते हुए युद्ध की आन फेरना था। और साथ ही चारण कवि जन्य शिष्टाचार का निर्वाह भी करना था। उसने मार्ग पा लिया था। वह हल्लू की पाग अपने शीश पर रखकर किसी को नमन नही करेगा। हा वीरत्व की प्रतीक उस पाग को उतारकर वह क्षात्र वीरा के प्रति शिष्टाचार का निर्वाह अवश्य करेगा।

कवि लोहट ने पहले आसपास के ठिकाना की यात्रा की किंतु वीर हल्लू की आन का मान रखने के लिए कोई वीर आगे नही आया तो वह जा पहुचा मडौर—जहा परिहार राजा हम्मीर राज्य करता था। हम्मीर न

केवल अपनी वीरता अपितु उद्दण्डता के लिए भी दूर दूर तक जाना जाता जाता था।

कवि लोहट के मडौर सीमा मे पदार्पण से पूर्व ही हम्मीर उसके मतव्य की टोह पा गया था। उसे बूढे हल्लू का रण मद बड़ा अखरा था। उसकी मरण-आन उसे क्षात्र जाति का अपमान प्रतीत हुई थी। फिर भी उसने कवि लोहट को राजदूतोचित सम्मान दिया। उसे राजदरबार मे उच्चासन पर बिठाया। किंतु जब उसने लोहट का अपने शीश से हल्लू की पाग उतार कर प्रणाम करते देखा तो आग बबूला हो गया। फिर भी शात रहने का अभिनय करते हुए बोला—

—बबावद-पति हल्लू की पाग मे ऐसा क्या बाकपन है जो अपने रहते तुम्हारे शीश को थुकने नही देती—तनिक देखे भला।

—इतना कहकर उसने पाग के लिए हाथ बढाया। लोहट ने आदर भाव से पाग को उठाकर हम्मीर के हाथो में रख दिया।

—इस पाग मे विशेष तो कुछ भी नही। सभी क्षात्र-वीरो की पाग म ऐसे ही पेच होते हैं। सभी अपनी पाग ऊची रखते हैं किंतु इस पाग का धणी हल्लू आज उनकी पाग उछालने पर उतारू है वह दभी है सठिया गया है इतना कहकर हम्मीर ने हल्लू की पाग को अपनी म्यान बद तलवार की नोक पर धरकर उपेक्षापूर्वक घुमा दिया।

—परिहार राजा! मेरे स्वामी की पाग का अपमान न करें। मेरे रक्त मे उनका नमक जाग गया है। लोहट गरजता हुआ अपनी कमर से झूलती तलवार की मूठ पर हाथ मार कर खड़ा हो गया। उसे तना हुआ देख हम्मीर के सभासद भी तन गए।

—अपने प्राणो को सहेजो कवि!—दूत बनकर आए हो—परिहार-कुल की मर्यादा वर्जित करती है—अन्यथा हम्मीर न आखें तरेर कर सकेत किया और दूसरे ही क्षण उसके पार्श्व मे एक कुत्ता लाकर खड़ा कर दिया गया।

—चारण! उलटे पैर बबावद लौट जाओ हाडाओ का बडबोला पन लेकर कभी मडौर की धरा पर पग न रखना—हम्मीर ने फिर ललकारा। देखो! तुम्हारे हल्लू की पाग मैं उसके सही स्थान पर रखता

हू उस भी साथ लेत जाओ। इतना कहकर हम्मीर ने हल्लू की पाग को पास खडे कुत्ते के सर पर धर दिया और पैर पटक कर उठ खडा हुआ। लोहट तलवार खीचकर आगे झपटा तभी सभासदो ने उसे घेर लिया। अब वह आखो म अगारे धारे बबस खडा था। जब हम्मीर उसकी आर थूककर सभाभवन से चला गया तो लोहट मुक्त हुआ। उसने आगे बढकर अपने स्वामी की पाग को सहजा और उसे आखो से लगाकर अपने शीश पर धारण किया—'परिहारा। हाडा राजा की पाग के अपमान का प्रायश्चित, उसका अपने रक्त से प्रक्षालन करके ही कर पाओगे।"

अपमान पगा यह दु खद समाचार लकर कवि लोहट बबावद की सीमा मे प्रवेश न कर सका। उसन किसी विध अपन ज्येष्ठ-पुत्र को अपने पास बुलवा कर सारी बात कह सुनाई। उसे हल्ल के पास पठाया और स्वय अज्ञात वास को निकल पडा।

हल्लू न जब इस दाहक दुघटना की बात सुनी तो वह एकबारगी तो बौखला गया। उसके शरीर म झनझनाहट भर गई। काना म बर की भिनभिनाहट बैठ गई और आखो से ज्वाला फूटन लगी। प्रात से लेकर अपराह्न तक वह एक ही शब्द उच्चार रहा था—प्रतिशोध प्रतिशोध अब उसक मुख स अन्य शब्द फूटा था, वह था—युद्ध युद्ध युद्ध।

× × ×

रोपाल हल्लू का मा, जना छोटा भाई था। अपने वडे भाई के वीरत्व एव शौय पर उस बडा गव था—साथ ही उसके प्रति अटूट आदर भाव भी। किंतु जब वह दूर दूर के चारण भाटो को हल्लू की विरदावली गाते सुनता, तो उसकी भुजाए फडक उठती—उसके मन मे अपने बडे भाई से भी बडे रण-करतब दिखाने की उमग भर जाती थी और वह सोचन लगता, 'क्या कभी ऐसा दिन भी आएगा जब चारण-बदीजन केवल उसके शौय और कीर्ति का गान करेंगे ?"

अब अवसर सामन था—हाडाओ के अपमान का प्रतिशोध का। और युद्ध के आडे तीन दिन मात्र चौबीस याम, शेष रह गए थे। अपने दादा-भाई हल्लू से विदा लेकर उसने घोडे को एड लगाई और हवा से बातें करने लगा। सरपट दौडते घोडे स आगे उसका मन दौडता था—इस चाह मे

वसा कि दादा भाई से पहले रण मरण का सौभाग्य मैं पाऊ तो हर-हर गाऊ—अपनी कीर्ति को चार चाद लगाऊ।

अपने ठिकाने भसरोडगढ पहुच कर वह प्राण प्रण से युद्ध की तैयारियो म जुट गया- युद्धोन्माद उस पर यू चढा था कि उसके कवच की कडिया नही जुड पा रही थी। परिहार हम्मीर के दर्प-दलन के निमित्त मडोर पर चढ-दौडन के समाचार से भैसराडगढ मे ऐसा उल्लास भर गया था मानो कोई वडा पर्व आ जुडा हो। दूसरे दिन तक रण रचन की सारी तैयारिया पूरी कर ली गई।

लाल चूनर म वसी रोपाल की सुहागिन 'सगुणा' स्वय समर का साज-सामान सवारने मे जुटी थी। स्वामी के नीले घोडे को वह अपने हाथ से साज-सज्जा रजका रिजक दे रही थी।

—क्षत्राणी! तुम्हारे युद्धोत्लास को देखकर तो मेरी छाती फूल गई है।

—उचित है स्वामी युद्ध क्षत्रिय की कुल रीती है, उसका वीर-व्यवसाय है। मैं आपकी विजय की कामना करती हू।

—विजय ही की—जीवन की नही?

—क्षत्रिय विजय के लिए ही जीता है। जीवन के लिए नही, पराजित होकर जीना पाप है।

—यह पाप हम नही करेंगे, प्राण देकर विजय-वरण करेंगे।

—यही विश्वास है—मेरे चूडे की लाज आप रखेंगे, इसीलिए मैंने चदन की चिता पहले ही चुनवा ली है। रखेंगे-आप? इतना कहकर वह गढी के पूर्वी खड मे स्थित जल कुण्ड की ओर बढ चली—"आपके धारा-तीर्थ म स्नान करते ही मैं आपके शीश या फिर आपकी पाग के साथ जलती चिता मे प्रवेश कर जाऊगी और स्वर्ग मे अप्सराओ के साथ रमण का अवसर मैं आपको नही दूगी।"

रोपाल ने देखा—चदन के लट्ठो को चुनकर एक बडी चिता सजाई गई है—अगर-कपूर तक जुटा लिया गया है। पास ही नारियल का ढेर है। तभी उसकी आख रानी की खिली स्वर्ग-बेल-सी काया पर जा टिकी—वह होठो मे मुस्कान समेटे उन्नत शीश गर्व-भाव से उसके सामने खडी थी।

—चादी-सी देह, सोने के थाल सा दमकता चेहरा, हीरक कनी-से नैन और अलौकिक रूप वैभव के समेटे हुए बसत बहार सा यह आचल, क्या धधकती आग म भस्म करने के लिए बना है ?

—प्राणनाथ ! आप यह क्या कह रहे हैं ? रण-दुदुभि के बीच आखे खोलकर तलवारो की छाया म क्षत्राणी का दूध पीकर परवान चढ़ने वाले वीर से मैं क्या सुन रही हू ? कही रूप की धूप मोह तो नही जगा गई ?

—नही पर पता नही मैं क्यो यह सब सोचन लगा ? युद्ध के पहले ही चिता देखकर मन म तनिक शिथिल भाव जाग उठा है।

—शिथिलता और वीरता राख और चिंगारी का भला क्या मेल ? आपकी तलवार कही काठ तो नही खा गई ?

—मेरी तलवार काठ नही कबधा बिना शीश के वीरो को खाएगी पर अभी तो तुम्हारी रूप छवि आखो मे भर गई है।

—मेरी रूप छवि को पलको से बाहर धकेल दो और अपनी आखो मे अपनी मा के दूध की दमक और पुरखो के ओज को भरो, स्वामी। इतना कहकर सगुणा आगे बढ गई। रोपाल भी साथ-साथ चला।

× × ×

रात का तीसरा पहर—पूरी गढी जाग खडी हुई—जब-तब उठने वाली तलवारो की टकारो से गढ़ी गूजने लगी—हुतात्मा वीरो के गीत गुन गुनाते हुए योद्धा कमर कसने लगे—घोडे हिनहिनाते हुए अपनी टापो से जमीन गिराने लगे।

वीर बाने म सुसज्जित रोपाल युद्ध दूल्हा बना खडा था। केसरिया पाग मे बधा मौर उसके उजले चौडे माथे पर झिलमिला रहा था। सगुणा केसरिया जोडे मे बसी आरती का थाल लिए उसके सामने खडी थी। उसने जय तिलक के लिए हाथ उसके मस्तक की ओर बढाया ही था कि रोपाल ने उसका रोली रचा हाथ थामकर अपने सीने से लगा लिया।

—शृगार और अगार से सजी तुम्हारी यह छवि आज रात भर आंखों मे बसी रही। रूपमयी ! इस समय भी मुझे अपने चारों ओर तुम्ही तुम दिखाई दे रही हो—तुम्हें अपनी नयन पुतलियो म बसाए मैं कैसे रण रचाऊगा ? समझ म नहीं आता। रानी ! रूप का मोह जाग गया है—

तुमने कल ठीक ही कहा था ।

—रणोन्मुख राजपूत और रूप राग, नारी मोह ? मैं क्या सुन रही हू ? मोह के विचार से ही मेरे और आपके कुल को कलक लगता है—नाथ !

—मैं सब समझ रहा हू पर मेरी वीर-गति मे पहले ही तुमने अपनी चिता सजाकर मेरे मोह को जगा दिया है । तुमने यह क्या किया सगुण ?

—वीर क्षत्राणी के सती धर्म मे निर्वाह के आयोजन को देखकर आप मोह-पाश मे बध जाएगे कायरता की बात करेंगे – ऐसा मैं सोच भी नही सकती ।

—रानी ! कायरता का कलक न धरो । स्पष्ट ही कह दू ? मैंने, आज के युद्ध मे अपनी वीरता और शौर्य का कीर्तिमान स्थापित करने का प्रण लिया है—आज के युद्ध मे मैं दादा भाई से भी आगे बढकर रण रचाने के लिए कृत सकल्प हू– बस यही आशका है कि शत्रु शीश-दलन की घडी मे तुम्हारी रूप छवि कही आखो मे झमक गई तो ? मेरे भाले की अणी का वार विफल न हो जाए ? बस और कुछ नही ।

—'प्राणेश्वर ! क्षमा करें । मैं आपके वीर धर्म की पूर्ति मे बाधा बनकर नही जीना चाहती । यदि मेरे प्रति जागा आपका मोह मेरे जीतेजी सती होने से मरता हो तो मैं अभी चिता धधकाकर उसमे कूद जाती हू—इतना कहकर-उसने रोपाल के माथे पर कुकुम-अक्षत का टीका कर चरण स्पर्श किया और बिजली की गति से चिता की ओर दौड पडी ।

—रुको—रुको—सगुणा ! रुको । रोपाल उसके पीछे लपका । तब तक वह चिता पर आरूढ हो चुकी थी ।

—रानी ! क्या कर रही हो ? रण प्रस्थान की बेला मे शुद्ध-मन से मैंने तुम्हे अपनी भावना से अवगत कराना चाहा था । बस ! मेरा कोई और आशय नही था । चिता से उतर आओ ।

—चिता पर चढी क्षत्राणी और रण क्षेत्र मे उतरा हुआ वीर अपने प्रण की पूर्ति करके ही रहते हैं । अब मै चिता नही छोडूगी ।

सु सुनो ! सिंधु राग छिड गया है—प्रस्थान की घडी आ पहुची है । उतर आओ और शीघ्र ही मुझे विदा करो ।

—मैं आपको विदा कर चुकी। आपके माथे पर दीपता जय तिलक इसका साक्षी है। अब आप युद्ध के लिए प्रस्थान करें—बस अपनी पाग मेरी गोद में रख दें।

—क्षत्राणी! तुम यह सब क्या कह रही हो? आओ और मुझे मुस्करा कर विदा करो। अपने चूडे का बल मुझे दो।

—एक सती की समस्त ज्वलत शुभ-कामनाए—उसके चूडे का बल आपके साथ है। बस अब अपनी पाग मेरी कोख मे रख दे और अपने हाथ से चिता को अग्निदान कर दें। बस यही मेरी आपसे विनती है।

—नही यह सब मुझसे नही होगा। दखो! आकाश में अरुणिम आलोक भर गया है। प्रस्थान का शुभ मुहूर्त टला जा रहा है। तुम मुझे कलक से बचाओ मैं तुम्हे छूकर ही प्रस्थान करना चाहता हू।

—मेरा स्पश अब आपको स्वग मे ही मिलेगा, जब आप वहा रक्त रगे आएगे, यदि आपने पाग न दी तो मैं ठडी चिता म ही, सर पटक, कर प्राण दे दूगी, इस पाप के भागी आप होगे। क्षत्रिय युद्ध को प्रस्थान करने से पूव दान पुण्य करता है—पाप नही। मुझे अपनी पाग का दान दीजिये *स्वामी! आप विजयी होंगे।*

प्रायाण वाद्य बज चुके थे। कसा हुआ घोडा पास खडा था। अब पल भर रुका नही जा सकता। रोपाल ने अपनी पाग आगे बढकर रानी की गोद मे रख दी और तेजी से मुड गया। तभी रानी ने पुकारा– अतिम दान और करें नाथ! घी—अगर चिता पर बिखेर कर अग्नि प्रज्वलित कर दे—मैं अमर हो जाऊंगी।

अब और कुछ न कह रोपाल ने घी का कनस्तर चिता पर औधा दिया और अगर धूप बिखेरकर जलती हुई लकडी उसमे डाल दी। दो एक पल मे लपट रानी के आचल मे भर गई। रानी के मुह से 'हरिओम हरिओम' का मत्र फूट पडा तभी रोपाल ने घोडे की पीठ पर चढकर एड लगा दी। जब वह गढी के नीचे उतरकर अपने सैन्य-दल के सामने आकर हरावल मे सम्मिलित हुआ तो गढी म स उठी चिता की लपटें आकाश की ओर उठ रही थी। धरती से आकाश तक एक अग्नि-पथ-सा बन गया था। यही पथ स्वग को जाता है'—यह भाव रोपाल के मन मे कौंध गया।

घोड़े पर सवार रोपाल का मन धधक रहा था। उसकी आखो से लपट निकल रही थी। वह चाहता था कि घाडे के पख लग जाए और वह शत्रु सेना के सामन जाकर अकेला ही डट जाए। उसन रण स विमुख न होन के प्रण के साक्ष्य मे अपन पर मे लोहे का भारी कडा डाल रखा था। घोडे को अपनी जघाओ से दबाकर उसकी पीठ से अपना सीना सटाय वह वायु वग से आगे बढा चला जा रहा था। सूरज आधे आकाश भी न चढा था कि हल्लू अपने दल बल सहित शत्रु सीमा पर जा पहुचा। अपन स पहले वहा रोपाल का दखकर बडे भाई हल्लू को आश्चय क साथ, गव की अनुभूति हुई। बबावद के रण-पारगत सनिक एकत्र थे। हल्लू सबसे आगे था—रोपाल मध्य भाग की कमान सभाले था। सभी सैनिक युद्ध के लिए उतावल हो रहे थे। तभी एक श्वत ध्वजा गढ पर तने आकाश मे लहराती हुई दिखाइ दी। श्वत ध्वजा का दख रोपाल पर बिजली सी गिरी। उसकी आखो म काले पीले चक्कर घूमन लगे। वह घोडे की पीठ स गिरन का हुआ कि सभल गया। श्वत ध्वज युद्ध का नही सधि का सवेत था।

रोपाल ने लगाम खीचकर घोडे को वग स मोडा हल्की एड लगाकर हल्लू के सामन जा पहुचा और शिष्टाचारपूवक बोला— दादू राजा! कही सुलह सधि मत कर लना। आज क युद्ध म अभूतपूव शौय एव वीरता का कीर्तिमान स्थापित करने क लिए म अपनी धम पत्नी को जोवित ही चिता पर चढा आया हू। यह सुनना था कि हल्लू आग बबूला होकर बोला—'यह तुमने क्या किया? क्षात्र धम यह तो नही कहता—और फिर युद्ध म सधि सकट सब चलत ही हैं।" हल्लू की बात का रोपाल कोई उत्तर दे तभी मडोर सेनापति क साथ शत्रु दूत वहा आ पहुचे। उन्होंने निवेदन किया—"बबावद नरेश आपका विरद स्वीकार करत है आर आवेश मे उनस आपक प्रति जो अपमान बन पडा इसके लिए क्षमा प्रार्थी है—पश्चाताप स्वरूप राजकुमारी का हाथ भी आपको दना चाहत है—राजमाता का इसके लिए विशेष आग्रह है। अब 'श्रीजी हमारे सम्मान्य अतिथि हैं।' प्रस्ताव सुनकर हल्लू का युद्धोन्माद तनिक शिथिल हुआ। अपने सनिको को थमन का आदश दे वह दूतो के साथ राज महलो की ओर चल पडा। उसन आग्रह करके रोपाल को भी अपन साथ ले लिया।

हम्मीर ने तोपो की गडगडाहट के साथ हल्लू और रोपाल का स्वागत किया । दरबार म अपन आसन के समीप हल्लू को आसन दकर अपने भाई बेटो मे रोपाल को जगह दी । पहले स्वय हस्ताक्षर करके सधि-पत्र भेंट किया और फिर राजकुमारी का हाथ दन का प्रस्ताव किया ।

— 'मैं ता बुढा गया—हथलेवा नही मुझे तो रण मरण इष्ट है । अलबत्ता मेरे अनुज वीर रोपाल के लिए मैं राजकुमारी का हाथ माग सकता हू ।" हल्लू के ये शब्द रोपाल के कानो मे विषबूद की भाति गिरे । राज-मर्यादा उस रोक हुए थी । युद्ध अथवा सधि के विषय मे कुछ कहना उसके अधिकार के बाहर की बात थी । तथापि, ज्याही हल्लू ने उसके विवाह का प्रस्ताव किया । वह झटके से उठ खडा हुआ । उसकी आखो मे चिता धधक रही थी—जिसम उसकी रानी जलता आचल लिए होले-होले मुसकराती हुई हरि-हरि' उच्चार रही थी—माना व्यग्य कर रही हो । उसका रक्त खौलने लगा और उसकी नसे फूलने लगी । अब उसन मगल ध्वनि को बरज कर विनीत भाव से निवेदन किया— राजन दादा ! आप जानत हैं मैं अपनी धम-पत्नी को जीवित जलती चिता पर चढाकर आया हू । युद्ध मरा प्रण है । उसकी पूर्ति तो आज होनी ही है । मैं आपकी आज्ञा से उपस्थित सभी वीरो को युद्ध के लिए ललकारता हू । है कोई माई का लाल राजपूत, जो अकेले या सामूहिक रूप स मुझसे भिडने को मदान मे उतर आये ।' थोडी दर के लिए दरबार में सन्नाटा छा गया । सब शात —जैसे काठ की मूरत हा । "म उपस्थित वीरो से युद्ध-दान चाहता हू ।" उसका स्वर फिर गूजा । सभासद अब भी चुप थे । 'क्या राजपूत इतन युद्ध विमुख हो चले हैं कि घर आये वीर को युद्ध भी दान न कर सकें ।" उसके स्वर म अब ललकार थी । उसन मूछा पर हाथ रखा और तलवार खीचकर बीच दरबार मे जा खडा हुआ । तिस पर भी सभासदा के बीच चुप्पी रही तो हल्लू स्वय तलवार की मूठ पर हाथ मारकर अपने आसन से उठा—

—"अतिथि-सत्कार उनकी मान-मनुहार क्षत्रिया का परम धम है—और फिर रोपाल तो युद्ध-याचना कर रहा है । आप रण-वैराग्य धारण किय हैं तो एक क्षत्रिय के नात उसके मरण-व्रत की पूर्ति के निमित्त मैं स्वय

को उसके सम्मुख प्रस्तुत करता हू । इस वीर-गजना के साथ तलवार खीच कर हल्लू सभा भवन के बीच जा खडा हुआ—"भाई रोपाल ! उठाओ शस्त्र,—उसने भरे गले से कहा— आ मर रक्त-दूध क सगी, हम परस्पर रण-मरण की कामना पूरी करें।"

दादू आ ! रोपाल तनिक विचलित-सा हुआ पर दूसरे ही क्षण खर ऽऽ की ध्वनि रख खींचती हुई एक तलवार नागिन-सी लपलपाने लगी—' रुकें राजन ! आप परिहार वश का यू कलकित न करें"—एक बोल फूटा और दूसरे क्षण मडोर का छोटा राजकुमार रोपाल और हल्लू, दोनो भाइया के, बीच आ धमका—

"परिहारा के आतिथ्य सत्कार को आप उनकी कायरता न समझें। मैं आपकी युद्ध-कामना की पूर्ति हतु सम्मुख हू।" इतना कहकर कुमार ने सिंहासनासीन अपन पिता हम्मीर को नमन किया और नगी तलवार ताने पग रोप कर खडा हो गया । उसकी आखा मे एक ही साथ विनय एव वीरत्व का भाव दखकर हल्लू न उसकी पीठ थपथपाई और अपन आसन पर जा बठा। तभी रोपाल न उस नरनाहर को अपने अक म भर लिया । परिहार राजकुमार उसके चरण-स्पश की मुद्रा मे झुकता-सा लगा। पल दो-एक के अतराल म वे दोना वीर तलवार खीचकर आमन सामन खडे थे—तभी रोपाल ने राजकुमार से आग्रह किया—

—वीर ! तुम वय म मुझसे छाटे हो, पहल तुम वार करा ।

—नही, आप हमारे अतिथि हैं, पहले आप शस्त्र सघात करें ।

—नही युवक ! यह क्षात्र मर्यादा का उल्लघन है—पहले तुम ही चलाओ तलवार ।

—क्षमा करें परिहार कभी अतिथि पर पहले तलवार नही तौलता । इस युद्ध मनुहार को ठहरा हुआ देखकर हल्लू ने हस्तक्षेप किया और बाला—

परिहार कुल दीपक ! मै अपने वाधक्य की दुहाई देता हू । आग्रह करता हू कि कनिष्ठ वीर होन क नात रोपाल पर पहला वार तुम करो । यह सुनकर परिहार राजकुमार तलवार तौलकर सन्नध हुआ। और रोपाल सचेत। "ठहरो कुमार, यह द्वन्द्व युद्ध मेरे भाग का है । तुम इसमे भागी-

दार न बना"—एकाएक ही परिहार हम्मीर के बोल फूटे और वह तलवार तोलता हुआ अपन आसन से उतर आया। एक क्षण के लिए वातावरण म सन्नाटा छा गया। अब रोपाल के आगे हम्मीर खडा था। उसन आग बढकर उसकी भुजा थपथपाई और बोला—"पाहुन ! जोड बराबर की रहे तो विजय रसीली हो जाती है। चलो, करो वार।" और वह वार झेलन को सन्नद्ध हुआ। रोपाल ने हल्लू की ओर दृष्टि निक्षेप किया और उसकी अनुमति पाकर लोहे-से लोहा बजा दिया। रोपाल के वार म विद्युत वग था तो हम्मीर की क्षमता मे पर्वत स्थैर्य। रोपाल पगो पर उछल-उछल कर शिखर भग सक्षम प्रहार करता था तो प्रतिपक्षी अद्भुत सवेग से उन्हे निरस्त कर दता था। दोनो प्रतिद्वद्वियो के मुख विजय लाभ की लालसा से आरक्त थे—किंतु ईर्ष्या-द्वेष का कालुष्य वहा कहीं न था। एक झनकार झाडता सपाटा रोपाल की ओर से हुआ और हम्मीर की तलवार टूटकर आधी रह गई। तभी उसन सिंह-वेग से अपनी कमर मे बधी कटारें खीच ली। रोपाल न भी तलवार फेंककर कटारें निकाल ली—और अब दोनो राजपूत द्वद्व युद्ध पर उतर आये। फिर वही वार-पर-वार और घात पर घात—इस क्षण हम्मीर का वार रोपाल के मस्तक पर बैठा। रक्त का फुहारा फूटा और उसकी ग्रीवा एक ओर झूल गई और तभी ढहते हुए रोपाल न जो वार किया तो हम्मीर की आतडिया बाहर आ गइ। क्षण-समूह सरक कि दोनो वीर धराधीन हो तडपने लगे—दोनो की रक्त धार परस्पर स्वय कर गल बहिया मिलने लगी। पथराई आखो म एक दूसरे की वीर-छवि उभरी। उपस्थित क्षात्र-समाज इनकी ओर बढा पर अब तेज उड चला था और दोनो की वीर देह जम गई थी—स्थिर रक्त म।

परिहार कुमार के हाथो मे अपने पिता की एक स्नात देह थी और बडे हल्लू क हाथो म अपने छोटे भाई का कटा शीश।

—दाना ! मरे भाग्य का यश आप ले चले। मडोर कुमार बिलखन लगा।

—भाई। रण मरण का व्रत मुझस छीन कर तू यशस्वी हो गया।" हल्लू की आखें सूख आसू पलको पर साधे झुक गईं। थोडी देर हल्लू रोपाल की ठडी देह पर झुका बैठा रहा। फिर शीश उठा कुमार की पीठ पर हाथ

रख सात्वना देता हुआ वोला—

राहव, उठठ कमाणगर ! मूछ मरोड म रोय।

मरदा मरणा हक्क है, रोणा हक्क न होय॥

—धय धरो कुमार ! सौभाग्यशाली है हम्मीर कि रण राग उच्चार वीर-गति पा गए। रोपाल भी वड भागा है कि कीति-कथा छोड गया। हत भागा हू मैं जो सही-साबुत पडा हू—रण मरण की कामना म जलता हुआ अब मैं और किससे रण-याचना करू' हल्लू मन ही-मन बुदबुदाया उसने अपनी कमर पटी म खमी कटार निकाली और उस हवा म खीचन हुए अपने सीन म पार कर ली। उसके रक्त रजित अतिम शब्द थे—"रण मरण नही दैव, तो शस्त्र-मरण ही लो हरि हरि "

कुआरा सफर

टन न न नड कालबेल झनकर गुनगुनाई और उस छोटे से कमरे में उन्हें अपने होने का अहसास हुआ। कौन हो सकता है ? इतने होले से बेल-बटन पर हाथ रखने वाला तो उनके अपने दायरे मे कोई नहीं। टन टन् टन् इस बार दबाव पहले से कहीं गहरा था। उन्होंने बुशर्ट की आस्तीनो मे हाथ डालते हुए 'आया' उच्चारा और दरवाजे की तरफ बढ गए। दरवाजा खोलते ही आदतन कहा, 'आइए।' पर आगे बात पर जो नजर गई तो ठिठक कर रह गए—सामने एक अजनबी युवती सूटकेस थामे खडी थी—उम्र यही कोई पच्चीस-सत्ताईस ठीक उनके बराबर।

—आप । कहिए किसे पूछती हैं ? अचकचाकर उन्होंने पूछा । कालबेल के नीचे लगी नेम-प्लेट शायद सही है।

—ओह आइए आइए इतना कह कर उन्होंने आगे बढ कर सूटकेस थाम लिया और लहजे को जरा मुलायम औ मीठा बना कर बोले—बैठिए-बैठिए।

—जी—जी—के झिझके स्वर मे स्वागत् को स्वीकारते हुए उसने अपने ललाट पर बिखर आई लट को सवारा और आचल सहेज कर कमरे म दाखिल हो गई।

—दरअसल यहा मैं ही हू—माता जी उधर हैं उस कमरे म—आप इतमिनान से बैठिए श्यामजी बिन बुलाए अनजाने मेहमान का सहज भाव से लेने की जुगत म कह गए।

मेरा नाम अनूपा है दिल्ली से आ रही हू उसने कमरे की उखडी-बिखरी सुघडता का जायजा लेते हुए कहा—। अब उसकी निगाह सामने टेबल पर बिखरे पत्रो और फोटो की गिड्डी पर जम गई थी।

—मेरा भी पत्र और साथ मैं शायद आपको मिला होगा उसने

टेबल के शीशे के नीचे लगे फोटो और इधर-उधर बिखरे किताबो मे खुसे पत्रो पर उचटती निगाह डालते हुए पूछा। और फिर एकदम बात का रुख बदलते हुए कह गई इधर एकदम जल्दी म आना हो गया सुना-पढा था उदयपुर बहुत सुदर है झीलो का नगर पर मेरे लिए एकदम अजाना साचा आपका ही दरवाजा खटखटाऊ मुझे दो दिन पहल ही उदयपुर यूनिवर्सिटी से इटरव्यू 'काल मिला है उसने थोडे मे सब कह जता दिया। श्याम जी के सकपकाए चेहरे पर से उसने अपनी निगाह छिटका ली और पास रखी पुस्तक उठा कर सहज होन का उपक्रम करने लगी। फिर सामन रेक म लगी भारी भरकम पुस्तको के टाइटल पढने म लगी थी कि उसने सुना।

—अच्छा किया आपन उदयपुर-सुदर है बहुत सुदर—कब है आपका इण्टरव्यू ? अब उसका स्वर सयत हो चला था।

—इटरव्यू ? कल सोमवार को साढे दस बजे अगर आप किसी ढग के होटल मे मेरे लिए एक कमरा

—ऐसी क्या बात है यही रहिए आपका घर है माता जी है बीमार उस कमरे मे, फिर आज दीदी भी आ जायेंगी। श्यामजी ने आव-भगत के लहजे मे कहा।

—धयवाद महरबानी पर ।तभी बाजू के कमरे म खासन-कराहने की आवाज आई और श्यामजी आया कहकर उठ गए।

कोई पाच मिनिट बाद आए और अकुलाहट मे बोले—

—माता जी—अस्थमा का दौरा पडा है—गठिया का भी जोर है—डायरिया भी मोतियाबिंद का आपरेशन करवाया है आखो स पटटी भी नही हटी आप बैठिए मकान मालकिन और सब कही ब्याह मे गए हैं आप उधर दाहिनी तरफ बाथरूम है मैं डाक्टर से दवाई बस समझिए गया और आया वह मशीन की तरह बोले और बिना हा ना सुने दरवाजे के बाहर हो गए। फिर साइकिल के स्टैड से उतरने भर की आवाज आई।

—कहा तो आ गई मैं ? अनजाना नया शहर नयी जगह पर यहा कौन मुझे निगल जाता पढ लिखकर रही बोडम एक रात की

ता बात थी कहीं भी देखकर किसी ढग के धमशाला-होटल म टिक सकती थी। भैया न साथ आन के लिए कितनी जिद की थी। कहता था बारह बरस का हुआ तो क्या, हू तो आदमी पर डबल किराए—खच की बात सोचकर ही टाल गई सोच म खोई थी कि फिर खासन-कराहने की आवाज आई। उससे रहा नहीं गया और वह पल्ला सभाल कर दूसरे कमरे म दाखिल हुई। बीमार बुढ़िया के कुआरे बटे की गिरस्ती फिर सामा फैली थी।

सामन दीवार से लगी खाट पर हाथा के सहारे उठग हुई साठ-पसठ साल की बुढिया खास खास कर निढाल हुई जा रही थी। उसने तजी से बढ़कर सहारा दिया। और हौले-हौले पीठ सहलान लगी। फिर तिपाई पर रखी सुराही से पानी उडेल गिलास होठो से लगा दिया। थोडी तसल्ली हुइ तो आखो के आगे स लगी हरी चिदिया का ठीक करत हुए पूछा—

—कौन बहू?

—जी नहीं।

—तो जसवती है अपन स तो पराय भले जान कौन पाप किए दीदो मे अधेरा अट गया फूट ही जान तो। बडे बेटा—बहू पूछन नही और ब्याह जाग कुआरा बेटा मा का साडी 'पल्ला सहजे-सभाले कोई अच्छी बात है बेटी तू ही मुझे साडी बदलवा द काई कसर थी एक रोग और इतना कह माजी अपने पैरो पर पडे कबल को टटोल कर हटान लगी। अनूपा न सामने तार पर फले साडी ब्लाउज का सहजा। किवाड सटाकर माजी को साडी बदलवाने लगी। उनके बिस्तर कपडे ठीक कर उसन उन्ह पानी पिलाया फिर सहारा देकर लिटा दिया। श्यामजी लौट नहीं थे। कमरे के पसार पर निगाह डाली तो घर भूतो का डेरा लगा। पानी बुझे गीत कोयला के पास केरासीन नहाया स्टाव पडा था। आसपास बरतन बिखरे थे। मसाले के कुलिया डिब्बे खुल पड़े थे। एक थाली म अधबिने चावल फैले थे चाय का पैकट शक्कर के डिब्ब म औधा हो गया था पास पानी की टूटी शू शू कर रही थी। उस पूरी तरह बद नहीं किया गया था। अनूपा से यह सब देखा नहीं गया। उसके माथे पर सलवटें उभरी—वह आयें उसक पहले यह सब समेट-

सहज कर सफाई नहीं की जा सकती ? सोचे गए सवाल का जवाब उभरने से पहले ही वह छोटे कमरे में गई और अपना सूटकेस लेकर फिर लौट आई। कल्याण के पुराने अंकों को एक ठौर करके उसने ताक में जगह बनाई। वहां अपना सूटकेस जमाकर खोला और पेस्ट ब्रश और तौलिया लेकर बाथरूम की ओर मुड़ गई। हाथ मुंह धोकर चटपट वहां से निकली और रसोई के कोने में जाकर डट गई। स्टोव में घुसी पिन हटाकर बर्नर को साफ किया। फिर उसे सुलगा कर भभका दिया। तुरत-फुरत चावल साफ किए। सामने जमे डिब्बों को बजाकर दाल निकाली और उसे साफकर अलग रखा फिर बिखरी चीजें समेटने लगी। पतीली का ढक्कन बजने लगा तो शक्कर उसमें छोड़ थोड़ी देर बाद चाय डाल दी।

दाल चावल वगैरा प्रेशर कुकर में रख उसे बंद कर स्टोव पर चढ़ा दिया। फिर कप धोकर चाय डाली।

—माजी चाय उसने कप तिपाई पर रखते हुए कहा और उन्हें सहारा दे पीछे तकिया लगाकर बिठा दिया। चाय प्लेट में लेकर उनके होठों से लगाई उन्होंने उसे हाथ से परे करते हुए कहा—"बहुत गरम है—तुम लोगों की सूरत देखने को तरस गई। कितना कहा था, इन मेरी आंखों में जो नाम को धुंधला उजाला है उसे वैसे ही रहने दो—मेरा अपना काम तो चलता है पर श्यामजी ने कब किसकी मानी है होठों पर लगी भाप को महसूस करते हुए उन्होंने चाय सुड़क ली। फिर बोली—पहले कम बिगड़ा और मैं उनका मोतियाबिंद निकलवा लें। इसके ठीक होने पर दूसरी आंख की साज-संभाल करेंगे और यूं दोनों आंखों में अंधेरा भर खाट में गिरा लिया।

—ठीक हो जाएगी फिर से सब दीखने लगेगा।

—क्या नहीं देखा इन फूटी आंखों ने मर जा और देखूंगी मेरी जवानी में मेरे सुहाग की अरथी देखी—फिर बच्चों के बाप का बिछड़ना देखा—घर-द्वार देखो—[illegible] अपनी आई—हलवाली [illegible] का टूटा फूटा [illegible]—सुख देखा तो अपना बड़ बेटे का चेहरा देखा पर [illegible] सब को बस दिया—[illegible] दूर को [illegible] फिर [illegible] देखा [illegible] [illegible] दूर देखा [illegible] कहूं कितना [illegible] तू असपन्नी मात्र हो आई बेटा ?

—माजी की बुझी आखें गीली हो गइ और बोल खासी के दौर म बिलमा गए।

—अब नही बोलें माजी—बीता बिसारें। मन भारी होने से आखो पर जोर पडता है—इतना कह उसने पीठ सहला दी। खासी थमी तो उन्हें होले से लिटा दिया—कप को साफ कर अपने लिए चाय ढाली और बस्सी मे फैला कर जल्दी-जल्दी सुडक लिया।

झाडू सभालकर जो भिडी तो मिनटो म सब साफ पोचा लगाने के लिए वह झुकी थी कि शुसू—फिस्स शु कूकर न विसल दी और वह चौक गई। स्टोव की आच मद कर वह फिर सफाई मे जुट गई। थोडी दर मे दिप दिप करत बतन और करीने से लगी चीज वस्त के साथ कमरा मुह से बोलन लगा। अब वह बाहरी कमरे म थी। उसन इधर उधर जमी किताबो को साइज के मुताबिक जमाया—प नेहरु की तस्वीर को झाडती टेबल क पास जो आई तो फोटोग्राफ्स की जमी हुई तह उसके पल्लू की झाड स बिखर गई। अब टेबल और उसके नीच दसियो लडकियों के फोटो बिखरे थे। उसने एक एक कर सबको सहजा। अपन फोटो पर नजर पडते ही उसका हाथ पल भर को ठिठक गया। उसने उसे उठाया। छोट हासिए पर [3] का आक चढा हुआ था। फिर एक के बाद एक फोटो देखे तो उन पर क्रम स 16 तक के आक पडे थे। सब फोटो यथावत रख कर उसने इडेक्स कार्ड्स जमाना शुरू किया कि उसकी आख सामन फले कागज पर लिखे तीन के आक पर जाकर फिर ठहर गयी—यह एक अ त र्देशीय पत्र था। उसन लाख चाहा कि वह पत्र न पढे। उसके फोटो पर पडा तीन का आक उस ऊबडूब कर सब पढवा गया। लिखा था—

मेरे अच्छे कौशल,

खूब खुश हो ना? यार। मैं ता इधर दीवाना हो गया। भाई लोग लडकी-लडकी टेरत हैं। आधा इच चौडे 'मेट्री मोनियल के कॉलम म साढे तीन लाइन म छपे एक अखबारी विज्ञापन के जवाब म तीन सौ पैंसठ लडकिया अपनी माग उघाडे सिंदूर की चाहत मे घिघियाती हुई अपने पत्रो मे बिलबिला रही हैं। बीसिया तरह-तरह क पोज बनाए अपनी टेबल पर धरी हैं—किस चुनू और किस नही? बेचारियां! दोस्त, लगता

कुआरिया, वचारिया मा-बाप भाई भी क्या करें—मुझे तो दया आती है। एक कुआरी ने ता खुद आग होकर ऐसा पत्र लिखा है कि रोना आता है। लिखती है—आपके परो की जूती वन कर रहूगी आपकी नीद जागूगी। क्या कहू कैसे कहू? भाई आखें दिखाते हैं। बप्पा आत्म हत्या कर लन की धमकी दत है। जीत जी मरन है। मरती हू तो कुल कलकी, जीती हू, तो जजाल! और भी बहुत लिखा है—आसू भीगा। पर क्या करें? साल छह महीन की बात होती ता और बात थी। पर यह तो जीवन भर का साथ है इस उस को कस गले बाध लें?

'खर! छोडो, अब बद करता हू यह कुआरी नामा। लेक्चरा शिप अपनी टेम्परेरी थी, सो गमियो की छुटिटयो के बाद नहीं रही। अवकाश का वेतन खटाई म है जुलाई म थिसिस 'सबमिट' करनी है। एक टाइप मशीन किराए पर लाया हू। अपनी 15 20 की मरियल स्पीड स देखो कितना खिचता है! बिजली पानी के बिल अटके हैं। दध वाले की उगाही तेज हो गई है। ऊपर से माजी की आखो का आपरेशन करवाया है—बिल्कुल टट हू। बन सके ता पखवाडे दस दिन म 500-600 रुपए का जुगाड करो। माजी शादी की रट लगाए है। उन्ही की तसल्ली के लिए 'मेटरीमोनियल' दिया था। वरना कडके और बकार लडके की शादी का भला क्या अथ? हा, सोमवार को मरे वाली पोस्ट के सलेक्शन के लिए इण्टरव्यू है। तैयारी खूब है, जाऊगा। पर सुना है दिल्ली स कोई गोल्ड मेडलिस्ट आ रही है—प्रोफेसर की सगी। दिल्ली का ही एक्सपट भी आना है। खैर जो भी होगा, देखेंगे। भैया भाभी 'लीगल सेपरेशन' के कगार पर हैं। तुम उन्ह "

कलेजे की धुकधुकी को हाथ स थाम कर वह पढे जा रही थी। बीच मे ठण्डी सास लेकर पेशानी पर चुहचुहा आए पसीने को आचल में पोछा, फिर अगली सास म अधूरा खत पूरा पढ गई। कापते हाथो स उस वहीं जैसे का तसा रख घूमी थी कि दीवार के कोन म लगे तिकोन पत्थर पर रखी 'उनकी' तस्वीर पर आखे टग गइ। आप है—बावन तोला पाव रत्ती सही—सधे नौजवान, आलू-सी नाक, कीकर-सी आखें, गोभी से सिर के नीचे शलजम-सी ठोडी, मटर-से गोल दात और इमली की नाल से कान

यानी भरी-पूरी सब्जी की दुकान, पराई, बिन ब्याही बेटियो का नाप-जोख भावतोल करन चले हैं।" उसने हिकारत मे आखें हटा ली। एक पल तो सोचा कि चुपचाप इस घर स चल द, पर चोर की तरह निकल भागना ठीक न समय कर रुक गई। माजी के कमरे स चावल लगन की गध आई तो लपक कर वहा आई और सुर सुरात स्टाप को चुप करा दिया। स्टोव बुझन के बाद उसे अपना तन मन जलता-सा लगा और वह बाथरूम की ओर वढ गई।

भीगे बाल बिखराए खिडकी के बाहर दखती वह दरवाजे को पीठ किए खडी थी कि कदमो की आहट हुई। श्यामजी नाक गाल पर पटिटया चिपकाए, गले मे पडी सफेद पटटी पर कच्चे प्लास्टर चढे हाथ को साधे मुस्करात हुए सामने खडे थे। उनका हुलिया दख कर वह धक्क सी रह गइ, यह क्या हो गया अभी तो ?'

'खास तो कुछ नही एक स्कूटर वाला साइकिल को टक्कर मार गया । माफ करें भीड थी मरहम पटटी म दर हो गई। मा जी की दवा लेत ही चला आ रहा हू।

—तो इस घर म मरा फेरा नहीं फला

—कैसी बातें करती है—आपने यह सब तकलीफ कमर की सुघडता को आख मे तौलत हुए उन्होने कहा और फिर बौखलाहट म पूछा आपने चाय नाश्ता ?"

—वह सब हो गया—आप हाथ धो ले। दाल भात बना है—लाइए माजी को दवा दे दें। इतना कहकर उसने उनके हाथ से दवा की शीशी थाम ली।

—दो दिन के लिए—वह भी इटरव्यू के खातिर—आपका आना हुआ इधर और जोत दिया मैंने आपको

—मर लिए होटल कमरा तो शायद

वह माजी के कमरे की तरफ बढ गई।

—हा, वो मैं शाम तक ठीक कर दूगा उन्होने अपने प्लास्टर चढे हाथ को निरीह होकर देखा—कोई बात नही—शाम तक दीदी नहीं तो जसवन्ती ही आ जाये शायद आज ही उन्ह आना था।

—जसवन्ती कौन वह ठिठक कर बीच दरवाजे म खडी पूछ रही थी।

—दीदी की मुह बोली बहन।

—मांजी न मुझे जसवन्ती कहकर ही पुकारा और मैंने चुपचाप इस नाम को अपना लिया।

× × ×

अखबार-किताबो के पन्न पलटत, माजी की सेवा-टहल करते दोपहर ढली। सूरज ठडा हुआ तो अलग-अलग किताबे उठाय, व फिर छोटे कमरे म आ बैठे।

—आपका विषय ? श्यामजी न चुप्पी चटकाई।

—वही जो आपका है उसन बिना किताब से निगाह हटाये जवाब की टीप लगाई।

—स्पशियल पपर ? फिर खामाशी को छिटकाया

—वदिक-दशन

—वाह—सयोग इसे कहत हैं विनापन म वदिक-दशन मे ही स्पेशियलाइजेशन

चाहा है आपका सलेक्शन श्योर है

—क्यो ? मैं दिल्ली स आ रही हू इसलिए।

सुनकर वह सकपका गए—फिर सभलकर बाले—

—अगर बुरा न मानो तो आपका कैरियर पपर क्वालिफिकेशन ?

—गोरड मैडलिस्ट दिल्ली से—बी० ए० फस्ट पजाब—फिर सेकण्ड

—गुड वैरी गुड

—औरो से पूछेंगे ही पूछेंगे—अपना कुछ नही बताएंगे ? उसने आखो से सवाल किया।

—क्यो नही ' मैट्रीक्यूलेशन—अपर-टू एम० ए०—थ्रो-आउट फस्ट क्लास। पी० एच० डी० कम्पलीटेड एक्सेशन का टीचिंग' एक्सपीरियस

—वाप रे। उसने आखा को चौडा करके सुना और चुभते बोल मे कहा—फिर कैसे कहन है कि स्लेक्शन आपका नही मेरा होगा ?

—गाल्डमैंटल—वह भी दिल्ली से—फिलर ह्यूमन गल कैंडीडेट

—आप दिल्ली की ट्हाई क्या दन है ? फिर लडकियो की तो बाढ आई हुई है। मैं तो सोचती हू मेरा इटरव्यू मैं जाना बेकार है।

—यह भला आप क्या कहती हैं। आप मुझसे या किसी और से क्या उन्नीस ह ? फिर इटरव्यू आखिर इटरव्यू है। सूरमा रह जाते है और एक दम फ्रेश लोग पार हो जात है।

—जिस पड नीचे बसेरा किया जिन पत्ता से छाया पाई, उन्ह धूनी लगान मुझे सोचना पडेगा।' उसन कहा और किताब के पन्ने पलटने लगी। उन्हान सुना और ठहठहा उठे। तभी माजी को खासी का दौरा पडा। वह तेजी स उनके कमर की आर बढे और बाये हाथ से उन्ह सहारा दन की काशिश करन लग। तभी पीछे से वह आ खडी हुई। बोली—छोडिए एक हाथ से काम नही सधत। माजी को दोनों हाथा से सहारा दकर उठग किया और उनकी पीठ सहलाने लगी।

—दवा भी दनी है—उन्होंने फिर एक हाथ स शीशी का ढक्कन घुमाया ता पूरी शीशी ही घूम गई।

—कहा ना—एक हाथ से काम नही सधते—

अपनी बात दोहरा कर उसन शीशी का ढक्कन हटाया और चम्मच म दवा डाल माजी को द दी।

फिर पानी पिला पास रखे टावेल से उनका मुह साफ कर दिया।

—जीती रह मरी जसवन्ती। सुधा नही आई ? अरी। तुम दोनो मिलके उस पढे लिखे उज्जड श्याम को समझाओ। तीन सो पैंसठ मे से किसी एक ता पसद कर ले। तीन सौ पैंसठ दिनो मे एक दिन तो दीवाली होवे ही है। फिर कहो उससे कि अपनी सूरत को तो देखे। मा पर पडे ता अदना और बाप पर हो तो 'कलुवा'। सब रूप भगवान ने सिरजे अरे गुन लच्छन परखो—माजी फिर खासी मे डूब गइ। उसने फिर उनकी पीठ को सहला दिया।

—अच्छा मैं चलू देखू कहीं कोई कमरा

—ठहरिये । उन्होंने बाहर कदम रखा ही था कि वह प्रकट हुई—क्या आप मुझे एक रात के लिए अपनी छत के नीचे सर छिपाने की आज्ञा नहीं देंगे ?

—आप कैसी बातें करती हैं आपका घर है आप ही ने कहा था इसलिए फिर आपको यहा असुविधा ऊपर से माजी की टहल खाना —फिर यहा रहकर आप इंटरव्यू की तैयारी भी नही कर सकेंगी कुछ घंटे ही रह गए हैं आडे ।—मुझे—कोई तैयारी नही करनी है मैंने आपको कहा ना इंटरव्यू के लिए भला कभी तैयारी काम आई है ? फिर दिल्ली का एकसपट यह बात अलग है कि आप मुझे यहा से

—अरे—रे—क्यो काटो मे घसीटती हैं तो फिर आप छोटे-कमरे मे सोइए वहा किताबें हैं। तैयारी भी हो जाएगी और मैं मांजी के कमरे मे जमता हू। उन्होने नरम लहजे मे हुलसते हुए कहा।

—ना ना आप बदस्तूर इधर ही जमे रहें—जुटके तैयारी करे मैं उधर माजी की तरफ ही रह लूगी। अपने स्वर का सहज बनाते हुए उसने कहा।

—क्यों शर्मिन्दा करती हैं उस कमरे मे पलग नही है। फिर मा जी की खासी—कितना खलल होगा—सोचिए—

—सोचती हुई सूरत है ही भगवान ने बनाई है। और भी साचन को कहते हैं। फिर तो एकदम बोडम होकर सोच की मूरत नहीं बन जाऊगी ?

—आप कैसी उखडी-उखडी बातें कर करती हैं।

वह जाने क्या सोचकर खिसिया गए। फिर बोले—आप तो उधर ही जमे।

—मैं भला कब-कहा जम सकी मा के गर्भ मे भी सात ही महीने रही और छोडो मैं खाने की तैयारी में जुटती हू—आप अब आजाद हैं। चाह बाहर टहलें या घर मे रहें— वह कहती हुई माजी के कमर की ओर मुड गई।

—पर देखिए भला आपको क्या पता कि कौन चीज कहा पडी है। किचन की

—कोई किचन किसी औरत के लिए अजाना नही होता। आप मुझे

एकदम ना-समझ मानते है ? मैं तो अच्छी खासी औरत हू। उसने आख उठाकर कहा।

—वो बात नही मैं खुद खाना बनाता पर हाथ आप बुरा न मान तो किसी होटल से खाना ले आए समय बचेगा पढ सकेंगी कल के लिए

—आखिर मै ब्राह्मण की बेटी हू फिर कल किसने देखा है।

—तो मैं सब्जी ले आऊ—हा, पहले आपके लिए इधर का उधर खाट तो लगा दू—

—मैं इधर की चीज उधर—इसकी चीज उसके, लगाना पसद नही करती। फिर हरी सब्जी। मै बरसात के दिनो मे नहीं खाती। कीड होते हैं उसम

—आप तो ?

—बहुत सवाल करते हैं एक दिन के मेहमान पर भला यू बातो का पहाड तोलते है—जिदगी भर के साथ की बात अलग है। उसके होठ मुसकान की लय म तैर गए।

—तो क्या आपने यह मैं आपके लिए खाट की तलाश करता हू शायद उधर मकान मालकिन की तरफ मिल जाए। इस बहाने वह मुह चुरा कर वहा से टलने का अवसर पा गए।

पुरवया की *पायल म बूदे के घुघरू खनकाती बरखा* की रात घिर आई। वह इधर टेबल पर बैठे, कल के लिए, अपने थिसिस के मुख्य मुद्दे टोह रहे थे और वह इधर खिडकी के शीशो पर रेंगते पानी के धारो म अपने छोटे भाई-बहनो की सूरत जोह रही थी—घर के बार म सोच रही थी। पापाजी को कितनी बार कहा था कि विवाह विज्ञापन देख वह उसके फोटो इधर उधर न बखेरें—पर वह भला कब मानने वाले है—लो। अब बिगडवाई अपनी बेटी की गत। पहले तो अखबार वालो का चिट्ठी भेजी—फिर 'लडके' के माइक्लोस्टाइल-गश्ती-पत्र के जवाब में घा घा से बाहर निकलने और एडवास बनने के लिए ललकारते हुए इन महाशय के दरवाजे तक धकेल दिया।—जब उदयपुर जा ही रही तो गुड-जेस्चर मारने मे क्या हर्ज है ? तुम भी उनका घर-बार देख लोगी और वे भी तुम्हे सौगंध हैं

तुम्ह मेरे सर की जो वहां न जाओ समझती हू मेरी बढती-ढलती उम्र को दखकर पापाजी बहुत परेशान हैं—इधर यह साहब लडकियो के चेहरे-मोहरे जोडकर खिलौने घड रहे हैं। परायी बटिया के अगो को गणित के अको की तरह घटा-बढा रहे हैं उन्ह दिलजोई का सामान वहकर उन पर हस रहे उन पर दया कर रहे उन्ह ठेवे म बनी जिस समय रहे हैं आपका सिर जो है खास अल्लाह मिया न फुसत म। लडकियो वे ढेर सारे फोटो पाकर कहते हैं लडकियो की बाढ आ गई। चौकडी भूल गये बीमार मा की बात नही मानते अपने आपको समझते क्या है? कामदेव-अवतारी—सोचते-सोचते उसका सर चकराने लगा। वह सर पकडकर खाट पर बैठ गई। तभी बुलाहट हुई—

सुनिए—। किसी किताब की दरकार हो तो माग लीजियेगा। बरखा म भीगा स्वर था पर उसे तीता और कसैला लगा। उसने बिना कोई जवाब दिए बिजली गुल कर दी और माजी के सिरहाने लगा जीरो बल्ब के उदास उजाले म उदास होकर खाट मे ढल गई।

हरियाली को निहाल करते मौसम का उजास नहाया धुधलका धरा-धौबारो म बिछा था कि उसने छोटे कमरे की कुडी खटखटा कर उन्ह जगा दिया। माजी की खासी की खरखराहट से वह बहुत पहले जाग बैठी थी। माजी को सभाल कर उसने टेरा—उठ। जाग मुसाफिर भोर भयी। गुन-गुनाते बोल को उन्होंने सकारा—

—नमस्त जी

—नमस्ते! शुभ हो

—आशीर्वाद द रही है—वह भी छिपकर।

—बडी हू, लडकी नही, औरत हू इसलिए—सामने इसीलिए नही होती कि दिन मे किसी को यह कहकर नही पछताना पडे कि आज सुबह जागते ही किसका मुह देखा उसके बोल मे रुखापन आ गया था।

—मीठा कब बोलेंगी ... महमान तो आज चले जाएगे। ...

—तो क्या। बाढ आयी है—बाघ टूटे नही कि महमान ही महमान

—क्यो काटती हैं कडुआ बोलती है दोस्तो की बाते है महज मसखरापन बात का सिरा उधर सरकाते हुए उन्होने उसे सहज करना चाहा।

अब आप कब तक लिहाफ मे लिपटे रहेग साढे नौ बजे यूनिवर्सिटी पहुचना है दूध आ गया था कहू बैड-टी हाजिर करें उसने अब हसते हुए बात मारी।

—क्यो मखौल करती हैं। म एक बेकार—मामूली आदमी—

—नाहिये धोइय और निचोडिय—हम तो तैयार होकर खडे हैं आपकी अगवानी मे। उसने चश्मा हटा दिया था और भीगी भीगी नरम धूप मे ताजा और खिली हुई खडी थी। श्याम जी उठे, कमर मे जाकर माजी क पर छुए आर जुट गय तैयारी म। लौटे तो उजले कुर्ते कमीज म फूले फले दीख रहे थे।

—देखिये मैं एक दिन मे कितना मोटा हो गया। उ होने खिलत हुए कहा—

—पहले अद्वत थे अब द्वैत हो गए है ?

—आपके इस कथन को जिज्ञासा मानू या तथ्य-कथन।

—दशन का विद्यार्थी तो जिज्ञासु होता है। दशन मे भला तथ्य कहा ? भारी भरकम शब्दो के पाल से उनका उछाह ठडा हो गया और वह चुपचाप अपने पढने की टेबल पर जाकर बैठ गय—एकदम जड। उस एक हाथ से झूलते बालो को सहेजते और दूसरे हाथ मे चाय की ट्रे थमी रखकर भी वह वेहिल रहे—एकदम गुमसुम। लीजिए ! चाय उन्होन सुना। आख उठाई तो पाया दो प्याले चाय के साथ एक छोटी प्लेट म ग्लूकोज बिस्किट थे।

—थक्यू—महमान मैं हू या आप य बिस्किट कहा से आये ? उन्होने जरा चाककर कहा।

—आप पहले सवाल पर गौर करें बस—और प्याला थामकर हौले-हौले सिप करती रही बिस्किट लें हा, चेटक तो शाम को ही निकलती है न ? यहा से लोकल ट्रेन अजमेर के लिए कब रवाना होती है ?

—यही कोई सवेरे नौ बजे के आसपास पर क्या ?

—वैसे ही सोचने वाली सूरत हजार चीज़ सोचती है—यहां से अजमेर-जयपुर के लिए बसें भी तो निकलती हैं ?

—निकलने को तो जानें भी निकलती हैं पर वक्त पर—आप सुबह ही-सुबह यह क्या भीम पलासी गाने लगी ?

—गाना। हम कुआरियों के नसीबों में कहां ? वह तो चहेती सुहागिनों का लेख है हमारे भाग में तो रोना और अबस खोना बदा है। उसने हवाओं में उदासी उकेरते हुए कहा।

—तो आप नियतिवादी हैं ? उन्होंने उसे महज बनाने के लिए फिर सुर्रा छोड़ा।

—वादी विवादी कुछ नहीं नियति की मारी कहिए आप उलझा देते हैं बातों में। बढ़ती बात को समेटते हुए उसने कहा—साढ़े आठ हो रहे हैं—अपने सर्टिफिकेटस और दूसरे पेपर्स सहेजिए। मां जी जाग गई में उन्हें कुल्ला-मंजन करवाती हूं। इतना कहकर वह ट्रे लेकर उठ खड़ी हुई।

—क्या आपको नहीं जाना इंटरव्यू में ? दिल्ली से किस लिए चला था ?

—मैंने कल कहा तो था पर मैं अकेली जाऊंगी। आप मेरे लिए अलग से आटो रिक्शा यहां भेज दें चलूं तैयारी करती हूं। इतना बोल वह मुड़ी थी कि उन्होंने रोका—

—यह सब क्या है ? आप क्या सोचती हैं ? एक मकान में रह लेंगी पर एक रिक्शे में नहीं बैठेंगी ? वह खीज उठे।

—यह बात नहीं मेरे साथ का शकुन कभी नहीं फलता—जनमते ही मां को खा गई उसकी बात पूरी हो उससे पहले उन्होंने जोड़ा—

—यहां पदा होते ही बाप को चट कर गए माइनस माइनस प्लस चलो हुई छुट्टी। वह हंस दिए फिर बोले—

—तैयार हो जाइए—मैं लाया रिक्शा।

—गंभीर क्षणों को हंसी की हवा न दीजिए मैं आपके साथ इंटरव्यू में नहीं जा सकूंगी। इतना बोल वह उदास हो गई और मां जी के कमरे की ओर बढ़ गई।

—तो मैं यह समझू कि मेरे साथ से आपके शकुन बिगडेंगे ?

—ऐसा क्यो समझेंगे ? समझ लीजिए मुझे नौकरी की खास जरूरत है नही। उसने रुखाई से कहा। लौट कर ट्रे को नीचे रखा और खाली कुर्सी को खींचकर टाइप मशीन के सामन बठ गई। रोलर घुमाकर तुरत कागज चढाया और मशीन को घडधडाते हुए फर्राटे से टाइप किया हुआ कागज निकाल कर सहेजा और आनन-फानन म माजी की ओर होली। कमरे के भीतर पहु चकर उसने सुना—

—आप तैयार रह अपनी पहचान के रिक्शे वाले को भेजता हू मैं उधर म ही निकल जाऊगा। कोई उत्तर न पाकर वह कमरे मे आए — मा जी के चरण छूए और तजी से बिन बोले बाहर हो गए।

सूटकेस सामने रखकर वह अपने कपडे कागज सहेज रही थी चुप— "रिक्शा आया समझिए—बीस—पच्चीस मिनिट म'—उसके हवा म लहरान फिर बोल आए।

अब आस पास बिखरी चीज वस्त को करीने से लगा उसने माजी को दूध पिलाया और दीवार पर टगे शीशे के सामने जाकर खडी हो गई। अपने आपसे बतियाते हुए कहा—आधा सफर तय हो गया—आधा आगे पडा है। लट सवारी और मा जी के खाट के पास आकर ठिठक गई। तभी एक घरघराहट बाहर दरवाजे के पास आकर थम गई। उसने मा जी के चरण छुए और बुदबुदाई—'सात माह आपने गभ मे रखा तुमने तो मुझे पर म सात घटे भी तुम्हारी सेवा नही कर पाइ।' फिर ऊची आवाज मे कहा—"मा जी मैं चलती हू सुधा से मिलना नहीं हुआ।' उसके बाल रुआसे हो गए।

— क्यो बेटो सुधा आती तो चली जाती तनि इधर तो हो बैठ मरे पास। टटे स्वर म माजी बोली और उसके सर पर हाथ रखने के लिए उसे टोहने लगी। अनूपा उनकी खाट से लग कर नीचे बैठ गई और उनका हाथ थामकर अपने सर पर रख लिया। थोडी देर गुम-सुम रही फिर चरण छूकर बाहर हो गई।

बाहर का कमरा खुला था। दरवाजे के आग पल भर के लिए ठिठकी फिर आगे बढी और टेबल पर रखे शीशे के नीचे अपना टाइप किया कागज

फला कर झटके स दरवाज़ा बद किया और बाहर खडे रिक्शे म घस गई। उसके मुह से निकाला 'रेलवे स्टेशन ।'

टेबल पर फले काग़ज पर उभरी इबारत शीशे से साफ झलक रही थी—

—पहचान ही चुके हैं कि मैं आपके पसद के सोलह रगी दायर म खडी नम्बर 'तीन' हू। बडा उपकार होगा यदि आप मुझे अपनी पसद स खारिज कर सकें। एक साचती हुई फिलासफर किस्म की औरत एक सजीले रौबीले चुस्त चौबद कुआरे नौजवान के सामन भला क्या गुज़र ? *मैं चाहती हू कि अपना फोटो और अपन पापा जी का ख़त आप की टबल* से उठा लू, पर यह चोरी होगी। मुझे चार भी समझा जाएगा। इसलिए मेरा अनुरोध है कि आप खुद ही इन्हें मेरे पत पर भिजवा दें।

—नम्बर तीन

एक और सीता

अधेरे की आख सी टपरी मे काजल की भात ढलका ढिबरी का टिमटिम उजास जैसे विदा के आसुओ से धुली उसकी बडी-बडी आखो मे अजी काजल की रेखा। सुहाग के लाल जोडे मे बसी मिट्टी-पुत बास की दीवार से सटी, वह अधमदी आखो से अपना भाग जोह रही थी। तभी देहरी की रोक परे कर एक डील की छाह उभरी। कपा देने वाले झाके से जीव सिमककर रह गई। वह अपने मे और सिमट गई।

जोत के आगे अब एक भुतैली छाह आकर ठहर गई। जोत एक बार फिर कापी। पर दूसरे ही पल छाह के काधे स झटककर गिरने वाले गाढे के पल्लू से अधेरे का अजगर छूटा और सब लील गया। नाग-पाश बडा था। उसमे जकडा रमिया बाहर पडा था। उसके हाथ-पैर बधे हुए थे। ऊपर खाट औंधी धरी थी और खाट पर भैस का गुनता। रमिया कल ही घोडी चढा था और पास के गाव स जाकर डोम की बिटिया सीती को आज ब्याह कर लाया था, जिसे अब अधेरे के अजगर ने केंचुल बनाकर पूरी तरह पहन लिया था।

भिनसारे हल्दी उबटन की बास म नहाई महदी-रग पुरवाई घुघरू झनकाती उसके पैरो पर झुकी ता उसकी पलकें उघडी—टेकरी क ऊपर तने आकाश का रग उसकी पुतलियो म रमा था। उसे रग की याद आयी। कल रात ठाकुर न मान मरजाद तोड उसके साथ खद पी पिलायी थी। रमिया को लगा था, उसकी जात ऊची हो गई। पीता पीता वह वही लुढक गया था। फिर पता नही खलिहान के खुले से उठकर वह टपरी क चदोवे तले कैसे आ गया ? देह ताडकर उठा। जम्हाई लेते मुह खोला तो खट्टी-खट्टी बासी घूट गले उतर गई। हाथ जो नीचे डाले तो दो झुके कधो से छू गए। उसकी ब्याहता चरण रज ले अपनी माग म सुहाग पूर

रही थी। वह अचकचाकर पीछे हट गया।

पूरी पूनो उतरे बाद, आज रमिया की रात थी। उसम ठाकुर का वचन खिला था। ठाकुर ठाकुर हैं—बात के धनी। जो कहा वही किया। उसका जी हुमकने लगा—भीतर ही भीतर। 'अपन' का आना-जाना। उधर उसने ठिठोली मे आख और मूद ली—यह मानकर कि काधे पर झूलते पल्लू से ढिबरी का बढना रोज रोज क्या देखू।

सीती को आज कुछ बदला-बदला लगा। देह पर देह का जमाव थोडा-थोडा और हलका जानकर उसन पलकें उघाडीं। अधेरा पर तोलकर खडा था—ला आज मैं ही लाज तोडू—उजियारे मे बतियाने हो अधेरे म बोल मूल जान हैं? *रमिया हसने को हुआ कि उसके गले मे खिली बेल* के पाल झूल गए। यकायक ही उसकी आख भरने लगी—इतनी कि सीती के पलक भीग गए।

'काहे काहे 'आसू का रेला ताड अपने को परे करते हुए वह बोला—'आज हम हैं।" सुनकर उसकी समय डोल गई। फुकारती हुई बोली—"तो आज तक कौन रहा हमारे आचल मे?'

"ठाकुर मालिक ' और वह फूट फूटकर रोने लगा, "अब जो तू चाहे दोस धर। यह पाप तो माथे चढा ही लिया पाखड ओढा और तुझे नरक मे नाक दिया।'

वह काप रही थी। अधेरे मे जाने कैसे उसका हाथ सिराहने धरे हसिए पर जा पडा। छवान से रिसती चादनी की मैली धार हसिए की धार से आ मिली। रमिया उसके पैरो म सीस धरे कह रहा था—"नाड कलम कर दें हम पापी तेरे जनम जनम के वैरी पर ठाकुर भी रावण से दो अगुली ऊपर बस मरी मुत भर ले फिर सिर हाजर।"

बीती सुनकर सीती बिलखती हुई सिसकने लगी। बोली—"खोटी न होकर भी हम खोटी देह का रस जार ले गया। पर आतमा का अमरित तो तेरा जिसके साथ भावर पडी हम तेरी सुहागन।' उसने बढकर उसका चेहरा अजुरी म भर लिया।

'ठाकुर हैं? जुहार आज उजास म ही दरस परस पा ल निहाल हुई धन भाग।" टूट टूटे बोल और ठहर-ठहरकर फूटने वाली

बानी । ठाकुर को लगा उनकी राह रुध गई। कडक्कर गरजे—"क्यो, रमिया न औंधा सीधा जतला दिया कुछ ?"

"उसकी मजाल वह चाकर आप ठाकर ।" वह उठी और उनके गलबहिया डाल बिछने लगी । व सभले, फिर बोले—'पीत जो करवाए कम लगन जो लगाए थोडा, अब जो तू चाह मान। निगोडी काया ही तरी एसी भा गई कि जी छोड बैठे । महीनो हिया उचाट किए डोले । लगा पूरब जनम की पहचान है हमारी । और जुगत न बैठी तो तरा हरन ठाना हम परथीराज, तुम सजोगता सब तय और तैयार था कि तरे हाथ मे हसिया है हा जगल है वेर कुबेर पाम लेकर ही सोया कर ।' एक सास म कह गए ठाकुर ।

'रुकें ना । कहें, ठाकुर अपन बीते जनम की कथा ।"

"रमिया की जात की मुध पडी तो और बात बन आई । और हम-तुम एक । अगले जनम रमिया का भी फटा दूर तब हिरद को कल पडेगी ठीक ?"

'धरम क्या पूरी तो करे ठाकुर हम सजोगता तुम '

'हमारा जी लाख तरस गया । तुम्हे रानी बनाते, गढी मे बिठाते पर बरी जात का रोडा । जात जगत का जजाल काटने को रमिया का मुह जोहना पडा । दह तरी डोम चमार की सही आत्मा तो छत्री की है। फिर लेता है चमार तो त दह ।

'तुम कहत थे ठाकुर, मुझे गढिया तल डाल रखेंगे और भोग भोग कर मार दग तरी जान के खातर हमन यह पाप सिरजा ?'

हा तो झूठ कहा ?"

'ना ठाकुर अपन को पूरब जनम के परथीराज और सजोगता बना रहे थे ।'

'रहने द ! ढोंगी है पूरे सफा कहा था बात मान रमिया तू ब्याह ला उमे दोनो के बीच रहगी ।

'फिर ?"

"फिर क्या ? हमने भी सरत बदी । सौती की औलाद हमारी पडेगी ता झट वाले, चमरिया की कोख ठाकुर का बीज फलेगा भी नही । तू

चमार ही उगाना जा मुये कुछ न पडो।" चुप रहकर फिर बोला—"दखत हैं, वचन पूरा करते हैं ठाकुर ?'

"क्यो नही तुम्हारे ठाकुर ज्ञानी हैं। तुमन उनक मन का साधा तो वो भी पीछे नही। जानत हो मरे नहाने के बाद दिन टालकर ही आन हैं—जब धारन का औसर टल जाए।'

रमिया के बेटे के बाद ठाकुर सीती से जिस दिन मिले उन्हे लगा जैसे सोता ही सूख गया। सर ही मर नई। यू ओटा बिछाया, सभी कुछ किया, पर जब हटे तो लगा उनके मुह मे चुसी हुई गुठली ठुमी रही। उन्होने बाहर आकर थूक दिया।

अगली बार व रुके रह। रमिया को हाली मवाली का काम सौंप दूसरे गाव भेज दिया। इस ताकस के साथ कि "जब तक काम न निपटे लौटना नही वरना रोटियो से लाचार कर गाव-बाहर कर देंग।"

आज ठाकुर लबे बुलावे के बाद टपरी म आए तो फिर सान-बठन उन्हे वही लगा कि ठिठुरे काठ से लग रह हैं। झुंझलाकर बोले—' सीतापन ओढा जा रहा है। सती बन रही है जसे दम हीन हो ग्यान को मिलता ?"

"जा है मिलता है मालिक न हो अपन हाथ उभार उठाकर ले ले।"

' चमरिया बतियान लगी है। चाव चलाती है हमस भुस भर देंगे।" उन्हान काप धरा और पैर पटकत हुए वाहर हो गए।

ठाकुर का खेत हावत हाकन रमिया का ध्यान बटा। टपरी की तरफ कान धरा तो लगा कास का थाल झनझना रहा है। वहां पहुचा तो ठिठक गया। टपरी के वाहर काकी, मौसी, जीजी भौजी—गाव की सब खडी थी। पल बात कि भाई न आकर कहा—' बटा दिया है ठाकुरजी ने।" वह जितन को हुआ कि रह गया। गले म बोल रुध गए—' बटा दिया है ठाकुर—नही नहीं '

सीती की खाट स लगकर मुवा बेटे क नन्हे मुखडे को आख की अजुरी मे भर पूछा—' किस पर पडा है रे ?'

"तुम य ही पूछोगे, जानती थी।" सीती की आख डबडबा आइ। लगा कि रमिया जानता है तब फिर क्या इस तरह बेइज्जत करता है। न

जानता और न चाहता तो दोषी होती। धीरे से बोली—"तुम्हे अछूता कुछ द न पाई मैं करती भी क्या पर जब से उसकी जात जानी है उससे बोला ही बटवाया है। सुहागन का मन उसे पहली रात अनजान भले ही मिला हो आगे तो अगन मा की साखी जिसके साथ फेरे लिए, उसी का मन से जाना है "

"नही रे ! यू जी हलका न कर। वसे ही पूछ लिया।"

'अच्छा हुआ ठाकुर की बात फली चमरिया की कोख चमार का ही बीज फूटा। आरसी धर सूरत न मिला लें बाप-बेटे ?"

वह टूटकर घुटना क बल बैठ गया और उसके आचल म मुह ढाप रुआसा ही बोला—"सीती न न सीता कलजुग है भगवान ने राम से रमिया बना दिया धनुष-बान छीनकर पाप की मजूरी लिख दी वरना अभी भेद दन उस ठाकुर नही, उस रावन का सिर

ठाकुर, अब इस गैल न पडा। जुग बीत गया। अब दह थक गई। बचवा भी बढ गया। उमे बारहवा लगा कि उसका बाप बठे-बठे लुढक गया राड हो गई सहाग लूटा, ठाकुर अब रडापा न लूटो उसके मरने क बाद तो उसका रहन दो "

"आह, यू ठहरी, उस चमार के मरन से सुहाग छिन गया ! हम जो सामन भरे-पूरे खडे हैं सा तुस। दखरी ! तू जो ये सीतापन ओढ रही है, उसन हम कितना जल्दी बुढा दिया।

ठाकुर ने उसका हाथ पकड लिया। हाथ झटकत हुए वह बाली—"ठाकुर, मानो अब उमग हुमक बीत गई रीते कलस कुछ न मिलेगा उनको पार लगे महीना न हुआ। बचवा को समझ पडा तो लाज न बचगी।

'हम कहें, उस रडव क न रहते राड हो गई और हम "

"आप मालिक पर धरम के धनी तो वो पति अगन मा की साखी " बात पूरी न हुई कि उसका मुह झूल गया। जोर का हत्थड पटककर व मुड गए। पीछे से बोल आए—"अमा को आएगे। सारा सोग उतारकर बैठियो। नही बचवा की सूरत तरस जाएगी "

"रुके ठाकुर   उनके रहते मेरी लाज के धनी व ही थे । वपन रहत अपनी बसत उन्हान तुम्ह दी । उनके बीतने पर अपनी लाज की पहरू मैं हू । सुहाग उनका था । उन्होंने लुटवाया । दुहाग मेरा है, मैं तुम्हें न दूगी । प्राण देकर और लेकर भी उस सहेजूगी ।'

'बद कर उधेड दूगा तरी लाज का जहाज हजार बार लूटा है डोम की छुकरिया और सीता का स्वाग वह भी एक जुग क बाद " ठाकुर न आगे बढत हुए कहा ।

"आगे न बढ, ठाकुर । मेरे हाथ मे गडासा ह और कोई नही तो लो यह लखन रेखा मैं ही खीच दती हू । यह कहकर उसने गडासे की नोक से धरती पर एक गहरी रेख आक दी ।

□□